Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त
उपन्यास साहित्य

परिवर्तन

43
-P
36

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167936

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन

(उपन्यास)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन

081
167936

गुरुदत्त

Central Library
167936
Gurukula Kangri (Deemed ... University) Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110 026

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

K
089.9143
GUR.P

© प्रकाशकाधीन 1964

23553624, 23551344, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड
करोल बाग, नई दिल्ली-1100 5

मूल्य : 20.00 रुपये

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
18/28, पंजाबी बाग (पूर्वी)
नई दिल्ली-110 026
फोन : 5102133

संस्करण : 2000

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-110 032

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

जीवन-स्तर को ऊँचा करने की यह कहानी है। आज भूमण्डल पर इसकी होड़ लगी है। Simple living and high thinking (सरल और श्रेष्ठ जीवन) केवल कहावत ही रह गई है।

जो भी देश योरुपियन-दासता से स्वतन्त्र हो रहा है, वह रेल, तार, डाक, बिजली, पंखे, मशीन इत्यादि अनेक प्रकार की सुख-सुविधा के सामान निर्माण करने में लग गया है। भारत ने तो इसके लिए जीवन-मरण की बाज़ी लगा दी है। परन्तु यह किस मूल्य पर बन रहा है, विचारकर हृदय काँपने लगता है। ज्यों-ज्यों जीवन-स्तर (living standard) ऊँचा होता जा रहा है, नैतिक-पतन बढ़ता जा रहा है। यह प्रक्रिया कहाँ पर जाकर समाप्त होगी, अभी कहा नहीं जा सकता।

वैसे यह उपन्यास है।

—गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

"देखो बेटा गौरीशंकर ! ज़रा मुख में लगाम दो और कुछ भविष्य के विषय में विचार करो। तुम्हारा यह चलन न तो शोभायुक्त है, न ही सुखदायक।"

"पिताजी ! मैंने भविष्य का विचार कर ही यह कार्यारम्भ किया है। रही शोभा और सुख की बात, यह तो अपनी-अपनी दृष्टि है। घर में यह साज़ो-सामान मुझे शोभायुक्त प्रतीत होता है। आपकोयहशोभा-युक्त और सुखप्रद प्रतीत नहीं हो रहा। इसमें मैं आपका दृष्टि-दोष ही मानता हूँ।

"साथ ही आपकी और मेरी आवश्यकताओं में अन्तर है। आपकी तो मैं ही एक सन्तान था। परन्तु सरोजिनी ने तो बच्चों की झड़ी लगा दी है। सब बच्चों के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध उस सरलता से नहीं हो सकता, जिससे एक का हो सकता था।"

विवाद पिता-पुत्र में था। गौरीशंकर का पिता भवानीशंकर रेलवे के दफ़्तर में साधारण क्लर्क का काम करता था। सन् १९१५ में मैट्रिक पास कर नौकर हुआ था। तब उसको पच्चीस रुपया मासिक वेतन मिलने लगा तो पिता दुनीचन्द ने बहुत सुख अनुभव किया था। उसने पुत्र के प्रथम वेतन लेकर घर आने पर मुहल्ले-भर में लड्डू बाँटे थे।

यद्यपि जर्मनी से प्रथम महायुद्ध आरम्भ हो गया था और अनाज महँगा होने लगा था तो भी पच्चीस रुपया मासिक वेतन ईश्वरीय कृपा का सूचक ही माना जाता था। दुनीचन्द के घर वालों को यह अन्य मुहल्ले के लोगों से भी अधिक सुखदायक और सुविधाजनक अनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था।

पण्डित दुनीचन्द वेदपाठी ब्राह्मण असृतसर का रहने वाला था और काशीजी में विद्याध्ययन कर तथा भारत-भ्रमण कर घर लौटा तो लाहौर आर्यसमाज ने अपने संस्कृत विद्यालय में अध्यापक बनाकर नौकर रख लिया। दस रुपये मासिक वेतन पर वह सन् १८९५ में उस विद्यालय में पढ़ाने लगा था और विवाह होने पर विद्यालय का काम छोड़, पुरोहिताई करने लगा था। वेतनधारी अध्यापक रहने की अपेक्षा उसे पुरोहित बनना अधिक पसन्द आया था। दिन-भर वह शास्त्राध्ययन करता और प्रातः-सायं यजमानों के घरों से हंदे लेने जाना तथा पूजा-पाठ, विवाह-संस्कार आदि भी कराना होता रहता था।

अंग्रेज़ी शासन की शिक्षा-नीति का प्रभाव होने लगा था। लोगों की रुचि घरों में पूजा-पाठ कराने से हटकर खेल-तमाशे और सैर-सपाटे में होने लगी थी। इस कारण पण्डित दुनीचन्द को पुरोहित के काम से जीवन चलाना कठिन प्रतीत होने लगा था। हंदे मिलते थे, परन्तु उनको सूखा खाया नहीं जा सकता था। साथ खाने के लिए शाक-भाजी, दाल, घी, चटनी, अचार की आवश्यकता रहती थी। पण्डितजी की पत्नी सुधा एक आर्यसमाजी परिवार की कन्या थी। उसका पिता वकील था और घर में अच्छा खाना बनता था। सुधा के पिता ने तो पण्डित दुनीचन्द का आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन में विद्वत्तापूर्ण भाषण सुनकर उसे दामाद बनाना स्वीकार कर लिया था। परन्तु उस ज़माने में भी विद्वत्ता का अर्थ जीवन की सफलता नहीं रहा था। इस पर भी सुधा अपने पति के और अपने जीवन को सुखी करने में संलग्न रहती थी।

इस सुखी जीवन की लालसा का ही परिणाम था कि भवानीशंकर को स्कूल में संस्कृत के समीप फटकने भी नहीं दिया गया था। भवानी-शंकर ने ज्यों-त्यों कर मैट्रिक पास किया और रेल के दफ़्तर में नौकरी पा गया। पिता जो प्रतिदिन प्रातः स्नान-ध्यान कर उस दिन की जीविका की चिन्ता करने लगता था, पुत्र को एकदम पच्चीस रुपया वेतन लेकर घर आते देख, उसका हृदय बल्लियों उछलने लगा। उन दिनों बूंदी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड्डू रुपये के सेर मिलते थे। अतः बाज़ार से दो रुपये के लड्डू लाकर दुनीचन्द ने मुहल्ले वालों को खिलाये और फिर लड़के के भाइयों तथा उसकी माँ को दिये।

भवानीशंकर भी वेतन के पच्चीस रुपये जेब में डाले हुए घर आता हुआ स्वयं को रईस बन गया अनुभव कर रहा था। वह दफ़्तर से घर पैदल आता था। तीन मील जाना और तीन मील आना एक साधारण बात होती थी। गौरीशंकर ने पाँच रुपये माँ को घर के खर्च के लिए दे दिये। पांच रुपये अपने नये वस्त्र बनाने के लिए व्यय कर दिये। पाँच रुपये में दो कुरते, दो पायजामे, एक कोट और एक जोड़ी जूते आ गये थे। दो रुपये के लड्डू बाँटे गये थे। एक रुपया उसने अपने पिताजी को पान-सुपारी के लिए दे दिया था। पिताजी बनारस में शिक्षाध्ययन के दिनों में पान-तमाखू का दुर्व्यसन सीख आये थे और पुरोहिताई करते हुए कभी जेब में पैसा न होने से बहुत कठिनाई अनुभव करते थे। अनेक बार ऐसे अवसर आये थे, जब जेब में अथवा घर में तमाखू के लिए पैसा न होने से बेचैनी होने लगी तो पण्डितजी मकान के सामने बैठने वाले अत्तार से एक पैसा माँगने चल पड़ते थे। रघुनन्दन समझ जाता कि पण्डितजी का नशा टूट पड़ा है। वह चुपचाप अपने गल्ले में से एक पैसा निकालता और उनको दे देता। एक पैसे का तमाखू कई दिन तक चल जाता था।

भवानीशंकर अपने पहले वेतन में से तेरह रुपये व्यय कर विचार कर रहा था कि शेष बारह रुपये में क्या करे। महीने की दस तारीख हो गई थी। वेतन पाँच तारीख को मिला था और भवानीशंकर को वेतन में से बचे बारह रुपये का उपयोग अभी तक समझ में नहीं आ रहा था।

लाला रघुनन्दन उसके पिता का न केवल यजमान था, अपितु समय-कुसमय में सहायता देने वाला भी था। इससे भवानीशंकर रघुनन्दन के पुत्रों का मित्र हो गया। रघुनन्दन की दुकान पर रात के समय दुनीचन्द जा बैठता था। उस समय दुकान पर ग्राहक कम आते थे और रघुनन्दन तथा उसके पुत्र जमाने की गतिविधि पर बातचीत करते रहते थे। कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनीचन्द आ जाता तो धर्मशास्त्र और समाज की रीति-कुरीतियों पर भी चर्चा होने लगती थी। भवानीशंकर भी दफ़्तर से लौट, वस्त्र बदल, खाना खा-पीकर रघुनन्दन की दुकान के बाहर रखे बैंच पर जा बैठता और 'हिन्दुस्तान', उर्दू साप्ताहिक तथा 'पैसा' दैनिक-पत्र पढ़कर लाला तथा उसके पास आये हुए अन्य सुनने वालों को सुनाता। कभी-कभी लालाजी की दुकान के बाहर भीड़ लग जाती। समाचार-पत्र में जब-जब भी अंग्रेज़ तथा मित्र राष्ट्रों की पराजय और जर्मनी की विजय का समाचार होता, सुनने वाले प्रसन्न होते थे और कहीं कभी कोई समाचार अंग्रेज़ की विजय का होता तो सबके मुख लम्बे हो जाते और सब ऐसे समझते, मानो उनकी अपनी पराजय हुई है।

इस समय भवानीशंकर की नौकरी लगी और वेतन मिले पाँच दिन हो जाने पर भी उसके बारह रुपये उसकी सन्दूकची में रखे थे। उस दिन भवानीशंकर ने वर्डून पर जर्मनी की भारी विजय का समाचार पढ़कर सुनाया था। तीन दिन के घमासान युद्ध के बाद अंग्रेज़ इस स्थान को छोड़कर पीछे हट गये थे और लालाजी की दुकान पर उस दिन समाचार-पत्र सुनने के लिए भीड़ लग गई थी। लालाजी प्रायः कहा करते थे कि अन्तिम जीत अंग्रेज़ की ही होगी। किन्तु आज तो वे भी कह उठे थे, "अब ये फिरंगी गये।"

भवानीशंकर रात के दस बजे, जब रघुनन्दन दुकान बन्द करने लगा तो उसके सम्मुख अपनी समस्या रखने लगा। उसने लालाजी से कहा, "आपसे एक राय करनी थी।"

"हाँ बताओ।" लाला ने सामान दुकान के भीतर रखते हुए कहा।

"आपको यह तो विदित ही है कि मेरी नौकरी लग गई है।"

"हाँ, उस दिन पहले वेतन के उपलक्ष्य में लड्डू खाये थे।"

"उसमें से मेरे पास बारह रुपये बचे हुए हैं। आप बताइये उनका किस प्रकार अपने और अधिक लाभ के लिए प्रयोग करूँ?"

रघुनन्दन विस्मय में मुख देखता रह गया। वह विचार करता था कि दुनीचन्द का लड़का कितना सरलचित्त है, जो यह भी नहीं जानता कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपये कहाँ और किस प्रकार व्यय करे, फिर उसके मन में विचार आया कि यह ब्राह्मण का लड़का है। इस बेचारे को रुपये में वृद्धि का ज्ञान होना सम्भव नहीं है। लाला ने पूछा, "बस, बारह रुपये ही बचे हैं ?"

"जी, पाँच रुपये माँ को घर-खर्च के लिए दे दिये हैं। पाँच रुपये के अपने लिए कुछ कपड़े बनवा लिये हैं और दो रुपये के उस दिन लड्डू बाँट दिये थे। एक रुपया पिताजी को तमाखू इत्यादि के लिए दे दिया है। इस प्रकार बारह रुपये बचे हैं। भय लगता है कि कहीं गुम न हो जाएँ। साथ ही सन्दूकची में रखे रहने से तो उनमें वृद्धि होगी नहीं। माँ से पूछा तो वह कहने लगी कि आप से बात कर लूँ। कदाचित् आप कोई मार्ग सुझा सकें।"

"देखो भवानीशंकर !" लालाजी ने गम्भीर होकर कहा, "इसमें से दो रुपये तो तुम अपने पास रहने दो। समय-कुसमय आवश्यकता पड़ सकती है। दस रुपये तुम मेरे पास जमा करा दो। मैं उनको लाभ-दायक स्थान पर लगा दूँगा।"

भवानीशंकर को यह सुझाव पसन्द आया। उसकी माँ सुधा ने तो इसको अपने परिवार के उज्ज्वल भविष्य का सूचक समझा। अगले दिन भवानीशंकर दफ़्तर जाने से पहले लाला रघुनन्दन के पास दस रुपए जमा करा गया।"

अगले मास तो दो रुपये लड्डुओं वाले भी बच गए। इस मास भवानीशंकर ने बारह रुपये रघुनन्दन के पास जमा करा दिये। इस महीने में भी उसने भोजन के निमित्त अपनी माँ को पाँच रुपये दिये थे और पाँच रुपये में माँ तथा पिता के लिए वस्त्र ले आया था। पण्डित दुनीचन्द ने कहा भी, "बेटा ! मेरे वस्त्रों का प्रबन्ध तो मेरे यजमान कर देते हैं। जब भी किसी के घर पर कोई शुभ कार्य होता है तो वह धोती, अँगोछा, दुपट्टा कोई-न-कोई वस्त्र दे देता है। और पिछले पन्द्रह-बीस वर्ष में मैंने और तुम्हारी माँ ने एक पैसा भी अपने तथा तुम लोगों के वस्त्रों पर व्यय नहीं किया।"

इस पर भी भवानीशंकर ने एक धोती माँ के लिए और एक धोती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा दो कुरते पिता के लिए बनवा ही दिये।

यह कार्य पाँच वर्ष तक चलता रहा। इस काल में अंग्रेज़ों की विजय हो गई थी और जर्मनी का युद्ध समाप्त हो गया था। और सभी के वेतन में वृद्धि हुई तो भवानीशंकर का वेतन भी चालीस रुपया मासिक हो गया। यह ठीक था कि १९१५ से १९२० में अन्नादि महँगा हो गया था। कपड़े के दामों में भी वृद्धि हो गई थी और फिर यजमानों की मनोवृत्ति में भी अन्तर पड़ गया था। जहाँ पहले प्रायः नित्य पण्डित दुनीचन्द कहीं-न-कहीं पूजा-पाठ के लिए बुलाया जाता था और वहाँ से दान-दक्षिणा पाता था, अब ऐसे अवसर कम होने लगे थे। परन्तु भवानीशंकर के वेतन में एकदम पन्द्रह रुपये की उन्नति एक सुखद घटना हुई थी।

भवानीशंकर ने माँ को रोटी के लिए दस रुपये देने आरम्भ कर दिये। अपनी जेब-खर्च के लिए उसने पाँच रुपये रख लिये। कपड़े तो पाँच वर्ष तक प्रतिमास क्रय करने से घर पर बहुत ही हो गए थे। उस पर अब व्यय नहीं होता था। अपने पिता को उसने पान-तमाखू के लिए एक के स्थान पर दो रुपये देने आरम्भ कर दिये। इस प्रकार चालीस रुपये में से बाईस रुपये व्यय कर उसके पास लाला रघुनन्दनजी के पास जमा करने के लिए अठारह रुपये बच गए थे।

वह महीने की छः तारीख को लालाजी के पास रुपये जमा कराने के लिए गया तो लाला ने पूछ लिया, "भवानीशंकर, तुम्हारी आयु कितनी है?"

"चाचाजी, वीस का हो चुका हूँ।"

"तो एक बात करो, अपना विवाह कर लो।"

"कैसे कर लूँ?"

"अच्छा आज दफ़्तर से लौटकर मिलना। तुमको विवाह करने की रीति बताऊँगा।"

भवानीशंकर हँस पड़ा और बोला, "जब आप बड़े इस बात की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्ता कर रहे हैं तो फिर मेरे पूछने अथवा मुझको बताने की क्या आवश्यकता है ?"

"फिर भी तुम मिल लेना। बिना तुम्हारी रुचि के तो हम कुछ भी नहीं कर सकते।"

भवानीशंकर विवाह के विचार से मन में गुदगुदी अनुभव करने लगा था। वह दफ़्तर जाता हुआ और फिर वहाँ से लौटता हुआ विवाह, पत्नी और फिर बच्चों के स्वप्न देखता हुआ घर लौट आया। दफ़्तर में तो काम इतना रहता था कि विवाह तो क्या मरने तक का विचार मन में नहीं फटकता था। सौ-सौ, दो-दो सौ मदों की सहस्रों राशियों को जमा-बाकी करने में ही दफ़्तर के छः-सात घंटे व्यतीत हो जाते थे।

घर पहुँच, वस्त्र बदल, भोजन कर वह लालाजी की दुकान पर पहुँचा तो लालाजी अपनी बही खोल बोले, "इधर आओ, भवानीशंकर! ज़रा अपने पाँच वर्ष के जमा किये रुपयों का हिसाब सुन लो।"

भवानीशंकर तो विवाह की योजना सुनने के लिए आया था और लालाजी खोल बैठे बही। इससे कुछ निराशा अनुभव करते हुए वह लालाजी के पास बैठ गया और वे उसको सुनाने लगे, "आज के अठारह रुपये छोड़कर पिछले पाँच वर्ष दो मास में तुमने प्रतिमास दस रुपये जमा कराये हैं। कुल छः सौ बीस रुपया जमा हुआ है। इसमें मैं प्रतिवर्ष एक सौ रुपया व्यापार में लगाता रहा हूँ। पहले वर्ष तो एक सौ का ही लेन-देन होता रहा। फिर दूसरे वर्ष दो सौ और पहले के लाभ की राशि तीन सौ चालीस से व्यापार हुआ। अगले वर्ष तीन सौ मूलधन और लाभ की राशि एक सहस्र रुपया से वही व्यापार आरम्भ हुआ। चौथे वर्ष मूल और लाभ मिलाकर सब पाँच सहस्र था और इस वर्ष के अन्त में सब-कुछ मिलाकर तुम्हारे खाते में बारह सहस्र रुपया जमा है। यह सब व्यापार में लगा हुआ है, परन्तु तुम जब भी चाहो, दो-तीन दिन के नोटिस पर ले सकते हो।"

"परन्तु एक बात पूछूँ ?"

"हाँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इतना लाभ किस व्यापार में हो गया है ?"

"मैं तुम्हारे रुपये से चीनी का व्यापार करता रहा हूँ।"

"फोकट में ?"

"नहीं, अपनी और दलालों की उजरत इसमें से निकालता रहा हूँ। इस पर दस प्रतिशत के लगभग खर्च पड़ा है। यह इसमें से निकाल लिया है।"

"तो भी यह आशातीत है।"

"नहीं, यह तो कुछ भी नहीं, भवानी ! इन युद्ध के दिनों में तो सहस्रों वाले लाखोंपति बन गए हैं और लाखों वाले करोड़ोंपति। तुम दस रुपये की पूँजी वाले के सहस्रों कोई विस्मय की बात नहीं। हाँ, अब युद्ध-समाप्ति पर लाभ की राशि कम हो रही है। परन्तु मेरा विचार है कि अब तुम अपना एक मकान ले लो और फिर उस मकान में एक सुन्दर पत्नी ले आओ तो गाड़ी आगे चले।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि कोई नया जीव घर में आएगा तो अपना भाग्य साथ लेकर आएगा।"

: २ :

लाला रघुनन्दन के प्रयत्न से भवानीशंकर को तीन हज़ार रुपये का मकान खरीद दिया गया और ग्यारह सौ रुपया खर्च कर उसका विवाह कर दिया गया। लाहौर से पांच कोस के अन्तर पर बागवानपुर के एक बहुत ही सामान्य स्थिति के ब्राह्मण की कन्या कर्मदेवी घर में आई तो दुनीचन्द और उसकी पत्नी सुधा फूले नहीं समाये थे। बहू देखने का निमन्त्रण सब यजमानियों को मिला तो सब आईं और अपने सामर्थ्यानुसार बहू के लिए वस्त्र-भूषणादि भेंट में लाईं।

इस समय लाला रघुनन्दन को पण्डित दुनीचन्द ने भी अपने मन की बात कह दी, "लालाजी ! आपने भवानी पर इतनी कृपा की है तो दया और शोभा पर भी थोड़ी कृपा कर दीजिये।"

दयाराम और शोभाराम भवानीशंकर के छोटे भाई थे। दुनीचन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को इनके विषय में कहने का सुझाव भी भवानीशंकर की माँ सुधा ने ही दिया था। लाला रघुनन्दन कुछ देर तक विस्मय में पण्डितजी का मुख देखता रहा। पीछे बोला, "क्या योग्यता है आपके उन दोनों लड़कों की ?"

पण्डितजी ने बताया, "मैंने दोनों को वैसे ही स्कूल में बैठाया था, जैसे भवानी को। परन्तु दोनों बुद्धि में कोल्हू के बैल जैसे निकले। वे सातवीं और छठी श्रेणी से ऊपर नहीं जा सके। अब तो कई वर्ष से वे दिन-भर घूमते रहते हैं। भगवान् जाने कहाँ जाते हैं और क्या करते हैं।"

"पण्डितजी ! मैंने भवानीशंकर के लिए कुछ नहीं किया। यह उसके चित्त की सरलता है, जिससे वह यहाँ तक पहुँच गया है। यदि वह ऐसा ही बना रहा तो एक दिन बहुत बड़ा आदमी बन जायेगा। और आपके दोनों लड़के न तो आपका पुरोहिताई का काम सीख सके हैं, न ही स्कूल-कॉलेज की पढ़ाई में तरक्की कर सके हैं। वे कभी रात को यहाँ के समागम में भी आकर बैठे नहीं। मुझे किसी ने बताया है कि वे मच्छी हट्टे की एक जुए की दुकान में घुसे रहते हैं। उनके लिए क्या हो सकता है ?"

लालाजी के मुख से अपने पुत्रों की कथा सुनकर पण्डितजी बहुत लज्जित हुए। सुधारानी ने उनसे लज्जा की बात सुनी तो अपने पति से कहने लगी, "आप लड़कों को समझाइए न। बहुत बड़े विद्वान् कहाते हैं। कुछ थोड़ी-सी विद्वत्ता का फल अपने लड़कों को भी दे दीजिए।"

पण्डित हँस पड़ा और कहने लगा, "यह विद्वत्ता कोई गुड़ की डली नहीं है, जो जेब से निकालकर अपने लड़कों में बाँट दूँ। यह तो ईश्वर की कृपा से और पूर्व-जन्म के कर्मों के फल से मिलती है। तुम्हारे ये बेटे कभी ईश्वर का नाम भी तो स्मरण नहीं करते।"

"अच्छा, ऐसा करिए। आज उनको भवानी की उन्नति का रहस्य बताइए और फिर उनको कहिए कि लालाजी की दुकान पर रात के भोजन के पश्चात् जाकर बैठा करें। धीरे-धीरे उनके विषय में लालाजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सम्मति बदल जाएगी और वह उनके लिए भी कुछ विचार करेंगे ।"

पण्डित दुनीचन्द ने अगले दिन प्रातःकाल जब दया और शोभा अभी बिस्तर से उठ ही रहे थे कि उनके पास जाकर कहा, "दया ! तुम रात को बहुत देर से आते हो, कहाँ रहते हो ?"

"पिताजी ! अब मैं सत्रह वर्ष का हो गया हूँ, इसलिए किसी काम-धन्धे की बात पर विचार कर रहा हूँ ।"

"क्या कर रहे हो ?"

"यह मेरा रहस्य है । मैं तब बताऊँगा, जब कुछ सफलता प्राप्त कर लूंगा ।"

इस पर दुनीचन्द ने भवानी की आर्थिक उन्नति का इतिहास बता दिया । दयाराम कहने लगा, "पिताजी, पाँच वर्ष में दस सहस्र कौन-सी बड़ी बात है ? रघु लाला ने उन रुपयों के पचास सहस्र स्वयं बनाये होंगे, तभी दस भापा को दिये हैं ।"

"देख लो, मगर इतना ख़याल रखना कि तुम पण्डित दुनीचन्द वेदान्ततीर्थ, तर्कभूषण के पुत्र हो । कोई ऐसा काम न करना जो कलंक लगाने वाला हो ।"

"और आप स्वयं को बहुत प्रतिष्ठित समझते हैं ?"

दुनीचन्द मुख देखता रह गया । फिर कुछ विचारकर बोला, "मैं प्रतिष्ठित न सही, परन्तु तुम कोई बदनामी की बात न करना । मैं तो दस रुपये वेतनधारी अध्यापक, एक वकील का दामाद बन गया था और तुम सैकड़ों-सहस्रों में शास्त्र की चर्चा करने वाले के पुत्र हो, कहीं जेल-खाने की सैर करने न जा पहुँचना ।"

दयाराम को क्रोध चढ़ आया और वह उठकर शौचादि के लिए चला गया । शोभाराम भी साथ ही खाट पर लेटा हुआ था । वह नित्य से विलक्षण बात, पिताजी को दयाराम को डाँटते सुन उठ बैठा । उसने मुख से रजाई उतारी और खाट पर बैठा भाई और पिता की बात सुनता रहा । जब दयाराम उठकर चला गया तो शोभाराम ने कह दिया, "पिताजी ! दया तो नित्य जुआ खेलता है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेटा ! यही तो मैं कह रहा था कि पढ़े-लिखे पिता को बदनाम न कर देना। मुझे किसी ने यही सूचना दी है।"

"पिताजी देखिए, मैं बताता हूँ। वह अपने बिस्तर से निकल दयाराम की कुरती, जो खूँटी से लटक रही थी, उतार लाया और उसकी जेब से नोटों का बण्डल निकालकर दिखाने लगा। पिता भौंचक्का हो देखता रह गया। शोभाराम ने गिनकर दिखा दिया। सौ-सौ रुपये के दो-सौ नोट थे। दुनीचन्द के मुख से निकल गया, "बीस हज़ार !"

"हाँ पिताजी, अभी कुछ छोटे नोट दूसरी जेब में भी हैं। कल एक-सौ अस्सी थे, आज दो सौ हो गये हैं। अर्थात् एक रात में दया ने दो हज़ार जीता है।"

"इन्हें रख दो। वह देख लेगा तो हल्ला करेगा। साथ ही मेरी बुद्धि दर्शन-मात्र से मलिन हो रही है।"

शोभाराम ने रुपये जेब में रख पहले की ही भाँति कुरते को खूँटी पर लटका दिया। जब वह लटका चुका तो पिता ने कहा, "और बेटा, तुम क्या करते हो ?"

"मैं तीन वर्ष में भी छठी श्रेणी की परीक्षा पास नहीं कर सका। इससे मैंने पढ़ना छोड़ दिया है। और अब एक कला सीखने के लिए जाया करता हूँ। दो वर्ष हो गये हैं। विचार है कि पाँच वर्ष में मैं उसमें निपुण हो जाऊँगा और तब जीवन चल निकलेगा।"

"और तुम भी अपने विषय में मुझसे छिपाकर रखना चाहते हो ?"

"नहीं, पिताजी मेरा काम जुआ नहीं, मैं तो संगीत सीखता हूँ।"

"संगीत ! कहाँ भला ?"

"एक मास्टर लालचन्द हैं। वे उस्ताद खुदाबख्श के शागिर्द हैं। खुदाबख्श का नाम आज हिन्दुस्तान-भर में विख्यात है।"

"बेटा ! संगीत तो ठीक ही है। परन्तु उसमें भी संगीत-संगीत में अन्तर है। वैसे तो जुआ भी संसार में बहुत व्यक्ति खेलते हैं, पर जुए-जुए में भी अन्तर है।"

"क्या अन्तर है पिताजी !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अन्तर है लोक-कल्याण का। मैं बताता हूँ—मैं शास्त्र पढ़ा हूँ और मेरा एक सहपाठी विद्याभूषण तर्करत्न-ज्योतिषाचार्य है। मैंने वेदान्ततीर्थ की पढ़ाई की थी और उसने ज्योतिषाचार्य की। वह अब बम्बई में सट्टा बाज़ार के सामने बैठा नजूम लगाता है और सुना है बम्बई में कई लाख की सम्पत्ति का मालिक है। मैं वेदान्त-शास्त्र पढ़-कर स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ पढ़ गया तो मुझे समझ आया कि शंकरा-चार्य के मत का खण्डन करना चाहिए। मैं निर्धन-का-निर्धन रहा। मुझे नौकरी भी मिली तो दस रुपये महीने की। इस पर भी मैं रात को गहरी नींद सोता हूँ और अपने चालीस वर्ष के ज्ञानमय जीवन में एक दिन भी किसी से शर्मिन्दा नहीं हुआ। मैं समझता हूँ कि जितना लोक-कल्याण का कार्य मैंने किया है और किसी ने नहीं किया।"

"क्या लोक-कल्याण का कार्य किया है आपने ?"

"जिस-जिसको भी वेदान्त-शास्त्र सुनाता हूँ और उसको मैं अपनी व्याख्या बताता हूँ तो वह गद्गद प्रसन्न हो जाता है। लोक-कल्याण का अर्थ ही है दूसरों को सुख और शान्ति देने में यत्नशील रहना।

"इसी प्रकार यदि तुम्हारा संगीत जन-जन के मन में सुख और शान्ति उत्पन्न करने वाला है, तब तो ठीक है और यदि वह केवल वासना का उद्रेक ही करने वाला सिद्ध हुआ तो कुछ लाभ नहीं।

"सब कामों में ऐसा हो रहा है। जो काम मानव की उच्छृङ्खल भावनाओं में वृद्धि करते हैं उनका मूल्य अधिक मिलता है और जो शान्ति देते हैं, वे कम मूल्य पाते हैं।"

"परन्तु पिताजी ! धन भी तो जीवन-यापन के लिए एक बहुत बड़ी वस्तु है ?"

"हाँ, परन्तु जीवन-यापन मत कहो। जीवन का भोग करने के लिए कहो। जीवन-यापन के लिए कुछ अधिक साधनों की आवश्यकता नहीं। देखो, यजमान लोग एक-एक रोटी देते हैं और उससे हम प्रातः-सायं परिवार-भर के लोग खाते हैं। साग-भाजी, दाल, नमक-मिर्च, घी इत्यादि का खर्चा सारे परिवार का सात-आठ रुपये मासिक होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167936 R 089.9143 GOR-P

इससे अधिक नहीं। बताओ, इतने मात्र के लिए भला अनाचार की क्या आवश्यकता है ?"

"मेरा मतलब है कि अनाचार के बिना धन मिले तो भी वह तिरस्कार के योग्य है क्या ?"

"नहीं, फिर भी धन को व्यय करने का प्रश्न तो रह ही जाता है। धन अपनी सुख-सुविधा के लिए प्रयोग करना चाहिए। अपने सम्बन्धियों, मित्रों, परिचितों और फिर सजातीयों के भी सुख-शान्ति के लिए प्रयोग होना चाहिए। परन्तु बेटा ! सुख-शान्ति का अर्थ जीवन-शक्ति का ह्रास नहीं है। देखो, सोने से सुख मिलता है, किन्तु दिन के आठ बजे तक सोये रहना, प्रातः भ्रमण अथवा स्नान-ध्यान न कर बिस्तर में घुसे रहना तो सुख नहीं कहाता। यह तो ह्रास का सूचक है।"

पिता अभी अपने पुत्र को अपने ज्ञान का उत्तराधिकारी बना ही रहा था कि दयाराम शौच से निवृत्त हो स्नान की तैयारी में लग गया। इससे शोभाराम को अपने विषय में कहने की अपेक्षा दयाराम के विषय में कहना अधिक रुचिकर हुआ। उसने कहा, "पिताजी ! दया भापा तो कह रहा था कि वह अपना एक मकान खरीद रहा है।

"हाँ, यह भी एक अत्यावश्यक काम हो गया है। देखो, रघु लाला के मकान में मैं रहता था। जब से मैं लाहौर आया हूँ, तब से उसके मकान में तीन रुपये भाड़े पर रह रहा था। यह सन् १८९० की बात है। तब से लेकर मैं मकान में ऐसे रहता रहा, जैसे मेरा वह अपना मकान है। लाला ने कभी नहीं कहा कि मकान का भाड़ा कम है। अब भवानी ने यह मकान लिया है तो हमने उसका मकान छोड़ दिया है। तीस वर्ष तक उस मकान में रहा। सभी यही समझते थे कि मकान मेरा है। जब मैंने मकान खाली किया तो लोग भाड़े पर लेने के लिए मेरे पास आते थे। और वे दस से पन्द्रह रुपया मासिक देने का प्रस्ताव रखते थे। मैं हैरान था कि उन तीस वर्षों में लाला ने मुझसे कभी नहीं कहा कि मैं मकान का किराया कम दे रहा हूँ। अब उसने उस मकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर दो-तीन सौ रुपया और लगाकर उसको बीस रुपये मासिक भाड़े पर दे दिया है। लाला जैसे मालिक मकान तो सब होंगे नहीं। इसलिए अपना मकान भी ज़रूरी हो गया है।"

दयाराम सरसों के तेल की मालिश कर रहा था। स्नान से पूर्व वह मालिश किया करता था। मालिश करते-करते वह बोल उठा, "शोभा! तुम्हारे पेट में कुछ रहता भी है या नहीं?"

"भापा! तुम जब मकान लोगे तो उसको कहाँ पेट में छिपाकर रखोगे? पता तो चलेगा ही। फिर अपने पिताजी से छिपाने में तो कोई भी प्रयोजन नहीं?"

"सब व्यर्थ है। बताना उनको चाहिए, जिनको बताने से कुछ लाभ होता हो। पिताजी को बताने से क्या लाभ होने वाला है?"

"बताइए पिताजी! क्या लाभ होगा आपको बताने से?"

"बेटा! अपनी कमाई का सदुपयोग करोगे तो मेरे मुख से आशीर्वाद निकलेगा।"

"क्या लाभ होगा उससे? आप पहले अपने आपको तो आशीर्वाद दे लीजिये, पीछे किसी अन्य की बात विचार कर लेना।"

"मुझको तो परमात्मा का आशीर्वाद है और मैं उसपर सन्तुष्ट हूँ।"

"क्या आशीर्वाद है? सारी उम्र-भर वेद-पाठ करते रहे, सहस्रों के विवाह कराकर पुत्र-पौत्रों वाला बना दिया। अनेकों के घरों में दुर्गा और लक्ष्मी का उजापन कर लखपति बना दिया और आपको क्या मिला? वही धोती, कुर्ता, पगड़ी और देशी जूता। यही परमात्मा का आशीर्वाद है न?"

दुनीचन्द हँस पड़ा और बोला, "दयाराम, तुम भी मकान बनाओगे तो मुझसे गृह-प्रवेश के समय उजापन करवा लेना। तुम भी लाखोंपति बन जाओगे। विवाह करते समय मुझसे स्वस्तिवाचन करवा लेना, तब तुम भी पुत्र-पौत्रों वाले हो जाओगे। ठीक है न? परमात्मा तुमको चिरायु करे। मगर याद रखना कि यह कुछ नहीं होगा यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा का आशीर्वाद न हुआ और परमात्मा ईमानदारों को ही आशीर्वाद देता है।"

"पर पिताजी ! मैं बेईमान नहीं हूँ।"

"यह भी परमात्मा जानता है। मुझसे तो तुम सब-कुछ छिपाकर रख रहे हो।"

पिता-पुत्र में परस्पर तू-तू, मैं-मैं हुई तो फिर दोनों की एक-दूसरे में कोई रुचि नहीं रही। दोनों का कार्यक्रम भी ऐसा ही था कि परस्पर मिलने की सम्भावना कम ही थी।

: ३ :

शोभाराम की समझ में अपने पिताजी की एक बात आ गई। वह बात थी सुख-साधना मनुष्य के ह्रास का कारण भी बन सकती है। प्रातः उठना सोने से कुछ कम सुखकारक है, परन्तु उस समय नित्य-कर्म से निवृत्त हो किसी प्रकार का कार्य करना तो आत्मोन्नति करने वाला भी हो सकता है।

वह प्रातः जागकर समय का उपयोग आत्मोन्नति के लिए करना चाहता था। संगीत सीखने के लिए तो मध्याह्नोत्तर जाया करता था। सायंकाल वह अपने उस्ताद के साथ विभिन्न संगीत-समारोहों में जाया करता था और इस प्रकार जो कुछ सीखता था, उसका प्रतिकार उस्ताद को दे देता था। संगीत-समारोह भी नित्य नहीं होते थे। सप्ताह में दो-तीन बार ही जाना पड़ता था। वैसे वह सायंकाल उस्ताद के पास जाता अवश्य था। प्रातः के समय वह खूब सोता था। अब वह इस समय के उपयोग करने का विचार करने लगा था।

अब अपने पिता को अपने कार्य का परिचय देने के बाद तो उसको घर पर अभ्यास करने में संकोच का अनुभव नहीं होता था। इससे प्रातः-काल उठकर वह संगीत के अभ्यास के विषय में विचार करने लगा तो उसकी समझ में आया कि कुछ वाद्य-यन्त्र मोल ले आने चाहिए। एक हारमोनियम, एक तानपूरा, एक ताल देने का यन्त्र।

उस दिन वह अनारकली बाज़ार में रतिराम की दुकान पर इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीनों वाद्यों का मूल्य जान आया। सवा सौ रुपया लगता था। सवा सौ तो उसके पास था नहीं। उसके पिता के पास तो कभी तमाखू के लिए भी दो-तीन पैसे नहीं हुआ करते थे। बड़े भाई भवानी की जेब में भी यह कुछ नहीं देखा करता था। भवानी जब वेतन लाता तो उसको बाँट देता। अब उसको रेल के दफ़्तर में चालीस रुपया मासिक वेतन मिलता था। शोभाराम सोच रहा था कि चालीस रुपये वेतन में से सवा सौ रुपया माँगना और फिर एकदम माँगना तो मूर्खता होगी।

केवल दयाराम की जेब को ही वह नोटों से भरी हुई देखता था। परन्तु यह भी वह चोरी-चोरी देखा करता था। न तो दयाराम ने कभी उसको बताया था कि उसकी जेब में क्या है और न ही यह कि वह कहाँ से आता है। उसके जुआ खेलने की बात तो वह अपने उस्ताद लालचन्द की बैठक पर से सुनता था, वह भी केवल इतना कि अमुक बैठक पर जुआ होता है और दयाराम वहाँ जाता है।

उसने जब रुपये का अन्य स्रोत नहीं देखा तो एक दिन प्रातःकाल, जब दयाराम मालिश कर रहा था, उससे कहने लगा, "दया भापा!"

"कहो, क्या बात है?"

"मुझे कुछ रुपये चाहिए।"

"पर मेरे पास रुपये कहाँ से आए? सुना नहीं था, उस दिन पिताजी बता रहे थे कि भवानी भापा के बहुत से रुपये राधो लाला के पास जमा हैं। उससे क्यों नहीं माँगते?"

"भापा! देना चाहो तो रुपये तो तुम्हारे पास हैं।"

"कहाँ हैं?"

"तुम्हारे कुरते की जेब में।"

दयाराम के हाथ मालिश करते-करते रुक गये और वह घूरकर शोभा की ओर देखने लगा। उसने पूछा, "अबे चोर! तू मेरी तलाशी लेता रहता है?"

"चोर नहीं हूँ, भापा! चोर होता तो स्वयमेव निकाल लेता। हाँ, इतना तो कह सकते हो कि आँखों वाला हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और तुम्हारी दृष्टि कपड़े को फाड़कर अन्दर तक चली जाती है। चोर कहीं का!"

"बात यह हुई कि एक दिन तुम्हारे कुरते पर मेरा कोट टँगा था। कोट उतारने लगा तो कुरता गिर पड़ा। और ऐसा प्रतीत हुआ कि उसमें बहुत बोझा है। फिर कुरता भूमि से उठाकर खूँटी पर टाँगने लगा तो ऐसा लगा मानो उसमें नोट भरे हैं। मैंने उनको देखा और गिन डाले। उस दिन उसमें बारह हज़ार के नोट थे। तब से मैं नित्य, जब तुम शौच के लिए जाते हो, कुरते की जेब से नोटों का बण्डल निकालकर गिन लेता हूँ। कभी कम हो जाते हैं और कभी बढ़ जाते हैं। इस पर भी पिछले एक मास में वे बारह हज़ार से बढ़कर बीस हज़ार हो गए हैं। कल से आज में पाँच सौ का अन्तर पड़ा है। साथ ही तुम स्वयं ही तो कहा करते हो कि मकान बनवाओगे।"

"तुम तो बहुत खराब आदमी हो। तुम हर रोज़ मेरी तलाशी लेते हो?"

"इससे तुम्हारी क्या हानि हुई है?"

"अच्छा बताओ, कितने रुपये चाहिए और किस काम के लिए चाहिए?"

"भापा! एक हारमोनियम, एक तानपूरा और एक टाइमर खरीदना है। मेरे अभ्यास के लिए इन वस्तुओं की आवश्यकता है।"

"ये चीज़ें तुम्हारे उस्ताद के घर पर नहीं हैं?"

"वहाँ तो हैं। मगर मैं ये चीज़ें घर पर अभ्यास करने के लिए खरीदना चाहता हूँ।"

"तो तुम अब घर-भर में हो-हल्ला करोगे?"

"हल्ला नहीं, संगीत के मीठे-मीठे स्वर निकालता रहूँगा।"

दयाराम मालिश कर चुका था। वह उठा और स्नान करने के लिए चला गया। शोभाराम ने समझा कि माँगना व्यर्थ गया। वह मन में विचार कर रहा था कि 'बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।' इससे उसको अपने माँगने पर लज्जा आने लगी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको एक बात सूझी । वह अपने पिता से कहकर, लाला रघुनन्दन के पास भवानीशंकर के जमा रुपयों में से उधार लेने का विचार बना बैठा । अतः स्नानादि से निवृत्त हो वह अपने पिता के पास मकान की बैठक में जा बैठा । उस समय लाला रघुनन्दन का लड़का मोतीराम पण्डित दुनीचन्द के पास बैठा कुछ बतला रहा था । शोभाराम के आते ही मोतीराम ने पण्डितजी के चरण-स्पर्श किये और चल दिया । वह पण्डितजी के सामने एक लिफ़ाफ़ा रख गया था ।

जब मोतीराम चला गया तो दुनीचन्द ने शोभाराम से पूछ लिया, "कैसे आये हो शोभा !"

शोभा ने अपने आने का कारण बताने के स्थान मोतीराम के विषय में पूछ लिया । उसके मस्तिष्क में लाला रघुनन्दन से रुपया उधार लेने की बात चल रही थी ।

"पिताजी यह क्या कहने आया था ?"

"ज़रा देखो, यह क्या रख गया है ?" दुनीचन्द ने शोभाराम से लिफ़ाफ़े में देखने को कह दिया ।

शोभाराम ने लिफ़ाफा खोलकर देखा । उसमें एक सौ रुपये का एक नोट, दो दस-दस रुपये के नोट और एक पाँच रुपये का नोट था । यह ठीक उतनी ही रकम थी, जितनी उसको चाहिए थी । इससे उसका दिल धक्-धक् करने लगा । दुनीचन्द ने भी रुपये देखे तो बता दिया, "इसको मैंने एक अनुष्ठान बताया था । उससे इसको आंशिक लाभ हुआ है और यह दक्षिणा के रूप में दे गया है ।"

शोभाराम को समझ आया कि परमात्मा ने यह रकम उसके लिए ही भेजी है । इसपर उसने अपने आने का कारण बता दिया । साथ ही कह दिया, "यदि आपको इनकी कुछ विशेष आवश्यकता न हो तो ये मुझे मिल जायें ।"

पण्डित दुनीचन्द ने एक क्षण तक आँखें मूंदकर विचार किया और कह दिया, "मुझको तो आवश्यकता नहीं । हाँ, अपनी माँ से पूछ लो । यदि उनको ज़रूरत नहीं तो ले सकते हो ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोभाराम रुपये हाथ में पकड़े हुए मकान की ऊपर की मंजिल पर, माँ से मिलने चला गया। वह अपने भाग्य की सराहना करता हुआ ऊपर गया और दस मिनट में ही लौट आया। दुनीचन्द ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो शोभाराम ने बताया, "पिताजी ! मिल गये हैं, परन्तु एक शर्त के साथ।"

"क्या शर्त की है माँ ने ?" दुनीचन्द ने उत्सुकता से पूछ लिया।

"यह कि घर में भगवद्-भजन ही हो सकेगा। माँ कहती हैं कि ये वाद्य-यन्त्र उसकी सम्पत्ति रहेंगे और यदि मैंने उसकी शर्त का उल्लंघन किया तो वे अपने यन्त्र वापस ले लेंगी।"

दुनीचन्द हँस पड़ा, "तो तुम मान गये हो ?"

"हाँ, पिताजी।"

उस दिन शोभा वाद्य-यन्त्र खरीदने के लिए जाने लगा तो दयाराम भी मध्याह्न का भोजन कर घर से निकला। उसने उसके साथ चलते-चलते कहा, "शोभा ! मैंने एक बात विचार की है।"

"किस विषय में, भापा ?"

"तुम्हारे वाद्य-यन्त्रों के विषय में।"

"क्या विचार किया है ?"

"यही कि आज तुम्हारे नाम की बाज़ी लगा देता हूँ। जो कुछ भी उससे मिलेगा, तुमको दे दूँगा।"

"नहीं भापा। इस प्रकार से आये रुपयों की अब आवश्यकता नहीं रही।"

"तो अब संगीत का अभ्यास नहीं करोगे ?"

"करूँगा भापा ! रुपये माँ ने दे दिये हैं।"

"कितने ?"

"जितने चाहिये थे।"

"ओह ! तो माँ के पास रुपये थे ?"

शोभाराम मुस्कराकर चुप रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ४ :

एक दिन दयाराम ने शोभाराम को कह दिया, "तुम अपना अभ्यास कहीं दूर जाकर किया करो। यहाँ मेरी नींद खराब होती है।"

"तो माँ से कह दो कि तुम्हें कोई पृथक् कमरा दे दें।"

परिणामस्वरूप दयाराम माँ के पास जा पहुँचा। बोला, "माँ, शोभाराम को पृथक कमरा दे दो।"

"क्यों?"

"वह सवेरे-सवेरे शोर मचाना आरम्भ कर देता है, उससे मेरी नींद खराब होती है।"

"तो रात को जल्दी सो जाया करो।"

"रात को तो मेरा काम होता है।"

"क्या काम होता है?"

"यह मैं अभी बताना नहीं चाहता।"

"तो शोभाराम के लिए भी अभी दूसरा कमरा नहीं मिल सकता।"

"माँ! मान जाओ।"

"और तुम बताते क्यों नहीं कि रात के बारह बजे तक क्या करते रहते हो?"

दयाराम उठकर चला गया। शोभाराम ने अपना अभ्यास जारी रखा और दयाराम ने रात को घर आना छोड़ दिया।

इससे शोभाराम और भवानीशंकर को चिन्ता हुई, परन्तु माता-पिता ने उनको शान्त कर दिया। पिता ने कहा, "उसने घर छोड़कर ठीक ही किया है।"

शोभाराम ने भवानीशंकर को बताते हुए कहा, "भापा! वह जुआ खेलता है।"

धीरे-धीरे इस बात को दो वर्ष व्यतीत हो गये।

एक दिन शोभाराम उस्ताद की बैठक पर गया तो उस्ताद ने उसको कृष्ण गली में एक गाने-बजाने के समारोह में चलने के लिए कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। शोभाराम ऐसे समारोहों पर उस्ताद के साथ संगत करने जाया करता था। अब तो उसको स्वतन्त्र रूप में भी गाने का अवसर मिल जाया करता था।

सायंकाल उस्ताद लालचन्द की मण्डली नियत स्थान पर जा पहुँची।

शोभाराम के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने वहाँ एक नयी हवेली के नीचे दयाराम को खड़े, लोगों का स्वागत करते देखा। वह समझ गया कि भापा ने अपने मन की हवेली बनवा ली है। दयाराम ने तो ऐसा प्रकट किया कि मानो वह शोभाराम को नहीं जानता था। शोभाराम ने भी अपना उससे सम्बन्ध प्रकट करना उचित नहीं समझा।

इस समारोह पर एक अन्य गाने-बजाने वाली मण्डली भी आयी हुई थी। उसमें मुख्य गाने वाली, लाहौर की एक विख्यात रक्कासा, रहीमन थी। लालचन्द ने उसको देखा तो चिन्ता व्यक्त करते हुए कह दिया, "मज़ा नहीं रहेगा।"

"उस्ताद!" शोभाराम ने कह दिया, "देखते जाइये। सब ठीक होगा। बाहरी टीप-टाप पर योग्यता की ही विजय होगी।"

खाना-पीना हो रहा था। इनको भी भोजन कराया गया। प्रायः लोग खा-खाकर जा रहे थे। कुछ-एक ही थे जो संगीत सुनने के लिए ठहरे हुए थे। इस पर भी जब संगीत सुनने का समय आया तो मकान के सबसे बड़े कमरे में बीस-पच्चीस सुनने वाले बैठे थे। उस्ताद लालचन्द और उसके साथी वहाँ पहले पहुँचे। साज़ ठीक किये गये और उस्ताद ने शिव-उपासना में एक ध्रुपद गा दी। इसके पश्चात् इनकी मण्डली में से ही एक ने वायलिन पर एक गत बजाई। तदनन्तर शोभाराम ने भैरवी में राम-भक्ति का एक गीत गाया।

इस समय रहीमन की मण्डली आ गयी। गायिका सोलहों शृंगार किये हुए अपनी मण्डली के आगे बैठ गयी और श्रोतागणों के आग्रह पर उसने एक ठुमरी सुनायी—

बोल थे—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये थे अलसाये नैंन । कहाँ बिताई सारी रैंन ।
भले आये हो अलसाये नैन ।।

ठुमरी की लय, मधुर, कोमल स्वर और श्रृंगारयुक्त गायिका के हाव-भाव सुनने वालों के मन पर छा रहे थे। जब गाना समाप्त हुआ तो शोभाराम से गाने के लिए कहा गया। शोभाराम ने एक कजरी गा दी—

"सखी री काहे मारत हो बैन,
देखो पड़ी है सारी रैन। सखी री···

शोभाराम के इस हाज़िर-जवाबी ने रहीमन के प्रभाव को ढीला कर दिया। यों तो शोभाराम का वर्षों के अभ्यास से स्थिर मधुर, प्रभावशाली स्वर भी अपना प्रभाव जमाने लगा था। दयाराम समझ गया कि शोभाराम भी कुछ है।

शोभाराम गा रहा था—

संध्या को तो भोर समझकर दीपक शीतल कर बैठी हो,
अँधेरे में भटक गयी हो तनिक उघारो अपने नैन।
सखी री···।

अब रंग जम गया और उसके पश्चात् तो उस्ताद के भीमपिलसी तथा अन्य शास्त्रीय गीतों की महिमा बनने लगी। रहीमन ने अब अपनी बारी पर गज़ल गाकर अपनी योग्यता का परिचय दे दिया। उसने गाया—

क्या देखता है हाथ मेरा छोड़ दे तबीब
यां जान ही बदन में नहीं नब्ज़ क्या चले।

तो शोभाराम ने कह दिया—

क्या हुआ अगर मैंने हाथ बढ़ाना चाहा
आपने खुद भी तो दामन न बचाना चाहा।
यों तो फ़साना-ए-उलफ़त था अज़ल से रंगीं
हमने कुछ और भी रंगीन बनाना चाहा।

रहीमन की फब्तियाँ उड़ने लगीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजलिस समाप्त हुई शोभाराम के एक पंजाबी बैंत से। सुनने वाले और लालचन्द भी समझ गया था कि शोभाराम अब तैयार हो गया है। वह प्रत्येक प्रकार की परिस्थिति में अपनी प्रतिष्ठा रख सकता है।

रहीमन जिस वाह-वाह की आशा लेकर आयी थी, वह फीकी रही। इस पर भी उसको दो सौ रुपये मिले। मास्टर लालचन्द को सवा सौ रुपये।

प्रथा के विपरीत रुपये बाँटने वाले ने पचास रुपये शोभाराम को देने चाहे तो उसने उस्ताद की ओर इशारा कर दिया।

मुंशी ने कहा, "पण्डितजी ने खास दिये हैं।"

"पण्डितजी !" शोभाराम ने समझा कि उसका भाई उस पर विशेष कृपा दिखा रहा है। इस पर उसने सतर्क होते हुए कह दिया, "तो भाई साहब से कह दो यह खास हमारी भाभी के लिए भेंट रहने दें।"

मुंशी मुस्कराया और पूछने लगा, "भाभी ! कौन-सी भाभी ?"

"भाई जी की ! आने वाली जो है।"

शोभाराम अपना जूता पहन बाहर निकला। लालचन्द उसके पहले ही बाहर चला गया था। शोभाराम जब उसके पास पहुँचा तो उसने पूछा, "शोभा ! क्या कहता था वह ?"

"इक्यावन रुपये देता था।"

"तो ले क्यों नहीं लिये ? आज की बाज़ी तो तुम्हारे ही सिर पर माननी चाहिए।"

"नहीं उस्ताद ! मैंने उसे कहा था कि रुपये आपको मिलने चाहिए। जब उसने कहा कि मेरे लिए खास तौर पर हैं तो मैंने कह दिया कि भाभी के लिए नज़र के तौर पर रख ले। उस्ताद ! वह मेरा सगा भाई है।"

"अच्छा ! पर वह तो तुमको पहचान नहीं रहा था ?"

"हाँ, वह मुझसे नाराज़ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ?"

"उस्ताद, यह घर की बात है। वह घर-भर से नाराज़ है।"

: ५ :

बात यहीं पर समाप्त नहीं हुई। अगले दिन शोभाराम अभी संगीत का अभ्यास ही कर रहा था कि नीचे से पिताजी का बुलावा आ गया।

शोभाराम ने अपना तानपूरा भूमि पर रखा और नीचे आ पहुँचा। दयाराम पण्डितजी के पास बैठकर कुछ कह रहा था। शोभाराम हँस पड़ा। भाई को हाथ जोड़ नमस्कार कर पिता के समीप बैठ उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगा।

पण्डित दुनीचन्द ने दयाराम से कहा, "यह तुम्हारे सामने बैठा है, स्वयं पूछ लो।"

"तुमने रात रुपये क्यों नहीं लिये ?" कुछ रुष्ट-सा दयाराम पूछने लगा।

"भैया, यह मेरा रहस्य है।"

"रहस्य ! कैसा रहस्य ?"

"स्मरण है भैया। एक बार पिताजी ने पूछा था कि क्या काम करते हो तो तुमने बता दिया था कि वह तुम्हारा रहस्य है। अब मेरे रहस्य का भी सम्बन्ध उस रहस्य से ही है। तुम अपना रहस्य बता दो तो मैं अपना रहस्य बता दूंगा।"

"मैंने तो पिताजी को बता दिया है। रात मजलिस के कारण और फिर उसमें तुम्हारी उस रक्कासा से मुकाबले की बात भी बता दी है।"

"मैं उसकी बात नहीं कह रहा भैया ! मैं तो यह पूछ रहा हूँ कि क्या यह भी बताया है कि तुमने वह हवेली किस प्रकार बनवाई है ?"

"हाँ, बता दिया है।"

"पिताजी ने उसके लिए आशीर्वाद दे दिया है ?"

"तुम अपनी बताओ शोभाराम।"

"मैं उस कमाई को अपनी जेब में रखने योग्य नहीं समझता। इस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए उसको हाथ नहीं लगाया। देने वाले को तो कहा था कि उस्ताद को दे दे। जब उसने कहा कि खास मेरे लिए हैं तो मैंने लेने से इनकार कर दिया। मैं उस कमाई में से एक पाई भी लेना नहीं चाहता था।"

"परन्तु तुमने यह भी तो कहा कि वह भाभी के लिए है।"

"हाँ भैया। जब वह आयेगी तो तुम्हारी कमाई का भोग भी करेगी ही और उसके लिए उसका भोग करने में कोई हानि नहीं।"

"इस बात को तो छोड़ो। वे रुपये तो तुम्हारी उस मजलिस में प्रशंसा के उपलक्ष्य में ही दिये थे। तुमने वे भेंटस्वरूप अपनी भाभी को दे दिये। मैंने समझा कि वे भवानी भापा की पत्नी के लिए हैं। परन्तु तुम तो कुछ दूसरी ही बात कह रहे हो।"

"तो ऐसा प्रतीत होता है कि रुपया देने वाले तुम्हारे मुंशी ने मेरी पूरी बात तुमको नहीं बताई। मैंने तो कहा था कि वह जो आने वाली है, उस भाभी के लिए रख लेना।"

"तुमने यह कैसे जाना कि कोई आने वाली है?"

"भवानी भापा का पहले मकान आया था और फिर भाभी आई थी। वैसे ही मैंने तुम्हारे लिए भी अनुमान कर लिया था।"

"बहुत समझदार हो गये हो। मैं तो यह समझा था कि पिताजी कोई प्रबन्ध कर रहे हैं और तुमको उस बात का ज्ञान है।"

इस समय पिता ने दोनों भाइयों की बात में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "देखो दयाराम! मैं तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध करने के अयोग्य हूँ। मेरा विवाह तुम्हारे नाना ने किया था। वे आर्यसमाज मन्दिर में मेरा व्याख्यान सुनकर मेरे पास पहुँचे और पूछने लगे कि मेरा विवाह हो गया है अथवा नहीं। जब मैंने बताया कि नहीं हुआ तो इन्होंने मेरे विवाह का प्रबन्ध कर दिया गया। लाला रघुनन्दन से बात कर मेरे लिए मकान का प्रबन्ध कर दिया। मैं जब नौकरी छोड़, पुरोहिताई करने लगा तो मेरा विवाह कर दिया। तुम्हारे नाना उस समय इतने धनी नहीं थे जितने कि अब हैं। इस कारण मुझ जैसे अकिंचन को अपनी लड़की देना स्वीकार कर लिया था। इस पर भी आज तक वे मुझसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मेरे व्यवहार से प्रसन्न हैं। मेरी गरीबी को देखकर उन्हें कभी अपने किये पर पश्चात्ताप नहीं होता।

"भवानीशंकर का विवाह भी लाला रघुनन्दन ने किया है। अब तुम विवाह की इच्छा करते हो तो तुम लालाजी से मिल लो अथवा अपनी माँ से कहकर अपने नाना से यत्न कराओ।"

"अच्छी बात है। मैं विवाह के लिए तो आया नहीं था। इस पर भी जब यह प्रश्न उपस्थित हुआ है, तो मैं एक बात पूछना चाहता हूँ कि यदि मैंने स्वयं अपने लिए पत्नी ढूँढ़ ली तो आप क्या करेंगे ?"

"कुछ नहीं, मैं तुमको रोक कैसे सकता हूँ ? मेरे हाथ में न खुदाई-ताकत है और न राज्य-सत्ता।"

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि उसे आप अपनी बहू मानेंगे अथवा नहीं ?"

"यह तो तुम्हारी बहू को देखकर ही बताया जा सकता है। जहाँ तक तुम्हारा सम्बन्ध है, तुम पुत्र हो। परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि तुम जिस किसी को भी पकड़ लाओगे, उसको ही हम बहू बना लेंगे।"

दयाराम इसका अर्थ समझने लगा। फिर कुछ विचारकर बोला, "तो पिताजी, मेरी पत्नी मेरे साथ प्रेम करने वाली को भी आप अस्वीकार कर देंगे ?"

"प्रेम का अर्थ अकल्याणमयी नहीं हो सकता। ऐसे प्रेम के कुछ भी अर्थ नहीं। यह गुण तो है, परन्तु अति तुच्छ।"

"तो महान् गुण क्या है, जो पत्नी में होना चाहिए ?"

"बुद्धिशील, कर्मठ, कल्याणमयी और सौभाग्यशालिनी।"

"अच्छा पिताजी ! ये गुण भी उसमें होंगे ही।"

दयाराम चला गया तो दुनीचन्द ने अपने छोटे लड़के से पूछा, "तो तुम ऐसी मजलिसों में भी जाया करते हो ?"

"कैसी मजलिसों में, पिताजी ?"

"यही, जहाँ रंडियाँ नाच-गाना किया करती हैं।"

"संसार कीचड़ है और उसमें कमल की भाँति निर्लिप्त होकर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा जा सकता है। इसको छोड़कर भाग कैसे सकता हूँ ?"

"परन्तु सुना है वहाँ तुमने इश्किया गज़लें गाई हैं ?"

"यह तो सुनने वालों के मनोभावों का सूचक है। साहित्य में तो ऐसा रहता है। वह दर्पण की भाँति होता है और प्रत्येक को उसमें अपना प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।"

"परन्तु संदिग्ध अर्थ वाली बात तुमने कही ही क्यों ?"

"पिताजी ! मैंने तो ऐसी कोई बात नहीं कही। मैं साहित्यकार नहीं हूँ। वह शायरी मैंने नहीं की थी। इसपर भी मेरे विचार में उसके अर्थ ऐसे नहीं, जिसके कहने में किसी को भी लज्जा करने की आवश्यकता हो।"

"देख लो, विचार कर लो। किस बाप की सन्तान हो और यदि कहीं तुम बदनाम हुए तो परिवार, सम्बन्धी और मैं, सब बदनाम होंगे।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा पिताजी !"

"तो ठीक है।" पिता को इतना सन्तोष था कि उसने जुए की कमाई में से लेना स्वीकार नहीं किया था।

: ६ :

इसके कई दिन पीछे की बात है। शोभाराम उस्ताद की बैठक की ओर जा रहा था कि उसको मार्ग में एक आदमी मिला और पूछने लगा, "आप शोभाराम हैं ?"

"हाँ, फरमाइये।" उसने कह दिया।

"आपको बुलाया है।"

"किसने ?"

"पण्डित दयाराम ने।"

"क्या काम है ?"

"सो तो बताया नहीं। कदाचित् अपनी पत्नी से मिलाना चाहता है।"

"ओह ! तो भाभी आ गई है ?"

"हाँ; और वह तुमको जानती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको ? भला कैसे ?"

"इतना कुछ तो बता दिया है, अब चलना चाहिए। एक घण्टा से आपकी उस्ताद की बैठक को जाने की प्रतीक्षा कर रहा था।"

शोभाराम ने विचार किया और इस नये जीव को देखने की लालसा उत्पन्न होने पर उसके साथ चल पड़ा।

शोभाराम के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने हवेली के बैठक-घर में दयाराम को रहीमन के साथ बैठे देखा। उसके मुख पर आश्चर्य अंकित देख दयाराम ने कहा, "आओ, शोभाराम ! देखो तुम्हारे पचास रुपये की भेंट वसूल करने के लिए भाभी लानी ही पड़ी है।"

शोभाराम हँस पड़ा और रहीमन की ओर देखकर पूछने लगा, "तो ये भाभी हैं ? पर भैया ! इनको मेरे पचास रुपये की आवश्यकता थी क्या ?"

"तो पहचानते हो इनको ?"

"हाँ।"

"तुम्हारे रुपयों ने उसी समय मेरे मन में इनका विचार उत्पन्न कर दिया। मैंने समझा कि छोटे भाई की भेंट व्यर्थ नहीं जानी चाहिए। मैंने इनसे बात की और जुए की बाज़ी की भाँति इनकी सब शर्तें मानकर इनको घर में रख लिया। अगले ही दिन इन्होंने भेंट देने वाले से परिचय प्राप्त करना चाहा। इसी अर्थ मैं पिताजी से मिलने गया था। परन्तु उस दिन बात नहीं कर सका। आज विचार आया है कि उस घर का द्वार इनके लिए खुलवाने में तुम्हारी सहायता माँगी जाय। इस कारण तुमको बुला भेजा है। बताओ, क्या कहते हो ?"

"यह तो बहुत कठिन बात बताई।"

"क्या कठिनाई है इसमें ?" रहीमन ने पूछ लिया।

"वे हिन्दू हैं, तुम मुसलमान हो। वे सद्चरित्र विख्यात हैं और तुम...।" शोभाराम आगे कुछ कह नहीं सका।

"सुना है आपके पिता आर्यसमाजी हैं ?"

"हाँ, हैं तो।"

"तो वे शुद्धि में विश्वास रखते होंगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, परन्तु शुद्धि के पात्र की भी तो बात है।"

"तो पात्र-कुपात्र का निर्णय कौन करेगा ?"

"यह तो वे ही करेंगे।"

"इसीलिए तो उनसे मिलना चाहती हूँ।"

इसपर दयाराम ने कह दिया, "देखो शोभाराम, मैं आज तक जुए में जीतता रहा हूँ और मैं कहता हूँ कि मैं इस दाव को भी जीता ही हूँ। यह, तुम्हारी भाभी ठीक वैसी ही है, जैसी पिताजी ने कहा था। अर्थात् यह बुद्धिशील, कर्मठ, कल्याणमयी और सौभाग्यशालिनी है। और अब तो विवाह हो गया है। यह मेरी पत्नी है। आस-पड़ोस की स्त्रियों से इसकी मुलाकात भी होने लगी है।

"कल हमने सत्यनारायण का व्रत रखा था। पड़ोसियों को कथा सुनने का निमन्त्रण भी दिया था। कथा हुई थी। प्रसाद बँटा था। इस प्रकार सुखद सम्बन्ध बनने लगे हैं। अब हम माता-पिता तथा भैया से सम्बन्ध बनाना चाहते हैं।

"बताओ, करोगे सहायता ?"

"देखो भैया ! मैं माता-पिता से हेरा-फेरी नहीं कर सकता। सब सत्य-सत्य बता दूंगा।"

"हाँ, शेष हम स्वयं बता लेंगे।"

"कह दूंगा।"

"कब उत्तर दोगे ?"

"यदि कुछ उत्तर देने लायक बात हुई तो शीघ्रातिशीघ्र आऊँगा।"

शोभाराम के विदा होने से पूर्व दयाराम ने बताया कि रहीमन का नाम रामदेई है और इसकी एक बहन अभी ग्यारह वर्ष की है। उसका नाम शान्ति है।

घर जाकर शोभाराम ने दयाराम की सब बातें बतायीं तो सभी स्तब्ध रह गये। सबसे अधिक दुःखद बात थी रामदेई का एक गायिका का व्यवसाय करने वाली होना। यह तो कभी समझा ही नहीं जा सकता था कि एक गाने वाली वेश्या-वृत्ति नहीं करती होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ ने सुना तो उसके विषय में अधिक जानने के लिए पूछ लिया, "तुमको कैसी लगी है शोभा।"

"माँ! मजलिस में तो वह कुछ ठीक नहीं जँची थी। उसने इतना शृंगार किया हुआ था कि उसके वास्तविक रूप-रंग का भी पता चलना कठिन था। परन्तु आज तो वह एक भले घर की लड़की प्रतीत हुई है। आयु भी बीस से कम ही प्रतीत होती है।"

"और वह हमसे क्या आशा करती है?" पण्डित दुनीचन्द ने पूछ लिया।

"आर्थिक दृष्टि से तो कुछ नहीं। भैया बहुत धनी मालूम होता है। मुझको कुछ यह समझ आया है कि वह एक भले घर की बहू कहलाने की लालसा रखती है।"

दुनीचन्द लाला रघुनन्दन से मिला और फिर अपने श्वशुर बाबू विश्वेश्वरनाथ से मिला।

सबकी बात सुन परिवार बैठकर विचार करने लगा। लाला रघुनन्दन के कहने पर ही तो पण्डित विश्वेश्वरनाथ से मिला गया था। अतः उनके ही विचार मुख्य थे और उन्होंने ही निर्णय करा दिया। विश्वेश्वरनाथजी का कहना था, "यदि लड़के को मुसलमान नहीं बनने देना तो उस वेश्या को हिन्दू बना उसको हिन्दू-चलन सिखाना पड़ेगा।"

पण्डित दुनीचन्द के आर्यसमाजी संस्कार जाग पड़े और स्त्री-वर्ग के मन की ग्लानि की अवहेलना कर उसने व्यवस्था दे दी, "दयाराम की पत्नी को दस सहस्र गायत्री का जाप करना होगा। तीन दिन व्रत रखना होगा। व्रत में केवल फलाहार होगा। इसपर भी वह घर का प्राणी तब तक ही मानी जा सकेगी, जब तक वह अपने पति की निष्ठावान पत्नी बनी रहेगी।"

अगले दिन अपने पिता के कथनानुसार शोभाराम अपने भाई के घर पर गया और उससे कहा, "भैया, पिताजी तुमसे मिलना चाहते हैं। वे कहते थे कि जितना कुछ मैंने उनको बताया है, वह इस सम्बन्ध के विषय में निर्णय करने के लिए पर्याप्त नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दयाराम इसको भारी विजय समझता था। उसने अपनी पत्नी को बताया, "मैं आज ही पिताजी से मिलने जाऊँगा।"

दयाराम मध्याह्न के भोजन के पश्चात् अपने पिता से मिला और सब बात निश्चय कर आया। उसने बताया कि व्रत तो वह पहले भी रख चुकी है। अब पुन: रख लेगी। एक रहस्योद्‌घाटन उसने और कर दिया। वह यह था कि रामदेई और शान्ति दोनों ही एक ब्राह्मण परिवार की लड़कियाँ हैं और ये नाम उनके माता-पिता के रखे हुए ही हैं। रण्डियों के दलाल उनको फँसाकर भगा लाये थे। उनको सियालकोट में रखकर नृत्य-संगीत की शिक्षा दी गई और उनसे गाने-बजाने का काम लिया जाने लगा। यद्यपि उनके संरक्षक उनसे वेश्यावृत्ति कराना लाभदायक नहीं समझते थे तो भी रामदेई सर्वथा अछूती नहीं है। उसकी छोटी बहन तो अभी रजस्वला भी नहीं हुई। दयाराम ने दोनों बहनों को दो हजार रुपये देकर उनके संरक्षकों से खरीद लिया है।

इस समाचार ने तो घर वालों के विचारों को और भी बदला। इसके बाद रामदेई और शान्ति पण्डित दुनीचन्द के घर में आई। एक दिन हवन-यज्ञ किया और उनको नियमपूर्वक वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई।

यद्यपि दयाराम की पत्नी और साली दयाराम के पिता के घर आती रहती थीं। परन्तु यदि वे लोग कभी दयाराम के घर जाते तो वहाँ का अन्न ग्रहण नहीं करते थे। उन्हें रामदेई इत्यादि से कोई परहेज़ नहीं था। परहेज़ था दयाराम के धन से। उसे वे दूषित धन मानते थे।

यह बात सन् १९२५ की थी। भवानीशंकर के घर पर पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम रखा गया गौरीशंकर। दयाराम के घर कोई सन्तान नहीं हुई। उसका विवाह हुए अभी दो वर्ष ही बीते थे।

रामदेई की बहन शान्ति अब शोभाराम से संगीत सीखने लगी थी। साथ ही दुनीचन्द से हिन्दी और संस्कृत पढ़ने लगी थी।

: ७ :

कई वर्ष सामान्य रूप से व्यतीत हो गए। भवानीशंकर ने अपने कार्यालय की एक परीक्षा में सफलता प्राप्त की तो एकदम उसके वेतन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पचास रुपये की वृद्धि हो गई। इस बीच लाला रघुनन्दन का देहावसान हो गया और मोतीराम ने कह दिया कि भवानीशंकर को अपने रुपये से अब स्वयं व्यापार करना चाहिए। इसका परिणाम यह हुआ कि भवानीशंकर को चौदह-पन्द्रह हज़ार रुपये मिल गये और वह रकम उसने बैंक में जमा करा दी। उसपर चार प्रतिशत का ब्याज मिलने लगा। वह व्यापार नहीं कर सका।

शोभाराम का शान्ति से विवाह हो गया और वह इनके घर में आ गई। इस समय दयाराम की अवस्था बिगड़ने लगी। एक दिन वह सब-कुछ जुए में हार गया। यहाँ तक कि कृष्ण गली वाली हवेली भी बाज़ी में लगा बैठा। जब सब-कुछ हार गया तो उसने अपनी सम्पत्ति का अन्तिम अंश बैंक में रखे अपनी पत्नी के आभूषण भी बाज़ी पर लगा दिये। जब वह बाजी खेली जा रही थी तो दयाराम ने ताश के पत्तों में कुछ गड़बड़ी देखी। उसने प्रतिस्पर्धी का हाथ पकड़ लिया। वह कहता था कि उसको पत्तों के दोहरे होने का ज्ञान नहीं था। और उसने जो कुछ जीता है वह जुए के नियमों के अनुकूल रहकर ही जीता है। दयाराम का कहना था कि उस दिन का सब खेल बेईमानी का हुआ है और उसने अपने मकान और अपने लॉकर में रखे पत्नी के आभूषणों के विषय में लिखकर दिये कागज और कुछ नकद रुपये, जो उसने हारे थे, प्रतिस्पर्धी के सामने से उठाने चाहे। इस पर झगड़ा हो गया। देखने वालों में से कुछ दयाराम की ओर हो गये और कुछ विपक्षी की ओर। मुक्का-मुक्की से आरम्भ होकर इस लड़ाई में छुरियाँ निकल आयीं। इसमें दयाराम और उसका विपक्षी दोनों मारे गये। इसकी सूचना पुलिस को पहुँच गई।

इसका परिणाम यह हुआ कि दयाराम का मकान और रामदेई के लॉकर में रखे कुछ आभूषण बच गये। शेष सब स्वाहा हो गया। पुलिस के पहुँचने से पहले ही वहाँ पर उपस्थित लोगों ने नकदी बटोरी और चम्पत हो गए। पुलिस के हाथ केवल दो सौ रुपये लगे। जाँच-पड़ताल हुई और जुएखाने के संचालक ने कुछ ले-देकर अपनी तथा अपने साथियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जान बचा ली।

दंगे की रात दयाराम घर नहीं लौटा। रामदेई रात-भर उसकी प्रतीक्षा करती रही। अगले दिन दयाराम के शव की जाँच कराकर पुलिस उसके घर पर पहुँची। रामदेई के बयान लेकर पुलिस वापस चली गई।

इस घटना की सूचना रामदेई ने अपने नौकर के हाथ अपने श्वशुर के घर पर भेज दी। पोस्टमार्टम के बाद शव मिला तो उसका अन्तिम संस्कार कर दिया गया। रामदेई अपने श्वशुर के घर पर आकर रहने लगी।

रामदेई को सन्देह था कि उसका श्वशुर उसको संरक्षण देगा अथवा नहीं। वह अकेली इतनी बड़ी हवेली में रहना नहीं चाहती थी। दयाराम के क्रिया-कर्म के तेरहवें दिन इस विषय पर परिवार में विचार-विमर्श होने लगा। शोभाराम इस समय तक अपना संगीत-विद्यालय खोलकर अपने निर्वाह का प्रबन्ध करने लग गया था। रहता वह भवानीशंकर वाले मकान में ही था। उस मकान में स्थान की कठि-नाई हो रही थी। इस पर भी निर्वाह हो रहा था। वर्तमान परिस्थिति में रामदेई ने प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया कि परिवार कृष्णा गली वाले मकान में चलकर रहने लगे और शहर वाला मकान किराये पर दे दिया जाए।

इस प्रस्ताव का अभिप्राय यह था कि रामदेई परिवार के साथ रहे और परिवार दयाराम की सम्पत्ति का उपभोग करे।

रामदेई के दुःख के समय पर परिवार का कोई भी सदस्य सीधे रूप से दयाराम द्वारा अर्जित सम्पत्ति की निन्दा नहीं कर सका। परन्तु उस अधर्म की कमाई के उपभोग के लिए किसी का मन करता भी नहीं था। दुनीचन्द इस समय साठ वर्ष का वृद्ध और धर्म-कर्म वाले संस्कारों को लिये हुए इस नयी परिस्थिति में स्वयं को बहुत कठिनाई में अनुभव कर रहा था। सुधा भी दयाराम की सम्पत्ति से घृणा करती थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि स्त्री-वर्ग अभी भी रामदेई के पूर्व-इतिहास को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूला नहीं था।

परिणामस्वरूप जब रामदेई ने यह प्रस्ताव रखा तो सब एक-दूसरे का मुख देखने लगे। कोई किसी प्रकार का उत्तर नहीं दे सका। वास्तव में सभी घर के पुरखा का मुख देख रहे थे और वह स्वयं इस विषय में मौन था।

रामदेई ने जब सबको मौन देखा तो कह दिया, "मैं उस बड़े मकान में अकेली नहीं रह सकती। और मैं यह भी देख रही हूँ कि मेरे आपके घर में आ जाने से गौरीशंकर के पिताजी को कुछ असुविधा-सी हो रही है। इसी कारण मैंने यह प्रस्ताव रखा है, अब आप लोग विचार कर लीजिए।"

यह एक प्रकार से चुनौती थी कि यदि इसे स्वीकार न किया गया तो वह किसी अन्य स्थान पर जाकर रहने लगेगी। शोभाराम ही सर्वप्रथम इस चुनौती का अर्थ समझ पाया। उसने ही बात को सम्हालते हुए कहा, "भाभी! अभी कुछ दिन तो तुम यहाँ रहो। तब तक मकान की समस्या पर भी विचार कर लिया जायेगा। भैया का मकान भाड़े पर दिया जा सकता है। इससे सुविधा हो जायेगी, परन्तु मकान से अधिक आवश्यक अन्य कुछ बातें हैं, उनके विषय में विचार करने के लिए कुछ समय चाहिए।"

रामदेई समझ गई कि वे अधिक आवश्यक बातें उसकी दिनचर्या के विषय में हैं। परिवार को अभी विश्वास नहीं हो पा रहा था कि वह विधवा के रूप में रह सकेगी अथवा नहीं। यदि उसे विवाह करना है तो उस मकान में जाकर पुनः वहाँ से निकलना तो और भी खराब बात होगी। इस कारण उसने भी अपने प्रस्ताव पर विचार को स्थगित कर पूछ लिया, "आप लोग मुझसे क्या आशा करते हैं?"

अब दुनीचन्द ने कहा, "रामदेई! हम तुमसे कुछ भी आशा नहीं करते। हम तो यह जानना चाहते हैं कि तुम हमसे किस सीमा तक और किस दिशा में सहायता चाहती हो?"

शोभाराम ने पुनः बात सम्हाली। उसने कहा, "पिताजी! क्या सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातें आज ही निश्चय होंगी। क्या काल की गति इस निर्णय में कुछ हाथ नहीं रखती। मेरा विचार तो यह है कि इस विषय को अभी हमें स्थगित रखना चाहिए। भाभी अभी माताजी के साथ रहेंगी। समय स्वयं हमारा मार्ग-दर्शन कर देगा।"

रामदेई के भावी जीवन के बारे में शोभाराम उसको विवश करा-कर कोई निर्णय नहीं कराना चाहता था। उसके कहने पर यद्यपि घर के लोग कुछ सन्तुष्ट नहीं थे, इस पर भी वे इससे अच्छा सुझाव उप-स्थित नहीं कर सके।

दिन व्यतीत होने लगे। शोभाराम के घर एक लड़की हो गई। लड़की का नाम मल्लिका रखा गया। शोभाराम ने संगीत विद्यालय खोल तो दिया था, परन्तु वह अभी चल नहीं रहा था। दो-चार विद्यार्थी आते थे और उनसे पर्याप्त आय नहीं होती थी। एक बात यह जरूर हो रही थी कि कुछ रईसों के घरों में जाकर वह शिक्षा देने लगा था, उससे पचास-साठ रुपया मासिक आय हो रही थी। इतने से ही तो पृथक् मकान में जाकर रहा नहीं जा सकता था।

यद्यपि सन् १६३०-३४ का काल हिन्दुस्तान में बहुत ही सस्ता काल था। अन्नादि बहुत सस्ता था और जीवनोपयोगी अन्य वस्तुएँ भी सस्ती और सुविधापूर्वक सुलभ थीं। तो भी इतना सस्ता नहीं था, जितना तब था, जब दुनीचन्द ने लाहौर में आकर अपना जीवन आरम्भ किया था। समाज की व्यक्ति से माँग बढ़ गई थी। उसको सभ्य कहाने के लिए उस काल से बहुत कुछ अधिक करना पड़ता था। शोभाराम का पचास रुपये में निर्वाह करना बहुत कठिन हो रहा था। भवानीशकर भी अपने जीवन में वेतन से ही जीवन चलाना कठिन समझ रहा था और प्रति छः मास बाद बैंक में जमा रुपयों पर मिलने वाले ब्याज को वह जीवन की अन्य आवश्यकताओं पर व्यय कर देता था। अब वह पाय-जामा, कुरता और बन्द गले का कोट तथा देशी जूता पहनकर दफ़्तर जाने में संकोच अनुभव करने लगा था। दफ्तर में उससे कम वेतन लेने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले बाबू भी अब कोट-पतलून-टाई और कोई-कोई तो हैट पहनकर आने लगे थे।

१९२१ में एक तूफ़ान उठा था। जब विदेशी वस्त्रों की होली जलाकर लोग खद्दर पहन बैठे थे। वह तूफ़ान शान्त हो गया था और उसकी प्रतिक्रिया इतनी प्रबल हुई थी कि पढ़े-लिखों की टीप-टाप १९२० से पूर्व के काल से बहुत ऊँची चली गई थी।

यद्यपि नमक सत्याग्रह के दिन थे, परन्तु यह आन्दोलन उतना देश-व्यापी नहीं था जितना १९२१ का असहयोग आन्दोलन था। जन-साधारण ने तो इस आन्दोलन का अनुकरण नहीं किया था और हिन्दुस्तानी समाज तीव्रगति से योरोपियन समाज का अनुकरण करता हुआ सभ्य हो रहा समझ रहा था।

दयाराम की मृत्यु हुए पाँच मास व्यतीत हो गये थे। रामदेई को उसकी उत्तराधिकारिणी होने का प्रमाण-पत्र मिल चुका था। इस पर भी अनिश्चित मन रामदेई ने मकान भाड़े पर नहीं दिया था। दुनीचन्द तो धीरे-धीरे रामदेई को घर में देखने का अभ्यस्त हो रहा था। परन्तु स्त्री-वर्ग सन्तुष्ट नहीं था। साथ ही भवानीशंकर पर भी विशेष आर्थिक भार पड़ रहा था। एक दिन प्रातः के अभ्यास के पश्चात् शोभाराम अल्पाहार कर रहा था, रामदेई उसको भोजन कराने के लिए आई थी। शोभाराम खाने लगा तो रामदेई ने कहना आरम्भ किया, "भैया! इस प्रकार निर्वाह करना तो कठिन हो रहा है।"

"यह तो मैं भी देख रहा हूँ भाभी! आज पन्द्रह दिन से अधिक हो गये हैं, घर में प्रातः-सायं मूँग की दाल बन रही है, शान्ति से पूछा था तो उसने बताया है कि सब्ज़ी-भाजी खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं।"

"इसके अतिरिक्त भी भापा तथा भाभी को पृथक् में किसी प्रकार की बातचीत करने के लिए अवसर नहीं रहता। इससे माताजी के मन में असन्तोष बना रहता है। परिणाम कुछ अच्छा नहीं होगा। असन्तोष कलह और क्लेश का मूल कारण है।"

"कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम लड़कियों को संगीत सिखाने का विद्यालय नहीं खोल सकते क्या ?"

"कौन सिखायेगा ?"

"क्या मैं सिखा नहीं सकती। मैं समझती हूँ कि मैं अपनी विद्या भूली नहीं और अभ्यास करने से कुछ-न-कुछ तो कर ही सकूँगी।"

"इसके लिए प्रारम्भिक व्यय भी तो चाहिए।"

"वह तुम मेरे आभूषण बेचकर उपलब्ध कर सकते हो। देखो, मैंने यह योजना बनाई है। किसी ऐसे स्थान पर जो नगर के समीप हो और बाहर कोठियों में रहने वालों के भी समीप हो, कोई बंगला भाड़े पर लो। वहाँ बढ़िया फर्नीचर और वाद्य-यन्त्र एकत्रित कर दो। विद्यालय का विज्ञापन दो। सुन्दर नाम-पट्ट लगवा दो। इस सब पर जितना व्यय हो जायेगा, वह सब आभूषण बेचकर प्राप्त करो। कृष्णा गली वाला मकान भाड़े पर दे दो और उस आय से विद्यालय का चालू खर्चा करो। शेष अपने निर्वाह के लिए हम अर्जन कर लेंगे। तुम लड़कों को सिखाना और मैं लड़कियों को सिखाया करूँगी।"

शोभाराम को योजना पसन्द आई। उसने विचार को गुप्त रखकर इस पर मनन किया। योजना बनाई, व्यय का अनुमान लगाया गया और मिशन रोड पर एक बंगला लेकर काम आरम्भ कर दिया गया। कार्य चालू करने में दो मास लगे। सब खर्चा पाँच हज़ार रुपया हुआ। विद्यालय का उद्घाटन शोभाराम ने अपने उस्ताद लालचन्द से करवाया और इस अवसर पर नगर के लगभग पाँच सौ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को निमन्त्रण दिया।

जब निमन्त्रण दिया तो उस अवसर पर अपने पिता को शोभाराम ने बताया, "पिताजी! मेरा अनारकली बाज़ार वाला विद्यालय तो चलता नहीं। इस कारण मैंने अब मिशन रोड पर एक बंगले में विद्यालय खोलने का विचार कर लिया है। उसमें लड़के और लड़कियों को संगीत सिखाने की योजना है। उस विद्यालय का उद्घाटन उस्ताद लालचन्द द्वारा करवाने का विचार है। आप आकर आशीर्वाद दीजिए।"

"कब कर रहे हो उद्घाटन ?"

"वसन्त पंचमी के दिन।"

"अच्छी बात है, आऊँगा।"

Central Library
167936
Gurukul Kangri (Deemed to be University) Haridwar
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

शोभाराम के विद्यालय का उद्घाटन हुआ। पण्डित दुनीचन्द ने उस अवसर पर उपस्थित होकर वेद-मन्त्रों द्वारा आशीर्वाद भी दिया। परन्तु पण्डित दुनीचन्द को न तो इस विद्यालय की योजना पसन्द आई, न ही इस योजना में उसको शोभाराम का सम्मिलित होना पसन्द आया।

पण्डित दुनीचन्द ने कहा, "शोभाराम ! मुझे यह विदित नहीं था कि यह विद्यालय दयाराम के धन से और रामदेई की सहायता से खोला जा रहा है।"

"पिताजी, भाभी के लिए भी तो जीवन-कार्य का विचार करना था। अकेली वह कुछ कर नहीं सकती थी। यदि करती भी तो सम्भावना यही थी कि वह पुनः उन दलालों के हाथ में पड़ जाती, जिनसे दयाराम ने उसको ख़रीदा था।"

"परन्तु वह जुए की कमाई फलेगी नहीं और साथ ही तुम भी कष्ट के भागी बन जाओगे।"

"कष्ट तो मैं भोग ही रहा था। अब मैं अपनी अवस्था सुधारने का यत्न कर रहा हूँ। साथ ही भाभी का चित्त लगा रहेगा। रही रुपये की बात, पिताजी ! जब आपका आशीर्वाद हो गया है तो फिर उसका दूषण छूट नहीं गया क्या ?"

पण्डित दुनीचन्द उत्तर नहीं दे सका। परन्तु उसके मन को सन्तोष नहीं हुआ। उसने पूछा, "तो क्या तुम लोग अभी इसी मकान में रहोगे ?"

"यहाँ रहने की भी तो कठिनाई हो रही थी। अतः मैं, शान्ति और रामदेई भाभी विद्यालय के बंगले के दो कमरों में रहेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कब जा रहे हो ?"

"आज विद्यालय का उद्घाटन हुआ है और हम आज सायंकाल ही वहाँ चले जाएँगे।"

"ठीक है।"

रामदेई समीप बैठी हुई पिता-पुत्र में होने वाले वार्त्तालाप को सुन रही थी। वह समझ रही थी कि उसके पति के धन के प्रति अभी भी उनके मन में घृणा है। परन्तु उसने तो घर वालों के शारीरिक और मानसिक सुख-सुविधा के लिए ही यह योजना बनाई थी। इसमें शोभा-राम सहायक हुआ तो फिर उसने निस्संकोच भाव में इसको कार्यान्वित कर दिया। अब उलटे लौटने का तो प्रश्न ही नहीं रहा था। इस कारण वह बोली नहीं और चुपचाप सुनती रही।

शोभाराम समझ गया कि यह उसको घर से पृथक् होने का संकेत है। अत: उसने कह दिया, "पिताजी ! आपको नाराज़ होने के लिए कोई कारण नहीं है। मैंने तथा भाभी ने परिवार की सुख-सुविधा के लिए ही यह योजना बनाई है। सफलता तो ईश्वर के अधीन है। यत्न हम करेंगे।"

विद्यालय खुल गया। कृष्णा गली की हवेली एक सौ रुपये मासिक भाड़े पर दे दी गई। इससे विद्यालय के बंगले का किराया और बिजली, पानी तथा चपरासी का वेतन दिया जाने लगा। पचास रुपये के लगभग शोभाराम पहले ही पैदा कर रहा था। इससे और कुछ नये विद्यार्थी इस विद्यालय में मिल गए। निर्वाह होने लगा।

इस पर भी कार्य और आय सामान्य ही रही। निर्वाह तो होता रहा था परन्तु उन्नति का मार्ग नहीं दिखाई दे रहा था। रेडियो, सिनेमा इत्यादि के आविष्कार ने कलाकारों के लिए उन्नति का पथ संकीर्ण कर दिया था। कुछ चोटी के गाने-नाचने वाले तो लाखों कमाने लगे थे और साधारण कलाकार भूखों मरने लगे थे।

साधारण और चोटी के कलाकारों में उनकी कला में निपुणता के अतिरिक्त मेल-मुलाकात और भाग्य का हाथ कम नहीं था। शोभाराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाहौर जैसे स्थान में रहता हुआ भी बड़ी मुश्किल से निर्वाह करने में ही सफल हो रहा था। रामदेई का मकान यदि न होता तो कदाचित् निर्वाह में भी कठिनाई उपस्थित हो जाती।

इस पर शोभाराम के दो सन्तान और हो गयीं। ये दोनों लड़के थे। एक का नाम था मायाराम और दूसरे का नाम दाताराम रख दिया गया। इन बच्चों के जन्म पर तथा नामकरण-संस्कार इत्यादि पर दुनी-चन्द तथा भवानीशंकर के परिवार के लोग नहीं आये थे। उनको बुलाया भी नहीं गया था। परिवार के दोनों अंगों में मेल-मुलाकात समाप्त हो चुकी थी।

भवानीशंकर की उन्नति तो निरन्तर हो रही थी। परन्तु घर का खर्चा भी बढ़ रहा था। दुनीचन्द ने पुरोहिताई का काम छोड़ दिया था। लाला रघुनन्दन के देहान्त के बाद तो उसने लाला के घर के अति-रिक्त अन्य सब यजमानों से सम्बन्ध तोड़ दिया था। उसका अधिकांश समय घर पर बैठ शास्त्राध्ययन में व्यतीत होता था।

भवानीशंकर के गौरीशंकर के अतिरिक्त अन्य कोई सन्तान नहीं हुई। लड़का बहुत ही मेधावी था और लाहौर मॉडल स्कूल में पढ़ता था। वह अपनी श्रेणी में सदा प्रथम रहता था और पुरस्कार पाता था। गौरीशंकर के पढ़ाई में तेज़ होने पर भवानीशंकर उससे बहुत स्नेह रखता था। दादा और दादी का भी वह बहुत ही लाड़ला था। इसका परिणाम यह हो रहा था कि वह ज्यों-ज्यों पढ़ाई में उन्नति करता जाता था, त्यों-त्यों वह अभिमानी और उच्छृङ्खल होता जाता था।

सन् १९३९ में युद्ध आरम्भ हुआ। भवानीशंकर १९४१ में रेल के कार्यालय से डैपुटेशन पर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में पहुँच गया। वहाँ पहुँचते ही उसका वेतन ढाई सौ रुपया मासिक हो गया। नयी दिल्ली में बहुत ही न्यून भाड़े पर सरकारी मकान मिल गया। उसने अपने पिता को दिल्ली बुला लिया और लड़के को दिल्ली के हिन्दू कॉलेज में भरती करवा दिया। लाहौर में तो वातावरण और समाज का कुछ दबदबा था। नयी दिल्ली में मित्र, सम्बन्धी तथा मुहल्ले वालों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रभाव रहा नहीं था और गौरीशंकर सर्वथा माता-पिता के हाथ से निकल गया। इस पर भी घर में अकेला लड़का होने से सभी के लाड़-प्यार का भाजन बना हुआ था।

यहाँ पर पहुँच भवानीशंकर ने युद्ध-सम्बन्धी कार्य के लिए अपनी सेवाएँ दे दीं। और उसको एक हिन्दुस्तानी ब्रिगेड के साथ एकाउण्टेण्ट के रूप में मिस्र भेज दिया गया। वहाँ पर हिन्दुस्तानी सेना के कार्यालय में वह काम करने लगा। यह समय सन् १९४३ का था। गौरीशंकर बी० ए० की तैयारी में लगा था। अब घर में पिता के न रहने से वह और भी स्वतन्त्र आचार-विचार का हो गया था।

युद्ध समाप्त हुआ १९४५ में और भवानीशंकर हिन्दुस्तान लौटा १९४६ में। आते ही उसको पुनः केन्द्रीय कार्यालय में लौटा दिया गया। सेना में कमी की जा रही थी और उसको भी वापस सेक्रेटेरियेट में भेज दिया गया। हिन्दुस्तान से बाहर जाने का भत्ता बन्द हो गया। इस पर भी केन्द्र का वेतन भी साढ़े चार सौ मिलता था। १९४६ में गौरीशंकर ने एम० ए० पास कर लिया था और बिना पिता की सहायता के ही वह सेन्ट्रल सेक्रेटेरियेट में उच्च श्रेणी के क्लर्क की नौकरी पा गया था।

भवानीशंकर एक दिन आया तो उसकी डाक में एक 'ऑन हिज़ मैजेस्टीज़ सर्विस' का लम्बा लिफाफा आया हुआ था। भवानीशंकर ने यह समझा कि उसके सैनिक विभाग के कुछ शेष भत्ते के बचे हुए रुपयों की माँग का उत्तर आया होगा। उसने लिफ़ाफ़े पर नाम देखे बिना पत्र खोल डाला और उसमें के पत्र को निकालकर पढ़ने लगा। पढ़कर वह स्तब्ध,रह गया। फिर लिफ़ाफ़े पर अपने पुत्र का नाम पढ़कर प्रसन्नता में उछल पड़ा। उसने आवाज़ दी, "ए कर्मदेई! कर्मदेई!!"

उसकी पत्नी उसके सम्मुख आई, तो कहने लगा, "लो मिठाई खिलाओ। बहुत खुशखबरी की बात है।"

"पहले बताइये तो, अगर अच्छी बात हुई तो मिठाई खाई ही जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवानीशंकर को अपनी पत्नी को पुकारते सुन दुनीचन्द भी अपने कमरे से निकल आया। पूछने लगा, "किस बात की मिठाई बाँट रहे हो ?"

"पिताजी ! गौरीशंकर की नौकरी लग गई है।"

"सत्य ! कहाँ ?"

"यहीं दिल्ली में, सैन्ट्रल पी० डब्ल्यू० डी० में।"

"परन्तु गौरीशंकर और तुमने कभी यह भी नहीं बताया कि उसने प्रार्थना-पत्र भेजा हुआ है।"

"यह तो मुझे भी विदित नहीं था कि उसने कोई प्रार्थना-पत्र दिया हुआ है।"

"कहीं कोई दूसरा ही गौरीशंकर न हो।" कर्मदेई ने कहा।

भवानीशंकर ने पुनः पत्र को देखा। लिफ़ाफ़े पर पता लिखा हुआ देखा और एक बार पुनः पत्र पढ़ गया। उसने कहा, "पता तो यहाँ का ही है। नाम भी सही है। पिता के नाम के स्थान पर मेरा ही नाम है।"

"अच्छा, गौरीशंकर को आ जाने दो। आज पहली बार उसके कान मरोड़ने को जी कर रहा है। अगर वह इतनी बड़ी बात भी हमसे चोरी रख सकता है तो अवश्य कान मरोड़ने की बात है।"

गौरीशंकर नित्य-प्रति के अनुसार सायं साढ़े नौ बजे ही घर आया। आते ही बाबा ने उसको पकड़ लिया। दुनीचन्द क्वार्टर के बरामदे में बैठा रात का खाना खा हुक्का पी रहा था। गौरीशंकर भीतर जाने लगा तो उसने आवाज़ दे दी, "गौरी ! इधर आओ।"

गौरीशंकर उसके समीप आया तो उसने कहा, "बैठो, इस कुर्सी पर।"

गौरीशंकर बैठ गया। बाबा पूछने लगा, "जब कोई बच्चा अपने पिता से कोई काम चोरी-चोरी करे तो उसका क्या दण्ड दिया जाना चाहिए।"

"बाबा ! यदि काम खराब हो तो उसकी खराबी के अनुसार दण्ड दिया जाना चाहिए। यह दण्ड अपराध के अनुसार कान पकड़, उठ-बैठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से लेकर जूते लगाने तक हो सकता है, और यदि···।"

"ठहरो, ठहरो, मैं जानता हूँ कि तुम बहुत पढ़ गए हो। मैंने काम के अच्छे-बुरे की बात नहीं पूछी। उसका दण्ड अथवा पुरस्कार तो उस काम की अच्छाई-बुराई के अनुसार होगा। परन्तु मैं तो उस काम की विधि के विषय में पूछ रहा हूँ। यदि कोई अपने बड़ों से चोरी रखकर कोई काम करे, तो भी तो दण्ड मिलना चाहिए।"

"बाबा! मैं इस सिद्धान्त को नहीं मानता। यह सिद्धान्त तो गांधी जी जैसे असफल नेताओं का है। कर्म के गुण से ही उस कर्म का मूल्यांकन हो सकता है। कर्म स्वयमेव कुछ कीमत नहीं रखता।"

इस समय गौरीशंकर के माता-पिता भी वहीं पर आ गए थे। सब उस पत्र के विषय में जानने के लिए उत्सुक थे। पुत्र के उक्त कथन पर भवानीशंकर बोल उठा, "साधनों से ही कार्य की कीमत लगाई जाती है।"

"पिताजी! यह ग़लत है। पर बाबा, क्या हुआ है?"

"भवानी, दिखाना इसको।"

भवानीशंकर ने पुत्र की नियुक्ति का पत्र जेब से निकालकर दिखाया और पूछ लिया, "यह तुम्हारा ही है न?"

गौरीशंकर ने पढ़ा और कह दिया, "हाँ पिताजी! कब आया है?"

"आज ही आया है।"

"तो कल मैं मैम्बर इन्चार्ज का धन्यवाद करने के लिए जाऊँगा।"

"मैम्बर इन्चार्ज! कौन मैम्बर इन्चार्ज?"

"वही वर्क्स एण्ड माइन्ज़ का मैम्बर।"

"वह तो डॉक्टर सुधाकर है। कैसे जानते हो उसको?"

"पिताजी! यह लम्बी कहानी है। मैं एक और बात कहता हूँ।"

इस पर बाबा जी ने कहा, "वह भी सुन लेंगे। पहले इस चोरी-चोरी कार्य के लिए तो तुम्हारे कान मरोड़े जाने चाहिए। और तुम्हारे नौकरी पा जाने की सफलता के लिए तुमको एक बहुत बढ़िया भेंट देनी चाहिए।"

"क्या मिलेगा बाबा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक बहुत सुन्दर बहू।"

"तो बाबा ! कान मरोड़ लो। जल्दी करो। मुझको पुरस्कार पाने की भी जल्दी है।"

"ओह ! अच्छा इधर आओ।"

गौरीशंकर कान आगे कर बोला, "लो बाबा, मरोड़ो और फिर अगली बात कह दूं।"

बाबा ने कान नहीं मरोड़ा। केवल पीठ ठोंक दी। गौरीशंकर ने कहा, "बाबा ! हो गया दण्ड।"

"हाँ।"

"तो अब लाओ पत्नी।"

"वह कोई लड्डू-पेड़ा तो है नहीं, जो दुकान में गये कि खरीदकर ले आये। कल मैं और तुम्हारी दादी लाहौर जाएँगे, वहाँ से शीघ्राति-शीघ्र कोई अच्छी-सी लड़की ढूंढ़ लायेंगे।"

"इसकी ज़रूरत नहीं बाबा। उसमें भी मैं बड़ों की सहायता कर सकता हूँ। इस कार्य के लिए भी मैंने एक लड़की देख रखी है। उसका नाम है सरोजिनी देवी। वह मेरे साथ बी० ए० में पढ़ती थी। अब वह सेंट्रल पी० डब्ल्यू० डी० में कार्य करती है। वास्तव में उसकी सिफ़ारिश से ही मेरी वहाँ पर नियुक्ति हुई है।"

इस सूचना से तो माता-पिता, दादा-दादी सभी मुख देखते रह गये। दादा ने पूछा, "वह कौन है, किस जाति की है ? उसके माता-पिता कौन हैं ? कार्यालय में किस पदवी पर है ? जिसकी सिफ़ारिश चलती है। देखने में कैसी है, बोलचाल और चाल-चलन कैसा है ?"

"मैंने यह सब देख और जाँच लिया है। प्रत्येक प्रकार से वह सन्तोष-जनक है। मैंने उसको वचन दिया है कि जिस दिन नियुक्ति-पत्र प्राप्त होगा, उसके अगले दिन हम कचहरी में जाकर विवाह की स्वीकृति के लिए प्रार्थना-पत्र कर देंगे।"

दुनीचन्द ने हुक्का एक ओर कर दिया और खाँसकर बलगम निकालने के लिए उठकर बाहर लॉन की ओर चला गया। दादी अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति का स्वभाव जानती थी। यह खाँसी उसकी भावना के उद्रेक का सूचक थी। वह समझ गई थी कि बाबा को पोते का व्यवहार पसन्द नहीं आया और उसने इस प्रकार उठकर तथा खाँसते-खाँसते चले जाने से अपनी अरुचि प्रकट कर दी है। वह उठ खड़ी हुई और दुनीचन्द के आने पर उसके साथ ही सोने के कमरे में चली गई। भवानीशंकर ने शेष बात जानने के लिए गौरीशंकर से कहा, "भोजन कर लो और फिर मेरे कमरे में आ जाना। तब विचार करेंगे कि क्या करना चाहिए।"

"मैं भोजन कर आया हूँ, आप कर लीजिए।"

"मुझे तो भूख ही नहीं रही। अभी आ जाओ, मैं भोजन नहीं करूँगा।"

कर्मदेई उनके पीछे-पीछे आने लगी तो भवानीशंकर ने कह दिया, "कर्म ! तुम जाओ, भोजन करो। मैं इससे पृथक् में बातचीत करना चाहूँगा।"

कर्मदेई रसोई-घर में चली गई और पिता-पुत्र बैठक में चले गये।

: २ :

सरोजिनी महाराष्ट्र की रहने वाली थी। उसका पिता चर्मकार था और लड़की समझदार तथा पढ़ाई में योग्य होने के कारण वज़ीफ़ा लेकर पढ़ती गई। जब डॉक्टर सुधाकर दिल्ली में एक्ज़ीक्यूटिव कौंसिल का मैम्बर बनकर आया तो सरोजिनी का पिता भी वहाँ आ पहुँचा और ऑनरेबल मैम्बर के कार्यालय के चपरासी का स्थान पा गया। उसने अपनी लड़की के बम्बई विश्वविद्यालय से एफ०ए० पास करने की बात बताई तो मैम्बर महोदय ने कह दिया, "उसको दिल्ली बुला लो। उसको यहाँ दाखिला मिल जायेगा और फिर यदि तब तक मैं इस जगह पर रहा तो नौकरी भी दिलवा दूंगा।"

सरोजिनी के पिता ने उसको दिल्ली बुलवा लिया और वह बड़ी सरलता से दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हो गई। डॉक्टर साहब के प्रयत्न से लड़की को वज़ीफ़ा भी मिल गया। उन दिनों गौरीशंकर भी उसी श्रेणी में पढ़ता था और दोनों सहपाठी हो गए। दोनों में मित्रता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई और फिर विवाह का वचन भी हो गया। सरोजिनी ने बी० ए० पास किया तो टाइप-शार्टहैंड सीखकर मैम्बर महोदय की पी० ए० लग गई। गौरीशंकर एम० ए० में पढ़ता था। जब उसने एम० ए० पास किया तो सरोजिनी ने मैम्बर महोदय से उसका उल्लेख किया।

"परन्तु सरोजिनी ! तुम उसकी सिफ़ारिश क्यों कर रही हो ? वह नाम से तो कोई उत्तरी-भारत का ब्राह्मण-सा प्रतीत होता है।"

"वह मेरा मित्र और मंगेतर है।"

"सत्य ! वह जानता है कि तुम किसकी बेटी हो ?"

"जानता है। वह उदार विचारों वाला युवक है।"

"कब होगा तुम लोगों का विवाह ?"

"उसके नौकरी पा जाने पर।"

"विवाह किस विधि से होगा ?"

"कोर्ट में जाकर। बाद में यदि उसके माता-पिता ने स्वीकार कर लिया तो हिन्दू-विधि से भी विवाह हो जाएगा।"

"मुझे सन्देह है कि नौकरी मिलने पर कहीं वह तुमसे विवाह करने से इनकार न कर दे। मुझे हिन्दुओं, विशेषतया ऊँची जाति वालों का बिल्कुल विश्वास नहीं है।"

"मेरी धारणा है कि वह उन जैसा नहीं है।"

"ठीक है, तुम कल उसका प्रार्थना-पत्र ले आओ। मैं उसकी नियुक्ति करवा दूंगा। परन्तु कहीं उसने तुमको धोखा दिया तो उसको ऐसा फँसाऊँगा कि सात वर्ष की जेल भोगेगा।"

"यह भी कह दूँगी।"

बातचीत हो गई। गौरीशंकर ने सरोजिनी के हाथ अपना प्रार्थना-पत्र भेज दिया। उसने वह मैम्बर महोदय के हाथ में दे दिया। एक सप्ताह के भीतर नियुक्ति-पत्र मिल गया।

जब वह नियुक्ति-पत्र गौरीशंकर के घर पर पहुँचा तो घर पर मानो तुषारपात हो गया हो। विशेष तौर पर जब भवानीशंकर को लड़की की जाति और उसकी पदवी का ज्ञान हुआ। उसका वृत्तान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानने पर भवानीशंकर के मुख से निकला, "गौरी ! यह तुमने क्या किया है ?"

"पिताजी ! वह बी० ए० पास है। इस समय उसको साढ़े तीन सौ रुपया वेतन मिलता है। और फिर डॉक्टर साहब एक-दो वर्ष तक मैम्बर बने रहे तो मैं भी किसी ऊँची पदवी पर पहुँच जाऊँगा।"

"परन्तु वह चमार की बेटी है और तुम हो गौड़ ब्राह्मण। एक वेद-पाठी के पोते हो।"

"यह सब मिथ्याचार है। सब मनुष्य समान हैं। पुराने ज़माने की बातें अब नहीं चल सकतीं।"

"मैं तुम्हारी माँ से पूछना चाहता हूँ कि वह किस प्रकार इस बात को समझती है।"

"पूछ लीजिए। मैं अपनी उन्नति का स्वयं निर्माण करने वाला हूँ। इस कारण आपके रूढ़िवाद को मैं अपनी उन्नति में बाधक नहीं बनने दूंगा।"

कर्मदेई से पूछा गया तो वह पुत्र के प्रति स्नेह से द्रवित हो गयी। उसने कह दिया, "एक बार पिताजी ने अपने जुआरी लड़के की वेश्या पत्नी को शुद्ध किया था। अब भी वैसा कर सकते हैं।"

बात दुनीचन्द के पास चली तो उसने बताया, "उसमें और इसमें भारी अन्तर है। वह स्वेच्छा से प्रायश्चित कर रही थी। यह तो स्वेच्छा से हमारे परिवार में सम्मिलित होने के लिए नहीं आई। फिर उसका हिमायती हमारा लड़का था और उसका सहायक वह है जो ऊँची जाति वालों का घोर विरोधी है। इसमें वैसी बात नहीं चल सकती, जैसी रामदेई के समय चली थी।"

कर्मदेई ने फिर भी यत्न किया। उसका एक ही पुत्र था और वह उसको छोड़ नहीं सकती थी। अगले दिन गौरी को वस्त्र पहन घर से जाते देखा तो कर्मदेई समझ गई कि वह लड़की का धन्यवाद करने के लिए जा रहा है। अतः उसने भागकर उसको रोककर कहा, "बहुत जल्दी में हो गौरी !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरीशंकर ने कलाई की घड़ी देखते हुए कहा, "बताओ, क्या बात है माँ ?"

"मैं लड़की देखना चाहती हूँ।"

"माँ ! वह भी दिखा दूँगा। आज चार बजे तैयार रहना। ज़रा अच्छे-से कपड़े पहन रखना। मैं तुमको ले जाकर उसको दिखा दूँगा।"

उसी सायंकाल कर्मदेई रेशमी वस्त्र पहन, गौरीशंकर के साथ चल पडी। वह उसको 'वेंजर रेस्टोरां' में ले गया। सरोजिनी वहाँ पहले से बैठी थी। गौरीशंकर माँ को उसी मेज़ पर ले गया, जहाँ वह बैठी थी। गौरीशंकर ने परिचय कराया, "माँ ! यह हैं सरोजिनीदेवी।"

"और सरोजिनी डियर ! ये मेरी माताजी हैं। तुमसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक थीं।"

सरोजिनी ने उठकर उसको नमस्कार किया और फिर उसके समीप बैठकर पूछने लगी, "आप इनके पिताजी से पूछकर आई हैं ?"

"नहीं, मैं तो अपने मन की प्रेरणा से स्वयं ही आई हूँ।"

"तब तो मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करती हूँ। मुझे इन्होंने बताया है कि ये जन्म से ब्राह्मण हैं। मैं नॉन-ब्राह्मण समुदाय में से हूँ। मेरे पिता इस समय चपरासी हैं और मैंने यह शिक्षा और पदवी अपने परिश्रम से प्राप्त की है।"

"बेटा ! सब अपने परिश्रम से ही फल प्राप्त करते हैं। वैसे तो पूर्व-जन्मों के कर्मफल को ही भाग्य कहते हैं। मैं तो केवल यह देखने के लिए आई थी कि मेरे पुत्र ने कैसी बहू चुनी है।"

"तो क्या देखा है आपने ?"

"अच्छी, सुन्दर, स्वस्थ और बुद्धिशील है। मैं जाति की बात मानती नहीं। मैं चरित्र की बात को महत्त्व देती हूँ।

"इस पर भी इसके पिता और बाबा भी घर पर हैं। उनके सन्तोष के लिए तुम थोड़ी-सी आत्मशुद्धि कर लो तो फिर तुम सुगमता और सरलता से इसके पिता और बाबा के परिवार में सम्मिलित हो सकोगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिये, मुझे इनके माता-पिता अथवा दादा-दादी से कोई वास्ता नहीं, मेरा विवाह इनसे होगा न कि इनके माता-पिता से। यदि वे चाहें तो हम उनसे मेल-मुलाकात रख सकते हैं। यदि नहीं, तो मुझको उनकी कोई आवश्यकता अनुभव नहीं होती।"

"तो विवाह के बाद रहोगी कहाँ ?"

"मुझे तुरन्त ही क्वार्टर मिल जाएगा। नौकरी करते हुए मुझे दो वर्ष हो रहे हैं और सरकारी क्वार्टर मिल सकता है।"

सरोजिनी ने चाय का आर्डर दे रखा था। वह आई तो उसने तीनों के लिए चाय बनानी आरम्भ कर दी। पेस्टरी की तस्तरी कर्मदेई के सामने रखते हुए सरोजिनी ने कहा, "आप खाइये, इससे ही आपको पता चल जायेगा कि मेरा आपसे कैसा सम्बन्ध रहेगा।"

"नहीं बेटा ! तुम खाओ, मैं अपने घर वालों से पूछे बिना इससे आगे नहीं बढ़ सकती।"

सरोजिनी को इस बात की चिन्ता नहीं थी। उसने तश्तरी उठा गौरीशंकर के आगे कर दी और वह उसमें से काँटे से उठाकर खाने लगा। इसके बाद सरोजिनी ने कर्मदेई से बात करनी बन्द कर दी। अब वह गौरीशंकर से बातें करने लगी।

"मैंने आपके तथा अपने विषय में सब बातें वकील को लिखकर दे दी हैं। वह कल तक प्रार्थना-पत्र तैयार कर देगा। कल हम सब-जज के घर जाकर वह प्रार्थना-पत्र दे आयेंगे। डॉक्टर साहब ने आज उनको टेलीफोन कर दिया है। वे अपने घर पर हमारी कल प्रतीक्षा करेंगे। साढ़े दस बजे तक हम वहाँ से कार्यालय में लौट आयेंगे। कल आप अपने कार्य का चार्ज ले लीजियेगा।"

"उसके बाद क्या होगा ?" गौरीशंकर ने पूछा।

"वकील ने बताया है कि एक नोटिस तो कचहरी में लग जाएगा और एक-एक आपके और मेरे अभिभावकों के नाम जारी हो जाएगा। यदि उनको किसी प्रकार की आपत्ति हो तो वे पन्द्रह दिन के भीतर कोर्ट में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रकट कर सकते हैं। यदि कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपत्ति न हुई तो हमको पन्द्रह दिन के बाद आज्ञा मिल जायेगी कि हम कोर्ट में उपस्थित होकर सब-जज के सम्मुख शपथपूर्वक पति-पत्नी के रूप में रहने का वचन दें। रजिस्टर में लिखा जायेगा और हमारे हस्ताक्षर हो जायेंगे। एक-दो गवाह भी होंगे। इस प्रकार हमारा विवाह हो जायेगा।"

कर्मदेई सुन रही थी और भीतर-ही-भीतर उसका मन बैठ रहा था। सरोजिनी ने कहना जारी रखा, "मैंने अपने लिए क्वार्टर माँग लिया है। मैं समझती हूँ कि विवाह से पहले मुझे क्वार्टर मिल जायेगा। मुझे ताल कटोरा रोड पर क्वार्टर मिल सकता है।"

कर्मदेई की आँखों के सामने अँधेरा आता जाता था। चाय समाप्त हुई तो बैरे को बिल और टिप की रकम देकर सरोजिनी ने कर्मदेई से कह दिया, "माताजी ! मैं आपको उस क्वार्टर में, जो मुझे मिलने वाला है, आकर रहने का निमन्त्रण देती हूँ।"

"तुम्हारा निमन्त्रण मैं गौरी के पिता तक पहुँचा दूँगी। देखो बेटी ! मैं हिन्दू हूँ, और अपने पति के साथ अथवा उनकी स्वीकृति से ही कहीं जा सकती हूँ।"

"ठीक है, आप पूछ लीजिये। मैं तो इन बन्धनों से मुक्त हूँ।"

कर्मदेई घर पहुँची तो दुनीचन्द और भवानीशंकर तथा उसकी माँ उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। गौरीशंकर और सरोजिनी कर्मदेई को क्वार्टर के बाहर उताकर टैक्सी में ही कहीं चले गये थे। कर्मदेई पुत्र के व्यवहार से रोनी-सी सूरत बनाये हुए घर पर पहुँची और पीत-मुख कुर्सी पर बैठ गई। सुधा ने पूछा, "हाँ, क्या देख आई हो ?"

"देख आई हूँ कि लड़की है दुबली-पतली, नख-शिख पतले-तीखे और सुन्दर हैं। रंग कुछ काला है, वस्त्र बहुत ही बढ़िया पहने हुई थी।"

"बस !" दुनीचन्द का कहना था।

"देखा तो यही है। हाँ, बातें सुनी और समझी हैं। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है कि वह हिन्दू नहीं है। उसमें शील, विवेक और विनय कुछ भी नहीं है। जिसको वह आत्मसम्मान समझती है मैं उसे अहंकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अभिमान ही समझ पाई हूँ।"

कर्मदेई ने सारी बात जो उसने 'वेंजर रेस्टोराँ' में देखी-सुनी थी, उन लोगों को विस्तारपूर्वक सुना दी। सबसे पहले दुनीचन्द ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि अब मेरा यहाँ पर कोई काम नहीं। मुझे चल देना चाहिए।"

इतना कहकर वह उठा और अपने कमरे में चला गया। सुधा कर्मदेई की रोनी सूरत देख स्वयं भी आँसू बहाने लगी थी।

: ३ :

गौरीशंकर विवाह तक अपने पिता के क्वार्टर में ही रहा। परन्तु उससे किसी की बोलचाल नहीं थी। वह भी ऐसा व्यवहार रख रहा था, मानो उससे भारी अन्याय हो रहा है। केवल कर्मदेई थी, जो बिना बोले, बिना कुछ भी पूछे उसके सामने यथासमय खाना रख जाती थी। वह खा लेता तो बर्तन उठाकर ले जाती थी।

अब गौरीशंकर कार्यालय में जाता था और काम करता था। उस को इस विभाग में ठेकेदारों के बिल पास करने पर लगा दिया था और जिस दिन से वह कुर्सी पर बैठा था, उसकी जेब नोटों से भरने लगी थी।

विवाह के दिन नया सूट-बूट पहनकर वह घर से गया। उसे जाते हुए केवल माँ ने देखा था और उसने समझ लिया था कि लड़का विवाह के लिए कचहरी जा रहा है। जब वह ताँगे में सवार होने लगा तो माँ ने कहा, "मैं तुम्हारी बहू को कुछ भेंट में देना चाहती हूँ।"

"तो तुम मध्याह्न दो बजे के करीब तैयार रहना। मैं तुमको अपने नये मकान में ले जाऊँगा। हम दोनों ने आज दफ्तर से छुट्टी ली हुई है। दो से तीन के भीतर तुम मिल सकोगी। चार बजे हमने अपने क्वार्टर में ही मित्रों को चाय-पार्टी दी हुई है, यदि तुम भी चाहो तो उसमें सम्मिलित हो सकती हो।"

माँ चुप रही और बेटा ताँगे में सवार हो चला गया। ठीक दो बजे गौरीशंकर आया और अपनी माँ को ताल कटोरा रोड स्थित अपने क्वार्टर में ले गया। सरोजिनी के साथ उसकी दो सहेलियाँ वहाँ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले ही उपस्थित थीं। सरोजिनी ने अपनी सास को देखा तो उनके पास से उठी और सास को पृथक् कमरे में लेकर चली गई। उसने बैठाते हुए पूछा, "बताओ माँजी ! आप यहाँ रहने के लिए आई हैं ?"

"नहीं बेटा ! मैं तो उनसे चोरी-चोरी आई हूँ। मैं चाहती हूँ कि तुमको यह दे दूं।"

कर्मदेई ने अपने गले से सोने का लॉकेट उतारकर सरोजिनी के गले में डाल दिया। यह वह मंगल-सूत्र था, जो उसकी सास ने उसके विवाह के समय उसके गले में डाला था।

"यह भी आप अपने पति से चोरी-चोरी दे रही हैं ?"

"हाँ, परन्तु यह मेरा है। इसे हमारे शास्त्र में स्त्री-धन कहते हैं। मैं तुम्हें यह स्वेच्छा से दे रही हूँ। परमात्मा करे कि तुम सौभाग्यवती होओ। पुत्र-पौत्रों के दर्शन करो और धर्म-कर्म का पालन करती हुई सौ वर्ष तक जियो।"

सरोजिनी यह आशीर्वाद सुनकर हँस पड़ी। उसने सास को हाथ जोडे और कहने लगी, "मैं भी इच्छा करती हूँ कि कोई भगवान् हो तो आपका आशीर्वाद सुन ले।"

"है बेटी ! परन्तु वह सुनेगा कि नहीं, यह मेरे कर्मों के अधीन है। मैं नहीं जानती कि मैंने इतने अच्छे कर्म किये हैं अथवा नहीं, जिनसे मेरी पुकार उस तक पहुँच सके। इस पर भी बेटी, मैं उससे कह तो सकती ही हूँ।"

सरोजिनी ने बात बदलते हुए पूछा, "तो आप चाय-पार्टी तक ठहरेंगी ?"

"नहीं बेटी ! ईश्वर तुमको प्रसन्न रखे।" इतना कहते-कहते उसके आँसू छलक पड़े। वह उनको रोक नहीं सकी। इससे वह एकाएक उठी और क्वार्टर से बाहर निकल गई। बाहर टैक्सी खड़ी हुई थी, उसमें बैठ वह अपने घर चली गई।

सरोजिनी और गौरीशंकर के दफ्तर के और कुछ कॉलेज के मित्र थे, जिनको विवाह के उपलक्ष्य में चाय-पार्टी दी गई थी। इसमें ऑन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेवल मैम्बर और विभाग के सचिव तथा उप-सचिव आदि भी पधारे थे। बहुत हँसी और मज़ाक होता रहा। अधिकांश उपस्थित जन यह जानते थे कि यह विवाह ब्राह्मण-पुत्र और चर्मकार कन्या का हुआ है। वे यह भी समझते थे कि समाज में नव-चेतना का यह एक उज्ज्वल उदाहरण है। उपस्थित जनों में कुछ यह जानते थे कि ऑनरेबल मैम्बर की इस विवाह में रुचि है। उनकी रुचि का कारण भी यही माना जाता था कि यह विवाह न केवल प्रान्तों की सीमाओं को पार कर चुका है, प्रत्युत हिन्दू समाज की जाति-पाँति की रेखाओं का भी उल्लंघन करके हुआ है।

सबने पति-पत्नी को आशीर्वाद दिया। कुछ ने, जिनको ऑनरेबल मैम्बर की खुशामद पसन्द थी, सरोजिनी को भेंट-स्वरूप भी कुछ छोटी-मोटी वस्तुएँ दीं। इस प्रकार हँसी-खुशी में यह चाय-पार्टी समाप्त हुई।

अभी घर पर रसोई पकाने के लिए नौकर नहीं था। इस कारण गौरीशंकर कुछ मिठाई इत्यादि लाया हुआ था। वह खाकर ही निर्वाह किया गया। दोनों पति-पत्नी उत्सुकता से एकान्तवास के लिए अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

रात तो बहुत ही सुख-सुविधा से व्यतीत हुई। इस पर भी गौरी-शंकर को अपने माता-पिता से पृथक् होने का थोड़ा-सा दुःख विवाह की प्रथम रात के आनन्द में भी अखरा। सरोजिनी अपनी सास के व्यवहार पर चिन्तन कर रही थी। वह विचार करती रही थी कि क्या सत्य ही वह अपने घर वालों को बताये बिना आई होगी? यदि आई थी तो फिर पूर्णतया आ ही क्यों न गई? यदि वह आई है तो स्पष्ट है कि वह अपने पति के रूठने को ठीक नहीं समझती। ठीक नहीं समझती तो उनको छोड़कर चली क्यों नहीं आती? वह अवश्य भीरु है। इस पर भी सरोजिनी को उसका आना भला लगा था।

सरोजिनी के पिता के परिचितों में से केवल एक आदमी आशीर्वाद देने आया था और ससुराल की ओर से तो कोई भी नहीं आया था। यही कारण था कि कर्मदेई का अपने पति और सास-ससुर के विरोधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने पर भी आना उसको भला ही प्रतीत हुआ था और फिर गले में मंगलसूत्र उसको कर्मदेई के स्नेह का सूचक प्रतीत हुआ था।

सरोजिनी ने अपने पति से पूछा, "आपकी माताजी के साहस ने मेरे मन को बहुत प्रभावित किया है।"

"वे सदा मुझसे स्नेह रखती रही हैं। परन्तु वे अपने हिन्दू संस्कारों को मन से निकाल नहीं सकीं। और न मेरी भाँति अपने सम्बन्धियों को तिलांजलि ही दे सकी हैं।"

"आपके पिता नाराज़ तो बहुत होंगे?"

"कह नहीं सकता। मैंने पिताजी को माँ के प्रति कभी नाराज़ होते देखा नहीं। बाबा को तो दादी को डाँटते कई बार देखा है। एक समय था, जब हम लाहौर में बहुत ही निर्धनावस्था में थे। महीनों ही दिन-रात मूँग की दाल और सूखी चपातियाँ ही खाने के लिए मिलती थीं, उस समय भी माता-पिता का परस्पर व्यवहार अति प्रेममय ही था। दिल्ली में आकर तो अवस्था कुछ सुधरी है। पिताजी युद्ध-अभियान में मिस्र गये हुए थे और उनको वहाँ जाने का भत्ता भी मिलता रहा है। इस प्रकार अवस्था सुधर गई। अब घर में यह चर्चा है कि पिताजी को पुनः अपने रेल-कार्यालय में वापस जाना होगा, इससे उनको पुनः उसी निर्धनावस्था का सामना करना पड़ जायेगा।"

"परन्तु इतने दिनों तो आपके पिताजी ने खूब हाथ रँगे होंगे?"

"मैं समझता हूँ कि अपने वेतन के अतिरिक्त वे एक पैसा भी नहीं छूते। कभी कोई व्यक्ति उनकी किसी सहायता के विनिमय में कुछ ज़बरदस्ती दे जाता है तो वे उसको जब तक किसी को दान-दक्षिणा में दे नहीं देते, तब तक उनकी आत्मा को शान्ति नहीं मिलती।"

"तो अभी तक भी उनमें बाल्यबुद्धि ही विद्यमान है? स्कूलों की किताबों में हम पढ़ा करते थे कि 'होनेस्टी इज़ द बैस्ट पॉलिसी।' उस समय और उस आयु की सूझ-बूझ में यह सिद्धान्त बहुत सुन्दर प्रतीत होता था। परन्तु मैं अब अपनी विकसित बुद्धि से यह समझ गई हूँ कि समाज ने कुछ 'स्लोगन्स' बालबुद्धि मनुष्यों को मूर्ख बनाने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचलित कर रखे हैं। यदि ये चलाये न जायें तो समाज के नेताओं का जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत न हो सके।"

गौरीशंकर भी इसी नीति पर आचरण कर रहा था। बीस दिन की नौकरी में ही उसको माया की ऊष्मा का सुखद अनुभव होने लगा था। इस थोड़े से काल में भी वह अपने पिता के घर से अपने क्वार्टर को अधिक सुखद और सुन्दर बना सका था।

रात बातें करने और बीच-बीच में सुहाग-रात के सुखद अनुभवों का आस्वादन करते-करते बीत गई। अगले दिन गौरीशंकर अपनी मेज़ पर बैठा-बैठा ऊँघने लगा तो उसके साथी उसको देख-देख हँसने लगते। आखिर एक सहयोगी ने कह ही दिया, "मिस्टर गौड़! आप जा सकते हैं, आराम करिए अन्यथा रात फीकी रहेगी।"

गौरीशंकर हँस दिया और सिर को झटका दे सतर्क हो पुनः कार्य करने लगा। बहुत कठिनाई से तीन बजे सचिव महोदय किसी कार्य से कार्यालय से बाहर गये तो उसने भी अपना सामान समेटा और घर को चल दिया।

सरोजिनी की अवस्था भी वैसी ही थी। वह भी छुट्टी लेकर जल्दी घर आ गई थी। वह तो एक बजे लंच के समय ही क्वार्टर में पहुँच गई थी। उसका विचार था कि घर पर पहुँचकर आराम करेगी। परन्तु घर पहुँचते ही उसकी सास आ गई। यह अप्रत्याशित बात थी। वह तो समझ बैठी थी कि सास एक बार साहस कर चोरी-चोरी आ गई है। पुनः इतने साहस का कार्य वह नहीं कर सकेगी। वह यह भी आशा करती थी कि उसके सोने का लॉकेट दे जाने पर घर पर हो-हल्ला हुआ होगा।

वह पलंग पर लेटी ही थी कि बाहर दरवाज़े पर खटखटाने का शब्द हुआ। सरोजिनी ने समझा कि उसका पति भी उसकी भाँति दफ्तर से छुट्टी करके आ गया है। वह बड़े उत्साह के साथ लपककर द्वार खोलने के लिए गई। वहाँ अपनी सास को खड़ी देख अनायास ही पूछ बैठी, "आप···! आइए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मदेई को लेकर वह बैठक में चली गई। उसको बैठाकर पूछने लगी, "चाय पियें, तो बनाऊँ ?"

"नहीं, मैं घर पर खाना खाकर आई हूँ। मैं यह देखने के लिए आई थी कि मैं किस प्रकार तुम लोगों को सुख और आराम पहुँचा सकती हूँ। कल मैंने देखा था कि तुमने अभी तक कोई नौकर रखा नहीं, इस कारण इतने बड़े क्वार्टर की सफ़ाई में अकेले तुमको कठिनाई होती होगी।"

"नहीं माताजी, आपको इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। यहाँ क्वार्टरों के स्वीपर से हमने सफ़ाई करवा ली थी। रसोइये के लिए हम आशा कर रहे हैं कि आज कोई-न-कोई मिल जायेगा। मैंने दफ़्तर के चपरासी को कह दिया है। वह सायंकाल आकर बिस्तर आदि लगा जाया करेगा।"

"मैं विचार कर रही थी कि आज तो तुमने अपने कार्यालय से छुट्टी की होगी।"

"छुट्टी तो नहीं की। इस पर भी जब कार्यालय में काम करते-करते मैं ऊँघने लगी तो डॉक्टर साहब ने हँसते हुए कह दिया कि घर में जाकर आराम करूँ। मैं चली आई हूँ। आशा तो कर रही थी कि वे भी आ जायेंगे। परन्तु वे अभी तक आये नहीं।"

"मेरा कहा मानो, तुम अब नौकरी छोड़ दो।"

"किसलिए ?"

"घर पर और दफ्तर में दोनों जगह काम करना कठिन हो जायेगा।"

"जब तक चलेगा, तब तक चलाऊँगी।" फिर उसने बात बदलते हुए अपनी सास से ही पूछ लिया, "आप बताइये, उनके पिताजी आपके यहाँ आने पर नाराज़ तो नहीं हुए ?"

"नहीं, नाराज़ नहीं हुए। वे मुझसे कभी नाराज़ नहीं होते थे। जब कभी किसी विषय पर हमारा मतभेद हो जाता है तो हम एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझने का यत्न करते हैं। कभी-कभी तो उसे समझने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में महीनों लग जाया करते हैं और जब समझ जाते हैं तो फिर अपने मतभेद को स्मरण कर हँस देते हैं। बेटा, तुम्हारे यहाँ आने की बात भी ठीक वैसी ही है।"

"मैंने तो सुना है कि आपके श्वशुर कट्टरपन्थी हैं?"

"हाँ, परन्तु उनके पन्थ में एक गुण है। वे मानते हैं कि मानव की आत्मा स्वतन्त्र है। उसकी स्वतन्त्रता को बलपूर्वक छीनने से वह विद्रोह करने लगती है। विद्रोह अशान्ति का सूचक है। अशान्ति सदा दुःख-कारक होती है।

"अत: वे आत्मा को स्वतन्त्रतापूर्वक अपना मार्ग बनाने की स्वीकृति देते हैं। वे उसको अपने मार्ग पर जाने की तब तक स्वतन्त्रता देते हैं, जब तक वह दूसरों के मार्ग में बाधक न हो।"

"तो वे अपने पौत्र की स्वतन्त्रता का भी आदर करते हैं?"

"आदर और स्वीकृति में अन्तर है। देखो बेटा! आदर में तो प्रशंसा का भास होता है। वे उस बात की प्रशंसा तो कर नहीं सकते, जिसको वे अपने लिए अथवा समाज के लिए कल्याणकारी नहीं मानते। गौरीशंकर के इस विवाह को वे कम-से-कम हिन्दू समाज के लिए कल्याणकारी नहीं मानते।"

"इसलिए कि मैं अब्राह्मण हूँ और वे ब्राह्मण हैं?"

"नहीं, कारण यह नहीं है। वे ऐसा समझते हैं कि जिस बात को अपने बड़ों से चोरी रखा जाय, उसको करने वाला स्वयं अपनी आत्मा में निषिद्ध मानता है। वह उस निषिद्ध कर्म को करने से आत्मा का हनन करता है।"

"यदि हम अपने विवाह के विषय में पहले उनको बता देते तो क्या वे हमें इसकी स्वीकृति दे देते?"

"अभी भी यदि उन्होंने स्वीकृति नहीं दी तो क्या विवाह रुक गया है? तुम दोनों को स्वीकृति की आवश्यकता नहीं थी। तुम दोनों सज्ञान हो। हाँ, वे अपनी सम्मति देते। उस सम्मति में अपनी युक्ति और प्रमाण देते। कदाचित् तुमको देख और तुम्हारे व्यवहार से वे प्रसन्न हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते और अपने विचार बदलकर अपनी आपत्ति को वापस ले लेते। इसपर भी चाहे वे इस विवाह को पसन्द करते अथवा न करते, वे तुम दोनों को आशीर्वाद अवश्य देते।"

"आपने कल जो लॉकेट मेरे गले में डाला है, उसके विषय में उनको बताया था ?"

"हाँ, कल रात मैंने स्वयं उनको बताया था कि गौरी का विवाह हो गया है। अब वह यहाँ रहने नहीं आयेगा। उनके पूछने पर मैंने बताया था कि मैं तुम दोनों को आशीर्वाद देने के लिए आई थी और तुमको मंगलसूत्र पहना गई थी।"

"और उन्होंने इस पर आपत्ति नहीं की ?"

"भला कौन बुद्धिशील व्यक्ति है, जो किसी माँ को अपने बच्चे के लिए शुभ-कामना करने से मना करेगा ?"

"चाहे वह बच्चा नालायक ही हो ?"

"बेटा ! माँ के लिए लायक-नालायक, छोटा-बड़ा, धनी-निर्धन, काला-गोरा सब पुत्र ही होते हैं। माँ की वात्सल्यता के प्रवाह को कोई नहीं रोक सकता।"

: ४ :

साढ़े तीन बजे गौरीशंकर घर पर आया तो उसकी माँ वहाँ पर बैठी उसकी पत्नी से बातें कर रही थी। अपनी माँ को वहाँ उपस्थित देख वह विस्मय करने लगा। माँ को नमस्कार कर कहने लगा, "माँ ! तुमने यहाँ आकर ठीक नहीं किया।"

"क्यों ?"

"बाबा नाराज़ हो जायेंगे। और तुमसे भी वे उसी प्रकार सम्बन्ध तोड़ देंगे, जैसे उन्होंने चाचा शोभाराम से तोड़ लिया है।"

"नहीं बेटा ! वह सम्बन्ध उन्होंने नहीं तोड़ा। वह तो शोभाराम ने ही तोड़ा था। शोभाराम ने अपराध करने पर उसका निराकरण करने का यत्न नहीं किया। वह स्वयं उनसे कभी मिलने तक नहीं आया। तुम्हारे बाबा और तुम्हारे पिता भी अभी तक उसमें रुचि और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके प्रति स्नेह रखते हैं। लाहौर से आने-जाने वालों से वे उनके विषय में पूछते रहते हैं। उनके मुख से मैंने कभी उनके लिए अशुभ नहीं सुना।"

"माँ! चाय पियोगी?"

"नहीं, चाय तो बिना उनकी स्वीकृति के मैं नहीं पी सकती।"

"वाह! तुम आती हो, हमसे सहानुभूति भी रखती हो, हमारे लिए शुभकामना भी करती हो, परन्तु हमारे घर पर कुछ खाती नहीं हो।"

"इसका एक उपाय बताया तो था। परन्तु वह तुमको पसन्द ही नहीं आया।"

"क्या? मुझे स्मरण नहीं रहा।"

"स्मरण करो, तो तुम स्वयं ही समझ जाओगे।"

गौरीशंकर स्मरण करने का यत्न करने लगा। उसे चुप देख कर्मदेई उठ पड़ी और कहने लगी, "अब मेरे जाने का समय हो गया है। मैं चलती हूँ।"

इतना कहकर वह क्वार्टर से चली गई। माँ के जाने के बाद उसने अपनी पत्नी से पूछा, "कब आई थी माँ?"

"मैं आज काम नहीं कर सकी। डॉक्टर साहब डिक्टेशन दे रहे थे कि मेरी पेंसिल नोट-बुक पर 'हाइपर बोल' बनाने लगी और वे हँस पड़े। उन्होंने मुझे आज की छुट्टी दे दी। मैं एक बजे वहाँ से चली थी। यहाँ आई तो सो जाना चाहती थी। इस उद्देश्य से पलंग पर लेटी ही थी कि ये आ गईं और तब से अब तक हम बातें ही कर रही थीं। बहुत मज़ेदार औरत हैं वे।"

"अच्छा, क्या मज़ा आता है उनसे मिलकर?"

"मिलकर नहीं, उनकी बात सुनकर। वे मेरे घर पर सफाई इत्यादि करने के लिए आई थीं। मज़ेदार बात है यह कि मुझे अपवित्र समझकर वे मेरे हाथ की बनी चाय भी नहीं पीतीं और मुझ अपवित्र के घर का फ़र्श साफ़ करने चली आयी थीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ और तुम्हारे घर पर कोई बाल-बच्चा हो गया तो उसकी टट्टी-पेशाब भी साफ़ करने के लिए वे चली आया करेंगी। इसे वे सेवा-कार्य समझती हैं। सेवा जितनी छोटी हो, उतनी ही पवित्र करने वाली होती है।"

"किसको पवित्र करती है ?"

"सेवा करने वाले को।"

"और जिनकी सेवा की जाती है, उनका क्या होता है ?"

"उनको सुख और आराम मिलता है।"

"मैं समझती हूँ कि आपकी माँ के यहाँ आने का परिणाम यह होना चाहिए कि हम भी उनके घर पर 'रिटर्न विज़िट' किया करें।"

"मुझे डर है कि मेरी प्रिय पत्नी का कहीं अपमान न हो जाए।"

"परन्तु आपकी माता को तो मुझसे डर लगा नहीं।"

"हम उदार हैं। वे यह जानती हैं कि हम उदार विचार के आदमी हैं और हम विचारों के भेद से किसी का अनादर नहीं करते।"

सरोजिनी अपनी सास के कथन से गौरीशंकर के कथन की तुलना कर रही थी। वह स्वयं कितनी उदार है, इसके विषय में तो वह जानती नहीं थी। न ही उसको अपने पति के बाबा और दादी की अनुदारता के विषय में किसी प्रकार का प्रत्यक्ष ज्ञान था। हाँ, वह अपनी सास की उदारता का चिह्न अपने गले में अभी भी पहने हुए थी।

कर्मदेई घर गई तो दुनीचन्द ने पूछा, "आज फिर गौरीशंकर से मिलने के लिए गई थीं ?"

"जी।"

"क्या देख आई हो ?"

"मैं यह देखने के लिए गई थी कि लड़की घर का काम करना जानती है अथवा नहीं। काम करने की बात तो पता चली नहीं। हाँ, प्रबन्ध करने में उसको सुघड़ पाया है। सब कमरे साफ़-सुथरे थे। दरी, मेज, कुर्सी इत्यादि सब करीने से लगे थे। मैं गई तो वह मुझको बैठक-घर में लेकर बैठ गई। इस प्रकार बातें करती रही और मुझे अवसर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं मिला कि उसके वस्त्राभूषण देख सकूँ। दोनों दफ्तर गये थे। परन्तु दोनों ही समय से पहले घर आ गये थे। दोनों ने ही मुझसे चाय पीने का आग्रह किया।"

"लड़के को खुश और सुखी देखकर तुम्हारा पेट भर गया कि नहीं ?"

"पिताजी ! किस माँ को अपने लड़के के वर्तमान सुख देखने से तृप्ति हो सकती है ? मैं इतने से तो प्रसन्न हूँ कि गौरी ने सुन्दर, सुघड़ और बुद्धिशील बहू का चयन किया है।"

"अब कब जाओगी ?"

"जिस दिन उनसे मिलने को जी करेगा।"

दुनीचन्द हँस पड़ा। उसने कहा, "अभी तक तो ठीक है। परन्तु यह लड़की गौरी को अण्डे, मुर्गी, माँस, मछली खिलायेगी और उससे फिर उसकी बुद्धि भ्रष्ट होगी।"

"जब होगी तब विचार कर लेंगे। मैं समझती हूँ कि हमको उनके आने के लिए अपने घर का द्वार खुला रखना चाहिए।"

"द्वार खुले रहने को तो मैं बुरा नहीं समझता। मैं माँ-पुत्र में किसी प्रकार के सामीप्य के सम्बन्ध में भी आपत्ति नहीं करता। परन्तु इतना अवश्य है कि उसके चोरी-चोरी विवाह करने को मैं पसन्द नहीं करता। चोरी न करना मुख्य धर्मों में एक है। मेरे विचार में यदि दो बातों से बचा जाए—अनृतभाषण और चोरी, तो मनुष्य नव्वे प्रतिशत धर्मात्मा हो जाता है। और इनसे च्युत हो जाने पर वह इतना ही अधर्मानुयायी माना जाना चाहिए। प्रायः शेष सब धर्म के लक्षण इनके आश्रय चलते हैं अथवा इनके पीछे स्वयं होने लगते हैं।"

कर्मदेई अपने पुत्र से मिलने के लिए नहीं गई। एक बात वह समझ गई थी कि उसका श्वशुर बहू के हाथ का खाना पाप नहीं समझता। शौच को धर्म मानता है और उसको समझ आया कि सरोजिनी कम-से-कम देखने में तो शौच के नियमों का पालन करती प्रतीत होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु गौरीशंकर और सरोजिनी रविवार को ठीक भोजन के समय अपने माता-पिता से मिलने के लिए चले आये। माँ ने उनका स्वागत किया और उनको बैठक में बैठाया। घर के चारों प्राणी वहाँ आ बैठे। जब से भवानीशंकर मिस्र से लौटा था, उसने घर का भोजन बनाने अथवा अन्य काम करने के लिए एक नौकर रख लिया था। वह नौकर, जानकी, इस समय खाने की मेज, जो सेहन वाले बरामदे में लगी हुई थी, पर रसोई परस रहा था।

दुनीचन्द समझता था कि गौरीशंकर की बहू जान-बूझकर ऐसे समय आई है, जब वे भोजन कर रहे हों। वह उनकी परीक्षा लेना चाहती है। इस समय उसमें आर्यसमाजी शौच की मीमांसा जाग पड़ी। उसने अपने मन-ही-मन अपने व्यवहार का निश्चय कर लिया और बोला, "गौरीशंकर, तुमने तो हमें विवाह के अवसर पर उपस्थित होने का निमन्त्रण भी नहीं दिया। यह लुकाव-छिपाव किसलिए किया था? मैं समझता हूँ कि बहू इतनी असुन्दर नहीं, जिससे विवाह करना लज्जा की बात हो?"

"बाबा! मुझको डर लग रहा था कि कहीं आप विवाह से मना न कर दें। यह तो अपशकुन हो जाता।"

"तुम पढ़-लिखकर भी मूर्ख ही हो। यदि आपत्ति ही करनी होती तो हम कोर्ट में ही किसी-न-किसी प्रकार की आपत्ति कर देते। जब वहाँ नहीं की तो फिर अन्य कौन-सा स्थान था कि तुम्हारा हाथ पकड़ लेते?"

"वहाँ तो आप कर सकते नहीं थे। मेरी आयु इक्कीस वर्ष की हो चुकी है।"

"यही तो कह रहा हूँ कि तुम बालिग़ हो, इस कारण आपत्ति करने में कुछ सार नहीं रहा था। तुम यदि निमन्त्रण देते तो अधिक-से-अधिक यह होता कि हम साथ जाना अस्वीकार कर देते। इस पर भी तुमको कुछ राय देते।"

"तो वह आप अब भी दे सकते हैं। अब तो मैं आ गया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब तो अपने-आप कहकर सम्मति देनी हो जाएगी। इस पर भी कुछ तो अब भी कहा जा सकता है। पहले यह बताओ कि भोजन करके आए हो या यहाँ करने के विचार से आये हो?"

"भोजन करके तो हम नहीं आये। यदि आप लोगों को मेरे तथा अपनी बहू के साथ खाने में कोई आपत्ति न हो तो हम यहाँ भोजन करने की इच्छा कर सकते हैं।"

"कर्मदेई!" उसने अपनी बहू से कहा, "पाचक को कह दो कि छः व्यक्तियों के लिए भोजन परोसे।"

कर्मदेई कहने के लिए गई तो दुनीचन्द ने कहा, "क्यों बेटी सरोजिनी! प्रातः स्नान किया था कि नहीं?"

"किया था।"

"तब ठीक है।"

"क्यों, यदि स्नान न किया होता तो क्या होता?"

"तुमको स्नान करने के लिए कहता। मैं शुद्धता की महिमा मानता हूँ।"

कर्मदेई ने बताया कि खाना परोसा जा चुका है। सब भीतर जा, हाथ धो, कुल्ला कर खाने की मेज़ पर बैठ गये। दुनीचन्द ने गौरीशंकर और सरोजिनी को भी अपनी भाँति हाथ धोने के लिए कहा।

भोजनोपरान्त वे बैठक में आ बैठे। दुनीचन्द और सुधा तो अपने कमरे में विश्राम करने के लिए चले गये। भवानीशंकर और कर्मदेई बैठक में सरोजिनी और गौरी के पास बैठ गए।

सरोजिनी बोली, "माताजी! अब तो आप हमारे घर में चाय इत्यादि पिया करेंगी?"

"हाँ! यदि तुम स्वयं और सब शुद्धता के नियमों का पालन कर बनाओगी तो मुझे पीने में कोई आपत्ति न होगी।"

"परन्तु आपके यहाँ भी तो रसोइया ही बनाता है।"

"उसके स्नानादि और रसोई-घर में पहनने के कपड़ों की देखभाल में करती हूँ। तुम्हारे नौकर के विषय में न तो मैं जानती हूँ, न ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके किसी प्रकार के व्यवहार का प्रबन्ध कर सकती हूँ।"

: ५ :

गौरीशंकर के विवाह को अभी आठ मास ही हुए थे कि सरोजिनी प्रसव के लिए अस्पताल चली गई। यह सूचना जब कर्मदेई को मिली तो वह इसको शुभ नहीं मानती थी। उसका विचार था कि आठवें मास में बच्चे की उत्पत्ति प्रसूता तथा बच्चा दोनों के लिए भयावह होती है। इस कारण चिन्ताग्रस्त अस्पताल पहुँची। उसके वहाँ पहुँचने से पहले ही बच्चा हो चुका था। उसको बच्चे और उसकी माँ को सर्वथा स्वस्थ देख प्रसन्नता हुई।

परन्तु वह देख रही थी, बच्चा भली-भाँति पला हुआ था। लेडी डाक्टर ने भी बताया कि बच्चा सामान्य भार से अधिक भार का है। उसका भार ग्यारह पौंड था। इस सूचना से उसको विचार की सामग्री मिल गई। साथ ही बच्चे की रूपरेखा न तो माँ पर थी और न ही उसके पिता के परिवार के किसी व्यक्ति पर। रंग तो काफ़ी काला था और रूपरेखा भी विचित्र थी। कम-से-कम वह गौरीशंकर और सरोजिनी से बिलकुल भी नहीं मिलती थी।

कर्मदेई चार दिन तक सरोजिनी के पास अस्पताल में रही। चौथे दिन जब सरोजिनी को अस्पताल से अवकाश मिला तो उसने उसे उसके क्वार्टर पर पहुँचा दिया और जब वह वहाँ से चलने लगी तो गौरीशंकर ने कह दिया, "माँ! अभी कुछ दिन नित्य ही यहाँ आकर इसको देख जाया करना।"

"बेटा! इसकी सेवा के लिए कोई नर्स रख लो।"

"क्यों?"

"मैं आ नहीं सकूँगी।"

"क्यों, दिल्ली से कहीं बाहर जा रही हो क्या?"

"नहीं, यह बात नहीं है। मैं यह समझ नहीं सकी कि यह मेरा पोता है या किसी और का।"

गौरीशंकर [illegible] मुख देखता रह गया। उसने कहा, "माँ!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने उससे इस विषय में पूछा है, वह कहती है कि मेरा ही है।" उसने फिर आँखें नीची करके कहा, "माँ! बात यह है कि विवाह से पूर्व ही हम दोनों में परस्पर सम्बन्ध बन गया था।"

"यह तो तुम और तुम्हारी बहू जाने। गर्भ-स्थापना की तिथि विवाह समय से पूर्व होने के साथ-साथ बच्चे की रूपरेखा भी मन में भारी सन्देह उत्पन्न कर रही है। इस कारण मुझे इसपर कुछ विचार करने दो।"

सरोजिनी आशा करती थी कि उसकी सास अब पहले से अधिक उसके घर आया करेगी। परन्तु वह तो उस दिन के पश्चात् उस सड़क पर भी नहीं गई। जब वह एक सप्ताह तक नहीं आई तो सरोजिनी ने अपने पति से पूछा, "माताजी आई नहीं। जाकर पता करिए, उनका स्वास्थ्य तो ठीक है?"

"सरोजिनी! मेरी आयु इस समय बाईस वर्ष की है और पिछले बीस वर्ष में मैंने उनको एक बार भी अस्वस्थ नहीं देखा। उन्होंने कभी सिर-दर्द की बात भी नहीं कही। मुझे विश्वास है कि वे शरीर से स्वस्थ हैं, मन की बात का कुछ सन्देह है।"

"क्या सन्देह है?"

"वे इस बच्चे को मेरा बच्चा नहीं मानतीं।"

"परन्तु आप तो सन्देह नहीं करते?"

"मैं विश्वास भी नहीं कर सकता। उसकी रूपरेखा किससे मिलती है, मैं नहीं बता सकता। इस पर भी सरोजिनी! मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, तुम्हारे बच्चे से नहीं। इस कारण मैं चुप हूँ।

"परन्तु माँ तो अपनी सन्तान से स्नेह को इतना महत्त्व देती है कि वे तुमको अब्राह्मण जानती हुई भी अपने पुत्र की पत्नी जान, मिलने आ गई थीं। जब उनको यह पता चला कि तुम न केवल उनके पुत्र की ही पत्नी नहीं, अपितु उनके पोते को जन्म देने वाली भी नहीं हो तो वे तुमसे स्नेह बनाये नहीं रख सकीं।"

"फिर क्या होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ नहीं होगा। तुमको वही समझना होगा, जो तुम विवाह से पूर्व समझ रही थीं कि मेरे माता-पिता मुझसे लड़े हुए हैं।"

सरोजिनी मन मसोसकर रह गई। इस पर भी उसने स्वीकार नहीं किया कि वह सन्तान उसके वास्तविक पति की नहीं है। वह यही कहती रही कि वह गौरीशंकर का ही पुत्र है किसी और का हो ही नहीं सकता।

गौरीशंकर ने भी यही समझा कि जो हो गया, वह हो गया। अब बीती बात के लिए झगड़ा करना तो मूर्खता है। वह देख रहा था कि अब तो सरोजिनी सर्वप्रकारेण निष्ठावान् बनी हुई है। इससे वह सन्तोष कर चुप कर रहा।

इन दिनों स्वराज्य की अन्तरिम सरकार बन चुकी थी और देश में भारी हलचल थी। अंग्रेज़ी सरकार ने पाकिस्तान बनाने की घोषणा कर दी थी। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल का कार्य बढ़ गया था। भवानीशंकर को अवकाश नहीं था कि वह घर की समस्याओं पर विचार करे।

कर्मदेई ने दुनीचन्द को बच्चे के विषय में बताया और साथ ही गौरीशंकर के कथन को सुनाया, तो उसने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि अब तुम्हारा वहाँ जाना निष्प्रयोजन होगा।"

"मैं अनिश्चित मन होने से कुछ कह नहीं सकी। जब तक मन निश्चय न कर ले, तब तक मैंने जाना स्थगित रखा हुआ है।"

"क्या निश्चय करना चाहती हो?"

"यही कि सरोजिनी का पुत्र गौरीशंकर का ही पुत्र है कि नहीं।"

"इस पर मगज़पच्ची करने की क्या आवश्यकता है। यह भी तो हो सकता था कि सरोजिनी विवाह से पहले विधवा होती और यह बच्चा विवाह से पहले पैदा हो चुका होता, तो फिर क्या करतीं? विवाह होने के बाद तो तुम अपने पुत्र से उसका सम्बन्ध होने के कारण अपना सम्बन्ध बनाती रही हो?

"अब अन्तर यह नहीं है कि बच्चा गौरीशंकर का है अथवा नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर तो यह है कि पत्नी ने अनृत भाषण किया है। साथ ही उसके पति ने उसके अनृत भाषण को छिपाने का यत्न किया है।

"देखो कर्मदेई! विवाह के समय गौरीशंकर जानता नहीं था कि उसकी पत्नी गर्भवती है। उसको तो बच्चा होते समय भी यह ज्ञान नहीं था। वह तो यही समझ रहा था कि बच्चा आठवें मास में हो रहा है। इससे वह पीत-मुख भागा-भागा तुम्हारे पास आया था।

"तुमने उसकी जो बात बताई है, उससे तो यही प्रकट होता है कि यह मन से पत्नी पर सन्देह करता है। इस पर भी उसने माँ के सामने झूठ बोलकर पत्नी की रक्षा करने का यत्न किया है।

"अनृत भाषण महापाप है और मैं तो तुमको यही राय दूंगा कि उस पापी के घर जाने से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा।"

"तो मेरी उनके प्रति तटस्थता उनके अनृत भाषण के लिए होनी चाहिए?"

"हाँ, बच्चा होना, न होना तो इस समय गौण प्रश्न है। मुख्य बात यह है कि या तो पत्नी के सम्मोहन के कारण अथवा किसी अन्य कारण से वह झूठ बोलने लगा है और ऐसे व्यक्ति से सम्बन्ध रखना ठीक नहीं।"

कर्मदेवी के मन में समस्या स्पष्ट हो गई और सुलझ भी गई। उसने अपने मन से गौरीशंकर को निकाल दिया।

दुनीचन्द का अनुमान ठीक था कि पत्नी के सम्मोहन के अतिरिक्त अन्य कारण भी थे, जिनसे प्रभावित होकर गौरीशंकर अपनी पत्नी के झूठ को छिपाने में सहायक हो रहा था। इस थोड़े से काल में वह अण्डर-सेक्रेटरी बन गया था।

: ६ :

शोभाराम का काम चला अथवा नहीं चला, कहा नहीं जा सकता था। निर्वाह हो जाता था। इस पर भी कोई समय ऐसा नहीं आया जब कि बैंक में दो-चार सौ से अधिक रुपये जमा रहे हों। मकान का भाड़ा आता था तो उससे विद्यालय का खर्च निकल जाता था। कमाई भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती थी। रामदेई कुछ धनीमानी लोगों की लड़कियों को संगीत सिखाया करती थी। शोभाराम भी इसी प्रकार कुछ लड़कों को विद्यालय के बाहर सिखाता था। विद्यालय की ख्याति भी बढ़ रही थी। परन्तु ज्यों-ज्यों आय में उन्नति होती जाती थी, उसी प्रकार खर्च भी बढ़ता जाता था।

देश के अन्य भागों की अपेक्षा पंजाब में जीवन-स्तर ऊँचा करने की लालसा बहुत बढ़ गई थी। यहाँ के लोगों में खाना-पीना, वस्त्रा-भूषण, मकान का फरनीचर आदि-आदि सब में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही थी।

देवर-भाभी दोनों दिन-भर काम करते थे और पाँच-छः सौ रुपया मासिक अर्जन भी कर लेते थे। परन्तु महीने के बाद कभी तीस-चालीस रुपये बच जाते थे तो कभी बैंक में से निकालकर व्यय करने पड़ते थे।

रामदेई बाहर काम करती थी और उसकी बहन शान्ति घर का प्रबन्ध करती थी। वह प्रति तीसरे वर्ष एक नये जीव की सृष्टि भी कर देती थी। सन् १९४९ में ये लोग हताश हो गये। जीवन में कोल्हू के बैल की भाँति केवल एक ही धुरी के चारों ओर चक्कर काटने को निरर्थक मानने लगे थे। सबसे अधिक निराशा रामदेई को थी।

एक दिन वह एक लड़की को संगीत सिखाकर घर लौटी तो हताश हो घर आकर धम्म से बैठक के सोफ़े पर बैठ विचारों में लीन खो-सी गई। शान्ति अपने सबसे छोटे बच्चे दाताराम को कपड़े पहना रही थी कि बहन को इस प्रकार विचार-मग्न बैठी देख, उसके समीप आ पूछने लगी, "दीदी! क्या बात है, आज तुम निस्तेज क्यों हो रही हो?"

"सन् १९२८ में तुम्हारे जीजाजी से विवाह कर मैं यह समझती थी कि मैंने जीवन की एक मंज़िल पूरी कर ली है। और अब आगे सुख और शान्ति का जीवन आरम्भ हो रहा है। परन्तु जो हुआ, वह तुम जानती ही हो। जीवन सीधी रेखा में न चलकर चक्राकार गति में ही चल रहा है। आज मैं अनुभव करती हूँ कि मैं फिर वहीं पहुँच गई हूँ, जहाँ अपने गाँव से भागकर आने के समय सियालकोट में पहुँची थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति उस समय सात वर्ष की बालिका मात्र थी और यह नहीं जानती थी कि क्या-क्या उनपर बीती थी। वह केवल यह समझ पाई थी कि गाँव में वे बहुत ही गरीब हालत में थे और सियालकोट में आते ही उनको बढ़िया वस्त्र और खाना मिलने लगा था।

"उस समय क्या हुआ था दीदी !" उसने पूछा।

"हुआ यह था कि अत्यन्त निर्धनता से एकदम सम्पन्नता प्रतीत हुई थी और उस समय उसके लिए मुझे कुछ मूल्य चुकाना पड़ा था। यही बात घूम-घुमाकर आज फिर हुई है। मैं यह विचार किया करती थी कि अब जीवन फिर सीधी रेखा में चलने लगा है और वह उस दिशा को नहीं जायेगा, जिस दिशा को तुम्हारे जीजाजी से विवाह के पूर्व चलता था।

"उनके देहान्त के पश्चात् इसने एक सामान्य दिशा स्वीकार की हुई थी। महीना-भर कमाते रहते हैं और व्यय करते रहते हैं। परन्तु महीने के अन्त में वहीं खड़े पाते हैं जहाँ मास के आरम्भ में थे। हम उड़ रहे हैं भूमि से ऊपर, परन्तु बहुत ऊँचे नहीं। सदा किसी पेड़ से टकराकर चकनाचूर हो जाने का भय बना रहता है और लाख यत्न करने पर भी पेड़ों की ऊँचाई से ऊपर नहीं जा पाते।

"आज फिर झटका लगा है। एक बार तो कुछ ऊपर उठता हुआ-सा अनुभव हुआ है और पेड़ कुछ नीचे होते दिखाई दिये हैं। परन्तु फिर वही कीमत देनी पड़ी है, जो सियालकोट में दी थी।"

शान्ति अब तक इस कथन का अर्थ समझ गई थी। उसने गम्भीर हो पूछ लिया, "दीदी, फिर पेशा करने लगी हो ?"

"पेशा ! वह तो मैं न तब करती थी और न अब किया है। हाँ, जीवन में वह सन्तुलन नहीं रहा, जो पिछले आठ-नौ वर्ष में रहा था। तब भी मैं रक्कासा थी और उसके साथ एक सहयोगी जीवन था। उससे रक्कासा के जीवन में सहायता मिलती थी। अब भी मैं संगीत-विद्याविशारदा हूँ, और इसके साथ दूसरा जीवन आरम्भ हो रहा प्रतीत होता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दीदी ! यदि पश्चात्ताप होता हो तो इस जीवन की ओर मत बढ़ो। यदि आवश्यकता समझो तो लाहौर छोड़ा भी जा सकता है।"

"वह तो छोड़ ही रही हूँ। बम्बई की एक फिल्म कम्पनी में संगीत भरने का काम मिल रहा है।"

"कब जाने के लिए कहा गया है ?"

"अभी तो दो-चार दिन में दो महीने के लिए ही जाना होगा। इसके लिए दस हज़ार का ठेका हुआ है।"

"जब जा ही रही हो तो इसका हल्ला करने की क्या ज़रूरत है ?"

"मेरा मन भीतर-ही-भीतर बैठता जाता है। इस पर भी इस पथ पर चलने के समय तो यह सुहावना प्रतीत हो रहा है। अब जब मूल्य चुका आई हूँ, तो भय लगने लगा है।"

"किस बात का भय लगने लगा है ?"

"यही कि क्या यह ठीक हुआ है ? यदि ठीक नहीं हुआ है तो इसका परिणाम क्या होगा ?"

"दीदी ! मेरे विचार से तुम जाकर आराम करो। और हो सके तो एक-आध घण्टा सो जाओ। इससे मन स्थिर हो जाएगा।"

शोभाराम के भी घर आने का समय था। मन की ऐसी स्थिति में रामदेई उसके सम्मुख होने में भी संकोच करती थी। इससे अपनी बहन की सम्मति को स्वीकार कर वह अपने कमरे में जा बिस्तर में घुसकर लेट गई।

शोभाराम आया तो रामदेई को न देख पूछने लगा, "दीदी नहीं आई क्या ?"

"आ गई है। सिर-दर्द बता रही थी। मैंने आराम करने के लिए कह दिया है।"

: ७ :

अगले दिन रामदेई जागी तो उसका चित्त शान्त था। अपने गाँव में विधवा माँ को छोड़कर सियालकोट आने पर भी उसको एक बार तो दुःख हुआ था, परन्तु जीवन में सुख की लालसा ने मन की टीस को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिटा दिया था। खेल-कूद, खाने-पीने और सुखी जीवन का दौर आरम्भ हुआ तो अपने बाल्यकाल को भूल गयी थी।

जब दयाराम ने विवाह का प्रस्ताव किया था तो वह मान गई थी। इस प्रस्ताव में सुख-सुविधा तो सब थी, साथ ही मानयुक्त जीवन था। वह मान गई और दो-तीन वर्ष सुख के व्यतीत हुए। जीवन ने फिर पलटा खाया और वह विधवा हो गई। अब पुनः जीवन की कठिनाई आरम्भ हुई। यद्यपि यह कठिनाई उतनी गम्भीर नहीं थी, जितनी गाँव में थी। इस पर भी इसका अनुभव पहले से अधिक था। तब वह अमीरी के जीवन का सुख जानती नहीं थी। अब तो आकाश में उड़ती-उड़ती भूमि पर चलना पड़ रहा था।

अब फिर किसी ने पकड़कर उसको आकाश में चढ़ा दिया था। इस बार भी उसके मन को झटका लगा था, परन्तु जीवन-स्तर की ऊँचाई के सुख-स्वप्नों ने उसके चित्त को शान्त कर दिया। वह अपने को जीवन-रस पाने की अधिकारी मानती थी। रस कहाँ से आता है अथवा कैसे आता है, इसके जानने की लालसा ही नहीं रही थी।

जीवन चलने लगा। रामदेई ने स्वयं को जीवन-प्रवाह में डाल दिया। वह बम्बई गयी और एक कॉन्ट्रैक्ट समाप्त होते-होते दूसरा आरम्भ हो गया। इस समय रामदेई ने शोभाराम को लिखा कि वह भी वहाँ चला आये। इससे जीवन सुलभ हो जायेगा।

शोभाराम ने अभी लाहौर वाली कोठी छोड़नी उचित नहीं समझी। वह शान्ति तथा बच्चों को लाहौर में छोड़ बम्बई जा पहुँचा। वहाँ उसको भी संगीत-निर्देशक का काम मिल गया। इस पर भी रामदेई और शोभाराम लाहौर आते रहते थे।

ये युद्ध के दिन थे। इंग्लैण्ड और अमेरिका से धन आ रहा था। सरकार भी धड़ाधड़ नोट छाप युद्ध-कार्य चला रही थी। परिणाम-स्वरूप लोगों के पास रुपया छलकने लगा था। सब प्रकार की वस्तुओं का दाम बढ़ रहा था।

सरकार महँगाई को रोकने के लिए नियन्त्रण लगाने लगी और लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियन्त्रण से बच निकलने के लिए नये-नये मार्ग निकालने लगे। खाद्यान्न, मकान और वस्त्र की तो चोरबाज़ारी होने लगी, साथ ही सुख-साधनों में भी धांधली मचने लगी। सिनेमा-व्यवसाय में भी यही बात होने लगी। कलाकारों का पारिश्रमिक बढ़ने लगा, तो उनके खर्चे भी बढ़ने लगे। सरकार ने कर में वृद्धि की और कलाकार पारिश्रमिक मेज़ के नीचे से लेने लगे। इससे तो उनकी भी व्यय-राशि अनियमित कामों में व्यय होने लगी। चोरी में लिया धन चोरों में ही व्यय हो सकता था। समाज में चोरी-चोरी होने वाले काम वृद्धि पाने लगे। समाज पतनोन्मुख हो गया।

शोभाराम और रामदेई ने अपने चोरी के धन को हज़म करने के लिए रत्नादिक सामग्री खरीदनी आरम्भ कर दी। भूषण, रत्न, स्वर्ण वे बम्बई में खरीदते थे और लाहौर में शान्ति के पास रख जाते थे। वह प्राय: लाहौर के बैंकों के 'लॉकरों' में रख दिया जाता था।

शान्ति, बहन के अपने मुख से, उस मूल्य की बात सुन, जो उसे अपने व्यवसाय में उन्नति के पथ पर चलने के लिए देना पड़ रहा था, बम्बई जाने के लिए मन को तैयार नहीं कर पायी थी। वह अपने बच्चों के साथ लाहौर ही रहना ठीक समझ रही थी। उसका सबसे बड़ा लड़का मायाराम तो मैट्रिक में भरती हो गया था। उससे बड़ी लड़की मल्लिका कॉलेज में पढ़ती थी और छोटा लड़का दाताराम आठवीं श्रेणी में पढ़ता था। तीनों बच्चे सज्ञान हो रहे थे और शान्ति उनको बहन के रहन-सहन तथा व्यवसाय के दुष्प्रभाव से बचाने के लिए बम्बई जाने में संकोच करती थी। इस पर भी शोभाराम महीने में एक चक्कर तो लाहौर का लगाता ही था। कभी रामदेई भी आती थी। रामदेई ने बम्बई में अपना व्यवसायी नाम राधा रखा हुआ था।

शोभाराम रामदेई के चलन को देखता था और पसन्द नहीं करता था। वह रामदेई के समाज से पृथक् रह अपने संगीत का अभ्यास करता रहता था। इस पर भी रामदेई के जीवन से उसका जीवन-सम्बन्ध रहता था। जब रामदेई किसी चित्र में अपने मीठे स्वर में संगीत भरती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी तो उसी चित्र में शोभाराम संगीत-निर्देशक का काम पा जाता था। इस प्रकार दोनों का कार्य चलता था।

शोभाराम तो फिर भी सम्भल-सम्भलकर पग धरता था। वह यत्न करता था कि रामदेई से पृथक् रहकर अपना काम ढूँढ़े। वह उन पार्टियों और जलसों में जाने से बचता रहता था, जिनमें रामदेई जाती थी। वह यत्न करता रहता था कि ऐसे अवसरों पर किसी प्रकार का बहाना बना दे। वह घर बैठ, सादा भोजन कर अपनी कला-साधना में लीन रहता था।

रामदेई प्राय: रात के बारह बजे घर आया करती थी। उस समय वह नशे में चूर होती थी और लज्जा से शोभाराम से बात किये बिना अपने विस्तर में घुस सो जाती। ऐसा उन दिनों में ही हो सकता था, जब वे किसी फिल्म के निर्माण में संलग्न नहीं होते थे। चित्र-निर्माण के दिनों में तो वे मन, वचन, कर्म से उसमें लग जाया करते थे।

: ८ :

एक बार रामदेई बॉम्बे पिक्चर्ज़ में गाने दे रही थी और शोभाराम उसमें संगीत-निर्देशक का कार्य कर रहा था। शोभाराम को मद्रास की एक फिल्म कम्पनी वालों ने पूछ लिया कि वह उनकी कम्पनी में काम करेगा क्या? वे एक हिन्दी चित्र बना रहे थे। उनकी दृष्टि में शोभाराम जँच गया था।

कम्पनी का संचालक सदाशिव अय्यर और चित्र-निर्देशक कान्तिकुमार बोस बम्बई आये और शोभाराम के घर जा पहुँचे। उस समय रामदेई घर पर नहीं थी।

शोभाराम के पास पहले इनका पत्र भी आया था, किन्तु अनिश्चित मन उसने उसका उत्तर नहीं दिया था। अब उनको आया देख, उन्हें ड्राइंग-रूम में बैठा पूछने लगा, "फ़रमाइये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"आपने हमारे पत्र का उत्तर नहीं दिया। इस कारण हमको स्वयं बातचीत करने के लिए आना पड़ा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह ! तो आप मिस्टर अय्यर हैं। मैं समझा नहीं था। बात यह है कि मैं आजकल 'बॉम्बे पिक्चर्ज़' के एक चित्र में काम कर रहा हूँ। मेरा स्वभाव है कि जब एक कार्य में संलग्न होता हूँ, तो दूसरे कार्य में ध्यान नहीं दे सकता। इस कारण मैं आपके पत्र का उत्तर नहीं दे सका।"

"तब तो हमारा आना अकारथ नहीं हुआ।"

"यह मैं कैसे कह सकता हूँ ? आप अपनी पिक्चर का संक्षिप्त विवरण दे जाइये। मैं उसको पढ़ने के बाद ही कुछ उत्तर दे सकता हूँ। साथ ही यह कार्य भी दो मास बाद हो सकता है। इन दिनों तो मैं अपना ध्यान किसी अन्य दिशा में लगा नहीं सकता।"

"यह तो बहुत कठिन बात है। हम आपकी सेवाओं की तो प्रतीक्षा कर सकते हैं, परन्तु स्वीकृति अथवा अस्वीकृति के लिए प्रतीक्षा करवाना हमारे साथ अन्याय हो जायेगा। आप स्वीकृति दे दीजिए, कॉन्ट्रैक्ट कर लिया जाय और यहाँ का कार्य पूर्ण कर फिर आप अपना ध्यान हमारे कार्य पर केन्द्रित कीजिए।"

"परन्तु उस समय यदि मुझे आपका चित्र पसन्द न आया तो फिर क्या होगा ?"

मिस्टर बोस ने रास्ता निकालते हुए कहा, "तब यह होगा कि आप के सुझाव के अनुसार हम उस पिक्चर में परिवर्तन कर लेंगे।"

"यह सम्भव होगा क्या ?"

"हाँ, उसमें तीन डायरेक्टर होंगे। मैं जनरल डायरेक्टर हूँ। आप संगीत-निर्देशक होंगे और तीसरे होंगे वार्त्ता-नियोजक। हम तीनों मिलकर पिक्चर में सुधार कर सकेंगे।

"कहानी बम्बई के दर्शनजी लिख रहे हैं। हमारे सीनरी के डायरेक्टर उनको सहयोग देंगे। उस कहानी में भी हम तीनों संशोधन कर सकेंगे।"

शोभाराम ने समझा कि इस कार्य में वह अधिक स्वतन्त्र रहेगा और उसे अपनी योग्यता प्रकट करने का भी अवसर सुलभ होगा। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉन्ट्रैक्ट करने के लिए तैयार हो गया।

इस समय उसने पूछ लिया, "राधादेवी मेरी दीदी है। हम दोनों प्रायः एक साथ ही पिक्चर में कार्य किया करते हैं। आप उसे भी कार्य देंगे क्या ?"

"यह हम जानते हैं। परन्तु हमने गाने वालियों का अलग प्रबन्ध किया हुआ है। और साथ ही उनकी आवाज़ कुछ फट-सी नहीं गई क्या ?"

"आपको यह किसने बताया है ?"

"किसी के बताने की आवश्यकता नहीं। उनके पिछले चित्र में दो बार उनकी आवाज़ उखड़ी हुई-सी प्रतीत होती है। जब चित्र में ऐसा है, तो वैसे कितनी बार उखड़ी होगी, यह अनुमान लगाया जा सकता है।"

शोभाराम स्वयं भी यह अनुभव कर रहा था। वह इसका कारण भी जानता था। यह वासनामय जीवन का परिणाम ही था। उसने उनके साथ अपना कॉन्ट्रैक्ट कर लिया।

परन्तु जब रामदेई को इस बात का ज्ञान हुआ कि शोभाराम ने बिना उसके मद्रास की कम्पनी से कॉन्ट्रैक्ट कर लिया है तो उसने पूछा, "भैया! क्या हम अब पृथक्-पृथक् कार्य करेंगे ?"

"दीदी ! कम्पनी के मालिकों ने तुम्हारे लिए काम नहीं दिया।"

"तुमने उनको बताया था कि हम एक-साथ ही काम करते हैं।"

"हाँ, परन्तु गाने वालियों का निर्णय उन्होंने इससे पहले ही कर लिया था।"

"तो तुमने काम लेने से इन्कार क्यों नहीं कर दिया ?"

"तो तुम समझती हो कि मुझे यह कार्य स्वीकार नहीं करना चाहिए था ?"

"मैंने कई बार तुमको साथ में काम न मिलने पर कार्य करने से इन्कार कर दिया है।"

"सत्य ? दीदी ! मुझे इस बात का ज्ञान नहीं था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मैं झूठ बोलती हूँ क्या ?"

"नहीं, मैंने ऐसा नहीं कहा । मैं यह काम अब नहीं करूँगा ।"

"हाँ, उनको लिख दो कि यदि काम करेंगे, तो दोनों साथ ही करेंगे।"

अगले दिन ही उसने वकील को कॉन्ट्रैक्ट दिखाया और कम्पनी वालों को लिख दिया कि अस्वस्थता के कारण वह उनके चित्र में संगीत-निर्देशन का कार्य नहीं कर सकेगा ।

उसका पत्र पाकर डायरेक्टर और संचालक फिर उससे मिलने के लिए आये। परन्तु शोभाराम ने काम करने से बिल्कुल इनकार कर दिया । मिस्टर बोस ने कहा, "मिस्टर शर्मा ! हम राधा को भी कार्य देने के लिए तैयार हैं । अब आप अस्वीकार मत कीजिए ।"

परन्तु शोभाराम तो इस कार्य को ही छोड़ने का निश्चय कर चुका था । अतः वह नहीं माना ।

दो दिन पश्चात् रामदेई ने शोभाराम से कहा, "भैया ! अब तो वे मुझको भी काम देने के लिए तैयार हैं, अब तुम स्वीकार कर लो ।"

"मैंने निश्चय किया है कि मैं अब किसी भी फ़िल्म कम्पनी में गाने-बजाने का काम नहीं करूँगा ।"

"क्यों ?"

"यह पिक्चर समाप्त होते ही काम छोड़कर मैं लाहौर चला जाऊँगा ।"

"और वहाँ क्या करोगे ?"

"कुछ नहीं । मैं समझता हूँ कि यहाँ का जलवायु मेरे अनुकूल नहीं बैठ रहा ।"

"तो मैं भी और काम नहीं करूँगी ।"

"मेरे स्वास्थ्य से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ?"

"तुम जाओगे तो मैं यहाँ अकेली नहीं रह सकती ।"

"ठीक है, अब हमने पर्याप्त धन एकत्रित कर लिया है ।"

रामदेई इस सुझाव पर विचार करने लगी । वह अपने मन से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछ रही थी कि क्या उसने काफी धनोपार्जन कर लिया है। बुद्धि से विचार करने पर वह समझती थी कि उसने कर लिया है। उसका मन कहता था कि नहीं। मन के लिए कोई सीमा नहीं थी। बुद्धि और मन की दुविधा में फँसी हुई कुछ उत्तर न दे सकी। उसे चुप देख शोभाराम ने कह दिया, "दीदी ! इस पिक्चर का कार्य अगले सप्ताह समाप्त होता प्रतीत होता है। मैं यहाँ का प्रबन्ध समाप्त कर रहा हूँ। मेरा अभिप्राय मकान, फ़र्नीचर और सब लेन-देन से है।"

रामदेई अभी मुख ही देख रही थी। उसे एक युक्ति सूझी। वह उठी और मिस्टर कान्तिकुमार को फोन करने लगी। शोभाराम को यह जानने की लालसा नहीं थी कि वह किसको फोन कर रही है और उससे क्या कह रही है। इससे वह भी उठा और कपड़े पहनकर समुद्र-तट की सैर करने के लिए चल दिया।

तीन घण्टे के भ्रमण के बाद खाना खाने के लिए वह ताज में चला गया और वहाँ से सीधा फ़िलम-स्टूडियों में जा पहुँचा। रामदेई पहले ही वहाँ पहुँची हुई थी। शोभाराम को आया देख वह उसके समीप आकर पूछने लगी, "भैया ! कहाँ गये थे ?"

"घूमने चला गया था।"

"कान्तिकुमार बोस मिलने के लिए आया हुआ था।"

"वह आया था या तुमने उसको बुलाया था ?" यह कहता हुआ वह हँस पड़ा।

"यह तो ठीक है कि मैंने ही उसको बुलाया था। अब प्रातःकाल अल्पाहार के समय आयेगा।"

"किसलिए बुलाया था ?"

"हम दोनों में सुलह कराने के लिए।"

"तो क्या हम लड़े हुए हैं ? दीदी ! तुम मेरे लिए बड़ी बहन के समान हो। तुमसे लड़ाई तो हो ही नहीं सकती।"

"समझती तो मैं भी ऐसा ही हूँ। परन्तु तुम मेरी छोटी-सी बात भी नहीं मान रहे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुमने कहा था कि हमको इकट्ठे काम करना चाहिए और यदि ऐसा न हो सके तो काम ही नहीं करना चाहिए।

"मैं यह अनुभव करने लगा हूँ कि तुम्हारा यह गाने का काम अब अधिक काल तक चलने वाला नहीं है। तुम्हारे लिए यही अच्छा है कि इस समय जब तुम्हारी ख्याति बनी हुई है, इस कार्य को छोड़ दो। तुम छोड़ोगी तो मुझे भी छोड़ना होगा ही। इसीलिए मैंने काम छोड़ने का निश्चय कर लिया है।

"तुमने कहा था कि तुम मेरे बिना कार्य करने से इनकार कर चुकी हो। इससे मेरे छोड़ने से भी तुम छोड़ोगी। बताओ तुम्हारी कही बात मान रहा हूँ कि नहीं ?"

"नहीं, मेरा चित्त अभी काम छोड़ने के लिए नहीं करता। परन्तु तुम यह किस प्रकार कहते हो कि मुझे यह काम छोड़ना ही पड़ेगा ?"

"तुम्हारे स्वर में कम्पन्न आरम्भ हो गया है। तुम्हारा उच्चारण अशुद्ध होता जाता है। कदाचित् मद्य-सेवन से जिह्वा मोटी पड़ती जा रही है और तुम 'र' अक्षर का उच्चारण अशुद्ध करने लगी हो। यह गिरावट के पूर्व-लक्षण हैं।"

इस समय राधा को सैट पर बुला लिया गया और जब पिक्चर सामने दिखाई जा रही थी, उसको वैसे ही हाव-भाव के साथ गाने को गीत दिया गया। उसने गाया। उसके गीत का रिकार्ड छः बार करना पड़ा और उस दिन का काम समाप्त हुआ।

रामदेई और शोभाराम जब स्टूडियो की गाड़ी से घर जा रहे थे तो रास्ते में रामदेई ने पूछा, "भैया! आज भी मेरे उच्चारण में अशुद्धि थी ?"

"नहीं, परन्तु तुम्हें छः बार किसलिए गाने को कहा गया था ?"

"यह तो डायरेक्टर की चतुराई है। इन छः में से जो सबसे ठीक रहेगा, उसे ही वह फ़िल्म के साथ संयुक्त कर देगा।"

"डायरेक्टर तो मैं हूँ। मैंने जान-बूझकर तुम्हें कष्ट देने के लिए नहीं गवाया। तुम्हारे स्वर में कम्पन्न आने लगा है और वह आज भी था। एक बात और, कई बार गवाने पर भी स्वर में वह मिठास नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई, जो चार वर्ष पूर्व थी।"

इससे रामदेई को क्रोध आ गया। उसने कहा, "भैया! लड़ना है तो सीधी तरह लड़ लो। व्यर्थ की निन्दा मत करो।"

"दीदी! मैं लड़ नहीं रहा। यह दोष तो मैं एक वर्ष से अधिक समय से देख रहा हूँ, परन्तु उस दिन कान्तिकुमार ने मुझे इसके विषय में बताया तो मैं सतर्क हो गया। अब तो मुझे वह और भी स्पष्ट दिखाई देने लगा है।"

रामदेई बोली नहीं। घर पहुँच उसने नियमपूर्वक कॉफी बनाई और स्वयं पी ली। शोभाराम से उसने पूछा भी नहीं। वह सो गई। शोभाराम भी पढ़ता-पढ़ता सो गया।

अगले दिन कान्तिकुमार आया तो रामदेई घर पर नहीं थी। उसके पूछने पर शोभाराम ने बताया, "पता नहीं कहाँ गई है, कुछ बताकर नहीं गई। वास्तव में वह मेरे उठने से पूर्व ही चली गई थी।"

"उन्होंने ही तो मुझे बुलाया था।"

"कुछ काम भी बताया था?"

"हाँ, वे कह रही थीं कि यदि मैं उनके सामने आपसे आग्रह करूँगा तो आप मेरे चित्र का संगीत-निर्देशन स्वीकार कर लेंगे।"

"मैं अब अपना काम न कर सकने का नोटिस वापस लेने के लिए तैयार हूँ।"

"बहुत खूब! धन्यवाद! मेरा बम्बई आना सार्थक हो गया है। आज सायं आप हमारे घर पर चाय पर आ जाइये। वहाँ हम, वे सब लोग एकत्रित होंगे, जो अब तक पिक्चर में काम करना स्वीकार कर चुके हैं।"

"आऊँगा। अय्यरजी भी होंगे?"

"हाँ, वास्तव में उनके सुभीते के लिए ही तो यह कार्यक्रम रखा गया है।"

"अच्छी बात है।"

"और देखिए, राधादेवी को भी ले आइए, उनसे वहीं कॉन्ट्रैक्ट कर लिया जायेगा।"

"मैं उनको न तो आपके यहाँ काम करने की प्रेरणा दूंगा और न ही काम करने से रोकूँगा। आप स्वयं उनसे निश्चय कर लीजिएगा। हाँ, आप उनको यह बता सकते हैं कि मैंने काम करना स्वीकार कर लिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

जब कार्य बम्बई और मद्रास दो स्थानों में होने लगा तो जल्दी-जल्दी लाहौर आने में कठिनाई उत्पन्न होने लगी। सन् १९४७ का आरम्भ था। शोभाराम लाहौर आया। उसने लाहौर आने में कठिनाई का वर्णन किया और साथ ही रामदेई के जीवन में ठीक दिशा आने के लक्षण वर्णन किये तो शान्तिदेवी ने बच्चों को लाहौर बोर्डिंग हाउस में भर्ती करा पति के साथ बम्बई चलकर रहने का आग्रह कर दिया। शोभाराम मान गया और बच्चों को बोर्डिंग हाउस में भर्ती कराने का यत्न होने लगा।

यह हो नहीं सका। लाहौर की राजनीतिक दशा बिगड़ती गई और बच्चों को छोड़कर जाया नहीं जा सका। शोभाराम जुलाई मास में सबको ले जाने के लिए स्वयं लाहौर आ पहुँचा। परन्तु उस समय तक मार-काट आरम्भ हो चुकी थी। रेल में यात्रा करनी, विशेष रूप में लाखों की सम्पत्ति साथ में लेकर कठिन थी। बैंक से सब रुपया और लॉकर से आभूषण-रत्नादिक निकाल लिये गए थे, परन्तु वे जा नहीं सके।

सबसे बड़ी कठिनाई मायाराम की थी। वह एक हिन्दू-संस्था का स्वयंसेवक था और उस संस्था के नेतागण यह समझते थे कि हिन्दुओं को बनने वाले पाकिस्तान में डटे रहना चाहिए। मायाराम ने अपने नेताओं के आदेशानुसार लाहौर छोड़ने से इनकार कर दिया। इस पर तो शान्ति उसको छोड़कर जाने के लिए तैयार नहीं हो सकी। विवश शोभाराम भी वहीं रह गया।

आखिर मायाराम लाहौर से जाने के लिए तैयार हुआ तो जाने की समस्या और भी विकट हो गयी थी। अगस्त मास आ गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई जहाज़ से दिल्ली और वहाँ से बम्बई जाने का प्रबन्ध हो गया। आठ अगस्त को जाना निश्चय हुआ, परन्तु चार अगस्त को ही उनकी कोठी पर मुसलमानों का आक्रमण हो गया। सब कुछ लुट गया।

शोभाराम और दाताराम कोठी से बाहर थे। मायाराम डी० ए० वी० कॉलेज में सेवा-कार्य कर रहा था। शान्ति और मल्लिका कोठी पर थीं। मल्लिका का अपहरण हो गया, शान्ति घायल हो पिछवाड़े की कोठी में भागकर जान बचा सकी। सब धन-सम्पदा लुट गयी और कोठी को आग लगा दी गयी।

जब शोभाराम दाताराम के साथ लौटा तो कोठी धू-धू कर जल रही थी। पुलिस जलती कोठी की रक्षा के लिए घेरा डाले खड़ी थी और शोभाराम को भी समीप फटकने नहीं दे रही थी।

पिछवाड़े की कोठी के रहने वाले मुसलमानों ने शोभाराम, मायाराम और घायल शान्ति को डी० ए० वी० कॉलेज कैम्प में पहुँचा दिया और आठ तारीख को पाँच के स्थान चार ही व्यक्ति हवाई जहाज में सवार हो दिल्ली एयरोड्रोम पर पहुँच सके। मल्लिका का पता नहीं चला।

चारों पहने वस्त्रों के अतिरिक्त जेब में पचास ही रुपये लिये हुए सफ़दरजंग एयरोड्रोम के बाहर खड़े विचार करने लगे कि किधर और कैसे जाएँ।

इस समय शान्ति ने एक सुझाव देते हुए कहा, "आपके बड़े भाई भवानीशंकर यहाँ रहते हैं। उनका पता लगाकर वहाँ चला जाय।"

शोभाराम वहाँ जाने में संकोच अनुभव करता था। पिछले सोलह वर्ष में वह उनसे मिला तक नहीं था। उसको भय लग रहा था कि कहीं उसका पिता उसको आश्रय देने से इनकार न कर दे। परन्तु बिना साधनों के दिल्ली आ जाने पर वह विवश-सा हो गया। एयरोड्रोम से वे सड़क के किनारे आ गए। महरौली की ओर से आने वाले एक ताँगे में बैठकर वे लोग केन्द्रीय सचिवालय जा पहुँचे। वहाँ पहुँच शोभाराम ने गृह-विभाग का पता लगाना चाहा। वह अभी सचिवालय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर ही खड़ा था कि एक युवक उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया। शोभाराम उसको पहचानने का यत्न करने लगा।

यह युवक गौरीशंकर था। उसने अपने चाचा को पहचान लिया था और उसकी स्मरण-शक्ति को जागृत करने के लिए उसने कहा, "आप चाचा शोभाराम नहीं हैं क्या ?"

"हाँ, और तुम गौरीशंकर हो ?"

"जी हाँ, कब आये हैं ?"

"बस, अभी एयरोड्रोम से चला आ रहा हूँ। तुम्हारे पिताजी को ढूंढ़ रहा था।"

"मेरे साथ आइये।"

"मेरे साथ तुम्हारी चाची और तुम्हारे दोनों भाई हैं। वे बाहर पेड़ के नीचे बैठे हैं।"

"और मल्लिका !"

"वह या तो लाहौर में मारी गयी है या उसका अपहरण हो गया है।"

गौरीशंकर एक क्षण तक खड़ा हो विचार करने लगा और फिर बोला, "तो पहले घर चलना चाहिए। पिताजी से बाद में मिल लीजियेगा।"

वह पुनः मोटर स्टैण्ड की ओर घूम गया और वहाँ खड़ी अपनी मोटर को निकाल उन लोगों के समीप ले आया। शान्ति को देख उसने कहा, "आओ चाची !"

शान्ति का दाहिना कन्धा गोली लगने के कारण ज़ख़्मी था और उसका हाथ पट्टी से गले में लटक रहा था। कन्धे पर पट्टी हो रही थी। इससे वह मायाराम का आश्रय ले मोटर में जा बैठी। उन लोगों के बैठ जाने पर गौरीशंकर उनको हैस्टिंग रोड पर स्थित अपने बंगले पर ले गया।

सरोजिनी घर पर नहीं थी। वह भी कार्यालय चली गई थी। उनका बच्चा रमण दाई के साथ था। चौकीदार ने बंगला खोला तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरीशंकर अपने चाचा के परिवार को भीतर ले गया। सबसे पहले उसने रसोइये को बुलाकर चाय बनाने और फिर खाना बनाने के लिए कहा। फिर उसने अपने कार्यालय को सूचना दे दी कि वह विलम्ब से आयेगा और डॉक्टर को फोन कर उसको चाची की मरहम-पट्टी के लिए बुला लिया।

इन सब कामों से निवृत्त हो उसने शोभाराम को बताया, "मैं अपने पिताजी से अलग रहता हूँ। वे आजकल हैवलॉक स्क्वेयर में हैं। दादी आजकल बीमार हैं। इस कारण मेरी सम्मति है कि आप रहिए तो यहीं, किन्तु उनसे मिल अवश्य आइये।"

"तुम आजकल किस पदवी पर हो ?"

"मैं केन्द्रीय सरकार के वाणिज्य मन्त्रालय में उप-सचिव के पद पर हूँ।"

"विवाह कर लिया है।"

"हाँ, वह भी नौकरी करती है। वह हमारे मन्त्री की स्टैनो है।"

"तब तो पाँचों घी में मालूम देती हैं।"

"सब आप लोगों का आशीर्वाद है।"

इस समय चाय आ गई। चाय पीते हुए शोभाराम ने बताया, "लाहौर में हमारा सब-कुछ स्वाहा हो गया। बलवाईयों ने मकान पर धावा बोल दिया। पहले तो मकान को लूटा और फिर आग लगा दी। मल्लिका को वे पकड़कर ले गये हैं। वे तो तुम्हारी चाची को भी पकड़-कर ले जाते किन्तु ये वहाँ से भाग निकलीं। किसी ने भागते हुए पीछे से गोली चला दी। भाग्य की बात कि गोली कन्धे पर लगी और ये बगल की कोठी में कूद गईं। मैं और दाताराम बाज़ार गये हुए थे। हम लौटे तो कोठी को आग लग चुकी थी। पड़ोसी मुसलमानों ने हमको बचाया और वहाँ से हम हवाई जहाज़ में यहाँ तक आ पाये हैं। हवाई जहाज़ का टिकट तो एक सप्ताह पहले ले लिया गया था।

"इस समय मेरे पास केवल अढ़तालीस रुपये हैं। बम्बई चला जाऊँ तो वहाँ शान्ति की बहन रामदेई है, वहाँ काम-धन्धा भी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपके जाने का प्रबन्ध हो जायेगा।"

डॉक्टर शान्ति की पट्टी कर गया और रसोइये को खाना खिलाने के लिए कहकर गौरीशंकर अपने कार्यालय चला गया।

सायंकाल गौरीशंकर और सरोजिनी एक साथ ही लौटे। सबसे सरोजिनी का परिचय कराया गया। और सायंकाल की चाय पीकर गौरीशंकर ने उनको अपने पिता का घर बताकर उन्हें अपनी मोटर में वहाँ भेज दिया। साथ ही उनको बताया, "मैं वहाँ नहीं जाता। वे मेरी पत्नी से रुष्ट हैं।"

"क्यों ?"

"यह महाराष्ट्रियन है और अब्राह्मण भी।"

"ओह, तो भैया और पिताजी वहीं-के-वहीं हैं, जहाँ आज से बीस वर्ष पूर्व थे।"

इस पर गौरीशंकर केवल मुस्करा दिया। उसने कुछ कहा नहीं।

: २ :

"तो तुम गौरीशंकर के यहाँ ठहरे हो ?" शोभाराम की माँ रुग्ण-शैया पर लेटी अपने पुत्र से पूछ रही थी।

"माँ, भैया को ढूँढ़ने सचिवालय गया था और वहाँ अचानक गौरी-शंकर मिल गया, वह अपनी कोठी में ले गया है।"

कर्मदेई शान्ति को अपने कमरे में ले गई और मल्लिका के अपहरण तथा उसके घायल हो वहाँ से निकलने का समाचार सुन स्तब्ध रह गई। भवानीशंकर ने माँ की सेवा-शुश्रूषा के लिए अवकाश लिया हुआ था, इस कारण वह घर पर ही था। दोनों पुत्र माँ की खाट के पास ही बैठे थे। जब शोभाराम अपनी कहानी और मल्लिका के अपहरण की बात बता रहा था, सुधा ने लम्बे-लम्बे साँस लेने आरम्भ कर दिये। उसकी इस अवस्था को सबसे पहले भवानीशंकर ने देखा और उसने डॉक्टर के बताये अनुसार उसको कोरामीन की गोलियाँ दीं।

भवानीशंकर का पिता दुनीचन्द भी वहीं पर बैठा था। कर्मदेई वहाँ आई तो शान्ति भी साथ ही आ गई। पाँच मिनट में ही सुधा ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राण त्याग दिए। वास्तव में सुधा की अवस्था सत्तर वर्ष की हो गयी थी। इस अवस्था तक वह कभी बीमार नहीं हुई थी। उसने सज्ञान होने के बाद जब गौरीशंकर के लड़के होने की कथा सुनी तो उसको पहला दिल का दौरा पड़ा था और उसको अब छः-सात मास हो चुके थे। तब से दिल की घुटन तो सदा रहने लगी थी और दौरे कई बार पड़ चुके थे। आज अपनी पोती के अपहरण की कहानी सुन तो उसको अन्तिम दौरा पड़ गया।

शोभाराम गौरीशंकर की सम्पन्नावस्था देख विचार करने लगा था कि वह उससे रुपये लेकर अगले ही दिन बम्बई चला जायेगा। परन्तु माँ के देहान्त के कारण उसको तेरह दिन तक वहाँ रुकना पड़ गया।

रामदेई को भी माँजी के देहान्त का समाचार भेज दिया गया। समाचार पाकर वह दिल्ली आ गई और अपनी पूर्ण सम्पत्ति के लाहौर में ही छूट जाने की सूचना पाकर, एक बार तो उसको भी मूर्च्छना आ गई।

यह ठीक था कि कलाकार के रूप में अब उसकी ख्याति हो गयी थी। उसकी अपनी भोजन-व्यवस्था और संयम का जीवन व्यतीत करने पर उसके स्वर और वाणी में मिठास पुनः आ गया था। इस पर भी वह देख रही थी कि यौवन समाप्त हो चुका है और ज़माना तीव्र गति से बदल रहा है। अनेकानेक नवीन कलाकार फ़िल्म-क्षेत्र में आ गए थे और अब काम वैसा नहीं रहा था, जैसाकि दस वर्ष पूर्व था। इस समय अपनी पूर्ण सम्पत्ति के लुट जाने के समाचार से उसको अपने पाँव-तले की ज़मीन धँसती-सी अनुभव होने लगी।

सुधा के देहान्त के साथ ही एक घटना और घटी। केन्द्रीय सचिवालय ने भवानीशंकर की सेवायें उसके रेल विभाग को वापस कर दीं। भवानीशंकर केन्द्रीय कार्यालय से भत्ता आदि मिलाकर पाँच सौ के लगभग ले रहा था। अब वह पुनः दो सौ रुपया मासिक का वेतनधारी बन गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी दादी के देहावहान के अवसर पर पत्नी के साथ गौरीशंकर भी आया था, किन्तु वह कोठी के भीतर नहीं गया। केवल बाहर से ही श्मशान-भूमि तक चला गया। और जब सब लोग चले गये तो वे भी बाहर से ही लौट गये। चौथे के दिन भी वह आया था और बाहर से ही लौट गया। उस दिन सरोजिनी नहीं आई। वह मन्त्री के साथ बम्बई गई हुई थी।

उस दिन शोभाराम ने भवानीशंकर से पूछा, "भैया! गौरीशंकर नाराज है क्या?"

"गौरीशंकर नहीं, उसके बाबा और उसकी माँ उससे नाराज़ हैं।"

"अब्राह्मण कन्या से विवाह करने के कारण?"

"नहीं, विवाह के बाद तो उसकी माँ का उसके घर आना-जाना रहा है परन्तु जब विवाह के सात महीने बाद ही उसकी पत्नी ने एक सुपुष्ट बच्चे को जन्म दिया और गौरीशंकर ने माँ के सम्मुख झूठ बोल दिया कि लड़का उसका ही है तो सबका दिल उचाट हो गया और हमारा उनसे सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। इससे वह बाबा के कोप से डरता हुआ भीतर नहीं आता।

"शोभाराम! उसके लड़के को तो तुमने देखा ही होगा। साथ ही गौरी का एक-सवा वर्ष में ही साधारण क्लर्क से डिप्टी-सेक्रेटरी बन जाना तथा इतने काल में लखपति बन जाने का रहस्य उसकी पत्नी का दुश्चरित्र होना ही हम समझते हैं। पिताजी तो उसका मुख भी देखना नहीं चाहते और उसकी माँ तो उसका मुख देखकर स्नान करने की आवश्यकता अनुभव करती है।"

रामदेई समीप बैठी यह कथा सुन रही थी। उसके माथे पर यह सुन पसीने की बूँदें चमकने लगी थीं। उसका हृदय भी भीतर-ही-भीतर बैठने लगा था।

अभी तक शोभाराम इत्यादि गौरीशंकर के बँगले में ही ठहरे हुए थे। तेरहवाँ होने के बाद वे बम्बई जाने की योजना बनाने लगे। जो कथा गौरीशंकर के विवाह और उसके पुत्र-जन्म की सुनकर आये थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे तो वे वहाँ से शीघ्र ही भागने की बात विचार करने लगे।

शोभाराम अपने पिता से बोला, "पिताजी! इस तेरहवें दिन के क्रिया-कर्म के बाद यहाँ से चले जाने के लिए सीट रिज़र्व करा चुके हैं।"

दुनीचन्द उनके जाने के विषय में पहले ही जानता था। इससे वह चुप रहा। अपने पिता को मौन देख शोभाराम फिर बोला, "हमारी इच्छा है कि अब आप हमारे साथ बम्बई चलें।"

"क्यों, किसलिए ?"

शोभाराम के मन में यह बात तो थी कि भैया की आय कम हो गई है, इस कारण उस पर जितना बोझ कम डाला जाय अच्छा है। परन्तु अपने मन की बात वह कह नहीं सका। उसने बात बनाकर कहा, "इतने समय तक आप बड़े भैया के साथ रहे हैं, अब हमारे साथ भी रहिये। हमें भी आपकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हो सके।"

"यह तो भगवान जाने कि इससे तुम्हारा सौभाग्य बढ़ेगा अथवा घटेगा परन्तु इतना मैं जानता हूँ कि वहाँ जाकर मैं सुखी अनुभव नहीं करूँगा।"

"आपको वहाँ किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा।"

"मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि भारी कष्ट होगा। तुम्हारी पाप की कमाई मैं हज़्म नहीं कर सकूँगा।"

शोभाराम तो यह सुन स्तब्ध रह गया। वह समझ रहा था कि उसका पिता अभी भी यही समझता है कि वह दाताराम की जुए की कमाई पर ही पल रहा है। इस कारण उसने पिता को पूर्ण स्थिति से अवगत कराने के लिए कह दिया, "पिताजी! आप समझ रहे हैं कि भैया के जुए की कमाई अभी भी चल रही है, किन्तु ऐसी बात नहीं है। उस कमाई का जो-कुछ बचा हुआ भी था तो वह लाहौर में लुट गया है। रहे-सहे को आग लग गई है। अब तो बम्बई में हमारे परिश्रम की कमाई ही है।"

"मैंने सुना है कि फ़िल्म कम्पनी में बहुत हेरा-फेरा हो रही है।"

"क्या सुना है आपने ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वहाँ कला का मूल्य नहीं दिया जाता। स्त्री कलाकारों का यौवन और सौन्दर्य बिकता है। बताओ क्या यह सब झूठ है?"

"पर पिताजी! मैं भी तो वहाँ हूँ। मैं तो स्त्री नहीं हूँ। मुझे एक सहस्र रुपया मासिक पारिश्रमिक मिल जाता है। आपको तो उसमें से ही मिलेगा।"

"परन्तु क्या यह सत्य नहीं कि तुम भी प्रत्यक्ष के अतिरिक्त चोरी-चोरी पारिश्रमिक लेते हो?"

"परन्तु पिताजी यह तो सब स्थानों पर प्रथा बन गई है। मैं नहीं माँगता, तब भी निर्माता देते हैं और इससे उनको लाभ ही होता है।"

"परन्तु क्या यह चोरी नहीं है?"

"एक विचार से तो है। इस प्रकार सरकार को दिये जाने वाले टैक्स में चोरी है। परन्तु इसके लिए सरकार ही स्वयं उत्तरदायी है। उसने टैक्स इतना अधिक लगा रखा है कि देने वाले देने में कठिनाई अनुभव करते हैं। इसके अतिरिक्त टैक्स का कानून ऐसा बना रखा है कि अफ़सरों को बहुत सीमा तक मनमानी करने के लिए सुविधा रहती है। साहूकार रुपया चोरी-चोरी उधार देते हैं, मालिक चोरी-चोरी वेतन देते हैं। हम लोग उस रुपये का व्यय भी चोरी-चोरी करते हैं और जब कभी उसको डाकू या चोर उठाने आते हैं तो हम थाने में रिपोर्ट भी नहीं लिखा सकते।"

दुनीचन्द हँस पड़ा। उसने कहा, "इसीलिए तो मुझको वहाँ ले जाकर वह धन मुझ पर व्यय करना चाहते हो। 'रुड़दे खरबूजे, पितरा निमित्त।' ऐसा मैं नहीं करने दूँगा। मुझे भी किसी को अपना हिसाब दिखाना होगा।"

"किसको दिखाना होगा?"

"परमात्मा को। तुम्हारे घर पर बैठकर खाये हुए अन्न का हिसाब किस प्रकार दूँगा। किसकी कमाई में से खाया है? तुमने चोरी की कमाई लिखी नहीं होगी। न तुमको देने वाले मालिक ने लिखी होगी। उसने जहाँ से और जिससे ली होगी, कहीं लिखी नहीं होगी। इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मैं भी हिसाब नहीं दे सकूँगा। मैं भवानीशंकर के घर पर ही ठीक हूँ। यह वेचारा अपने वेतन के अतिरिक्त कहीं से कुछ नहीं लेता। इससे परमात्मा के दरवार में मैं अपने खाने-पहनने का हिसाब तो दे ही सकूँगा।"

शोभाराम विचार करता था कि वह किस मुख से कहे कि उसकी कमाई में किसी प्रकार की हेरा-फेरी नहीं है।

दिल्ली से जाने की पहली रात गौरीशंकर से भी बात हुई। गौरीशंकर ने अपने पिता के पुनः रेलवे के कार्यालय में भेजे जाने का अर्थ बताते हुए कहा, "पिताजी को अब एकदम साढ़े-पाँच सौ से दो सौ रह जाने पर भारी कठिनाई होगी। इस कारण मैंने दादी के चौथे वाले दिन उनसे कहा था कि वे मेरे घर में आकर रहें, तो उनको कष्ट नहीं होगा। परन्तु पिताजी ने यह स्वीकार नहीं किया। मुझे कुछ यह भी पता चला है कि वे किसी से एक पैसा लेते-देते नहीं। इस कारण उनके पास समय-कुसमय के लिए कुछ जमा भी नहीं होगा।"

शोभाराम ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "गौरीशंकर! मुझे स्मरण है कि सोलह-सत्रह वर्ष पूर्व, जब मैं भैया दाताराम की कमाई का आश्रय लेकर अपना व्यवसाय चलाने लगा था, तो भैया और पिताजी ने मेरा और तुम्हारी चाची तथा बच्चों का बहिष्कार कर दिया था, तब भी भैया की अवस्था अच्छी नहीं थी। उनका कहना था कि दाताराम की कमाई जुए की है। वे उसका उपभोग नहीं करेंगे।

"कल पुनः तुम्हारे बाबा को मैंने बम्बई चलने के लिए कहा था। वे कहने लगे कि पहले तो जुए की ही आय थी, अब तो चोरी की भी है। इस आय पर निर्वाह का हिसाब वे परमात्मा को किस प्रकार दे सकेंगे?"

गौरीशंकर हँस पड़ा। उसके मुख से निकल गया, "जब कोई व्यक्ति स्वेच्छा से ही घुट-घुटकर मरना चाहे तो कोई दूसरा कर भी क्या सकता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात समाप्त हो गई। और शोभाराम अपने परिवार तथा रामदेई को लेकर बम्बई चला गया।

: ३ :

बम्बई में पहुँच, सब-कुछ लुट जाने पर शोक प्रकट करते हुए रामदेई शोभाराम को कह रही थी, "शोभा भैया ! तुमको लाहौर गए तो दो मास हो गये थे। इतने दिन तक वहाँ बैठे क्या करते रहे थे। यदि जाते ही आ जाते, तो मल्लिका के साथ हुई दुर्घटना भी न होती और अपनी सम्पत्ति भी बच जाती।"

"बात यह हुई कि पहले तो मायाराम आने के लिए तैयार नहीं हुआ। वह कहता रहा कि उसके तथा कांग्रेस के नेता कहते हैं कि हिन्दुओं को वहाँ डटकर बैठे रहना चाहिए और मुसलमानों का मुकाबला करना चाहिए। बाद में जब इसकी भी समझ में आ गया कि वहाँ रहने में कोई प्रयोजन नहीं है तो फिर बाहर आने के लिए मार्ग ही नहीं मिल रहा था। बहुत कठिनाई से आठ तारीख को हवाई जहाज़ में सीटें मिलीं, किन्तु मार-काट तो दूसरी अगस्त से ही आरम्भ हो गई थी। चार तारीख को मैं और दाताराम डी० ए० वी० कॉलेज जाने के लिए सवारी का प्रबन्ध करने के लिए गये थे। मेरा विचार था कि तीन दिन हम कैम्प में रहेंगे और चौथे दिन हवाई जहाज़ में बैठ दिल्ली पहुंच जायेंगे। परन्तु जब हम उस दिन सवारी का प्रबन्ध कर घर लौटे, तो देखा कि कोठी जल रही है। सब-कुछ जलकर स्वाहा हो चुका था। वहाँ पर कुछ लोग हमको परेशानी में खड़ा देख हमारी ओर लपके। मैंने स्थिति भाँपी और हम अपने पड़ोसी शम्सुद्दीन की कोठी में घुस गये। उसकी सहायता से हम डी० ए० वी० कॉलेज पहुंचे।"

"आपने और आपके लड़के ने सब गुड़ गोबर कर दिया है। धन गया, लड़की गयी, मान गया और फिर कोल्हू के बैल की भाँति उसी तरह पिसना होगा, जैसे पिछले सोलह वर्ष में पिसते रहे हैं।"

"पिताजी ने तो उस सब को जो हम अब तक करते रहे हैं, निन्दनीय माना है। मैंने उनको बम्बई आने के लिए कहा था। उन्होंने इनकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया।"

"हाँ, मैंने भी आपकी भाभी कर्मदेई से कहा कि वे अब रिटायर होकर यहाँ हमारे साथ चली आयें। उन्होंने भी यही कहा कि जो आपत्ति तुम्हारे भैया की बनाई हवेली में आने पर थी, वही अब बम्बई आने के लिए भी है। वे हमारी आय को हराम की आय समझती हैं।

"उनका कहना था कि जब कोई व्यक्ति कुछ कृत्रिम परिस्थितियों के कारण अपने परिश्रम से अधिक आय करने लगता है तो वह हराम की होती है। उन्होंने बहुत स्पष्ट रूप में समझाया था कि यन्त्रों के आविष्कार से एक स्थान पर गाया हुआ गाना पूर्ण देश में प्रसारित हो जाता है और उसका लाभ जनता को होने की अपेक्षा उस प्रसारण के उपक्रम में लगे व्यक्ति और फिर कलाकार समेट लेते हैं।

"यह तो इस प्रकार है कि जैसे आमों का मूल्य उत्पादन करने वाले माली को मिलने के स्थान उठाकर ग्राहक तक ले जाने वाला कुली ही ले जाये। ग्राहक को तो अत्यधिक मूल्य देना ही पड़ता है। कुछ उत्पादन-कर्ता को भी मिलता है, परन्तु मुख्य भाग तो वह कुली ले जाता है, जो उठाकर ग्राहक के घर पहुँचाने वाला है।"

इस पर शोभाराम कहने लगा, "मैं समझता हूँ कि इस लूट-खसूट के होने पर भी ग्राहक को तुम्हारे गाने बहुत सस्ते दाम पर मिल रहे हैं।"

"मैंने उनको ऐसा बताया था। परन्तु उन्होंने तो इस बात का सरल-सा उत्तर देते हुए कह दिया कि वे ऐसा नहीं समझतीं। उन्होंने बताया कि तब तो यह होता था कि कोई धनी-मानी किसी कलाकार का नृत्य-संगीत कराता था। कलाकार को वह पारिश्रमिक देता था और सुनने वाले तो बिना कुछ लिये-दिये सुन लेते थे। धनी-मानी कलाकार को देकर सुनने वालों से वसूल नहीं किया करता था।"

"वे बताने लगीं कि एक बार उनके गाँव में एक बड़े जमींदार ने अपने लड़के की शादी पर गौहर जान को बुलाया था। उसने एक दिन का पारिश्रमिक पाँच सौ रुपये लिया था। गाँव के सब लोग जिनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाच-गाने में रुचि थी, उस जमींदार के घर जाकर सुन आये। कोई फीस नहीं थी, कोई टिकट नहीं था। तीन दिन तक वह वहाँ रही। छः बार गाना-बजाना हुआ और गाँव के लोगों को बिना टिकट के गाना-बजाना सुनने को मिलता रहा।

"वे कहने लगीं—मैं समझती हूँ कि कलाकार को भी आजकल मिलने वाले पारिश्रमिक से अधिक मिला था और सुनने वालों को भी सस्ता सुनने को मिला था। उस ज़मींदार को अपने धन व्यय करने का सुनने तथा देखने के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला। आज यन्त्र बन जाने से यन्त्र लगाने वाले तो करोड़ों कमा लेते हैं और कलाकार तथा श्रोता-गण घाटे में रहते हैं।"

"मैं भी ऐसा ही अनुभव करता हूँ। यदि गौहर जान को एक दिन का पाँच सौ रुपया मिला था और तुमको आज एक दिन का तीन-चार सौ रुपया मिलता है तो तुमको बहुत कम मिलता है। तब जो-कुछ पाँच सौ से प्राप्त हो सकता था, आज दो सहस्र में भी प्राप्त नहीं हो सकता।"

"ऐसा तो सभी मशीनों और कारखाने वाले कर रहे हैं, इसका कोई उपाय भी तो नहीं है।"

"गौरीशंकर से मेरी बात हुई थी। उसने एक-दूसरे ढंग से इसकी विवेचना करते हुए बताया कि वस्तु का मूल्य उसकी माँग के आधार पर होता है। यदि आज की व्यवस्था में कुछ दोष है तो यह है कि समाज ने ग़लत बातों की माँग बना दी है। वह अपने सचिवालय की ही बात कर रहा था। उसका कहना था कि समाज ने ऐसी-ऐसी व्यर्थ वस्तुओं की माँग निर्माण कर दी हैं, जो जीवन-यापन के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखतीं। फिर समाज ने उनके निर्माण को माँग से कम रखा हुआ है। परिणाम यह हो रहा है कि उन वस्तुओं के निर्माता अतुल धन उपार्जन कर रहे हैं।

"उसने एक उदाहरण देते हुए बताया कि नेकटाई में चार-पाँच आने का कपड़ा लगता है और मशीन पर उसे पाँच मिनट में सिया जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है परन्तु इस व्यर्थ की वस्तु की माँग होने से इसका मूल्य तीन रुपये से दस-बीस रुपये तक हो रहा है।

"यह माँग व्यर्थ की है। अपने अंग्रेज़ मालिकों की नकल करने वालों ने स्वराज्य मिल जाने के बाद आज भी इसकी माँग बढ़ा रखी है।

"गौरीशंकर का कहना था कि यदि वास्तविक जीवनोपयोगी वस्तुओं तक ही माँग सीमित हो तो वस्तुओं के दाम कम हो जायेंगे। वस्तुओं के दाम कम होने से कम आय में निर्वाह हो सकेगा। परिणाम यह होगा कि कम आय पर भी सन्तोष हो सकेगा और बेईमानी तथा अनैतिक व्यवहार की आवश्यकता नहीं रहेगी।"

"तो वह स्वयं वैसा क्यों नहीं करता? मुझे सरोजिनी से ही पता चला है कि पिछले एक वर्ष में ही उनके 'लॉकर' में एक लाख रुपये से अधिक के आभूषण और रत्नादि एकत्रित हो गए हैं। वे क्या व्यर्थ की माँग वाली वस्तुओं को खरीदने से एकत्रित हुए हैं अथवा इन वस्तुओं की महँगाई के कारण हाथ तंग होने से एकत्रित हुए हैं।"

"वह कहता था कि व्यर्थ की वस्तुओं की माँग से वस्तुओं के बेचने वालों के पास धन एकत्रित होने से वे रिश्वत देते हैं और उस जैसे आदमी धनी हो रहे हैं।"

इस वार्त्तालाप का परिणाम यह हुआ कि शोभाराम और रामदेई में वह सामंजस्य नहीं रहा, जो इस लुट-पिट जाने से पहले था। शान्ति के बम्बई आ जाने से तो रामदेई और भी स्वतन्त्र और स्वच्छन्द व्यवहार रखने लगी थी।

: ४ :

सन् १९५१ आ गया। रामदेई का एक पूर्व-परिचित उमाशंकर नाम का व्यक्ति उसको ढूंढ़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा। उस समय रामदेई अपनी बहन के साथ बाज़ार गई हुई थी। उमाशंकर लखनऊ का रहने वाला था। उसने शोभाराम से पूछा, "कहाँ हैं आपकी बहन?"

"बताइये, क्या काम है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे पता चला है कि आजकल वे खाली हैं। इसलिए उनके लिए कार्य लेकर आया हूँ।"

"वे बाज़ार गई हैं। आप या तो उनकी प्रतीक्षा कर लीजिए अथवा कोई समय निश्चित कर कल भी आ सकते हैं।"

"मैं प्रतीक्षा करना उचित समझता हूँ।"

"तो बैठ जाइये।"

इस प्रकार उमाशंकर बैठ गया और शोभाराम अपने स्टडी-रूम में जाकर अभ्यास में लग गया। वह तानपूरे पर भैरवी का ख़याल गा रहा था। उमाशंकर अभी चाय ही पी रहा था कि मायाराम आ गया। किसी अपरचित व्यक्ति को वहाँ बैठा देख, प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा, तो उमाशंकर ने ही उलटे उससे प्रश्न करते हुए पूछा, "आप किससे मिलने के लिए आये हैं ? पण्डित शोभाराम तो घर पर ही हैं।"

मायाराम मुस्कराया और एक कुर्सी पर बैठते हुए बोला, "मैं तो शान्तिदेवी से मिलने आया हूँ। आप किनसे मिलने आये हैं ?"

"शान्तिदेवी कौन हैं ?"

"रामदेई की छोटी बहन।"

"कितनी आयु होगी उनकी ?"

मायाराम को कुछ शरारत सूझी और कहने लगा, "होगी कोई अठारह्-उन्नीस वर्ष की।"

"सत्य ? तब तो मेरा काम उनसे ही है।"

"क्या काम है आपका ?"

"मैं एक फिल्म कम्पनी के लिए एक्टर और एक्ट्रेसेज़ की खोज में हूँ।"

"तो मुझे भी एक्टर बना दीजिए। बताइये, मैं कोई अच्छी 'फिगर' हूँ या नहीं ?"

"आपका शान्तिदेवी से क्या सम्बन्ध है ?"

"मैं उनका परमप्रिय···हूँ।" वह कहने तो लगा था कि पुत्र हूँ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु उसको सूझा कि इस व्यक्ति को अभी बेवकूफ़ बनाया जाय। इससे वह कहता-कहता रुक गया।

उमाशंकर प्रसन्न हो बोला, "आपकी फिगर तो ठीक है, परन्तु यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपकी···शान्तिदेवी की फिगर कैसी है। नौकरी मिलेगी तो दोनों को, एक को अकेले नहीं।

"आज से दस वर्ष पूर्व रामदेई जब यहाँ आई थीं तो वे बिलकुल युवा थीं। इस कारण उनके आश्रय उनके भाई शोभाराम को भी काम मिल गया। शोभाराम ने अपनी बहन के उदार विचारों को कभी बुरा नहीं माना। अब एक-दो वर्ष से रामदेई अपने मन में बूढ़ी हो गई अनुभव करती हैं और वे कम्पनी वालों को वह कुछ नहीं दे सकतीं, जो वे दस वर्ष पूर्व निस्संकोच भाव में देने के लिए तैयार रहती थीं। परिणाम यह हुआ है कि अब कई मास से वे खाली हैं। साथ ही शोभारामजी की पूछ भी नहीं रही।"

"तो आपका मतलब यह है कि यदि शान्तिदेवी खूबसूरत हुई तो आप उसको नौकरी दिलवा देंगे और फिर उसकी बदौलत मुझको भी नौकरी मिल जायेगी ?"

"बिलकुल ठीक समझे हो बरखुरदार। और मैं···" इसके आगे वह कुछ कह नहीं सका। मायाराम ने एक घूँसा उसके मुख पर और इतनी ज़ोर से लगाया कि उमाशंकर चारों खाने चित्त हो गया और सहायता की पुकार करने लगा।

उसका चिल्लाना सुनकर शोभाराम तुरन्त बाहर आया तो मायाराम उस समय पाँव की ठोकर से उसकी मरम्मत कर रहा था।

शोभाराम ने उसको डाँटते हुए कहा, "माया ! क्या कर रहे हो ?"

"इसको दलाली की फ़ीस दे रहा हूँ। यह शान्तिदेवी की दलाली करने आया है।"

"छोड़ो इसको। क्यों अपने को हत्या का मुजरिम बना रहे हो ?"

शोभाराम ने उमाशंकर को उठाया। उसकी कनपटी सूज गई थी। साथ ही उसके दाँतों से रक्त भी प्रवाहित हो रहा था। शोभाराम ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे बाहर जाकर मुख धो आने के लिए कहा। जब वह बाहर चला गया तो उसने मायाराम से पूछा, "इसको किसलिए पीट रहे थे?"

"यह मूर्ख, मौसी और माताजी के विषय में गन्दी बातें कह रहा था। मुझे वह सहन नहीं हुआ। मैंने तो उसको एक ही चपत लगाई है। यदि आप न आते तो इसको मार-पीटकर, अचेतावस्था में, सड़क पर फेंक देता और फिर यह इस घर की ओर मुख भी नहीं करता।"

"अच्छा, आने दो।"

तब तक रामदेई और शान्ति बाज़ार से लौट आयीं। उमाशंकर को रूमाल से अपनी कनपटी सेंकते देख रामदेई विस्मय करने लगी। सामने कुर्सी पर बैठा मायाराम उमाशंकर को देखकर मुस्करा रहा था।

रामदेई ने उमाशंकर से पूछा, "चाचा! क्या हुआ है?"

"आपसे मिलने के लिए आया था और इस नौजवान ने मुझको चोर समझकर पीटना शुरू कर दिया।"

"क्या चोरी कर रहे थे, चाचा?"

"कुछ भी नहीं। यहाँ बैठा चाय पी रहा था। इस घर में आने वाली सुन्दर वस्तुओं को लालसा-भरी दृष्टि से देखने की इच्छा कर रहा था। यह युवक समझा कि मैं जेब में डालने की इच्छा कर रहा हूँ। बस, करने लगा मेरी मरम्मत।"

"अच्छा, चाय पी लो। इससे चित्त स्वस्थ हो जायेगा। फिर मैं आपसे बात करूँगी।"

"आओ शान्ति!"

शान्ति उसके साथ ही उस कमरे से चली गई।

शान्ति शब्द सुन उमाशंकर ने रामदेई के साथ आई, सामान से लदी एक प्रौढ़ा स्त्री को देखा, तो उसने मायाराम से पूछ लिया, "तो यह है तुम्हारी अठारह-उन्नीस वर्ष की शान्ति!"

मायाराम हँस पड़ा। उसने कह दिया, "मूर्खानन्द! वह मेरी माँ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्षमा करना भैया ! मैं समझा नहीं था।"

"समझने का मार्ग तो मैंने साफ़ कर दिया है। मैं समझता हूँ कि अब तुम्हारे ज्ञान-चक्षु खुल गए होंगे और तुम समझ गये होगे कि इस घर में अब तुमको नहीं आना चाहिए।"

उमाशंकर ने शोभाराम से पूछा, "पण्डितजी ! यह लड़का ठीक कहता है क्या ?"

"आप मुझसे तो मिलने के लिए आये नहीं, जिससे मिलने आये थे, उससे ही पूछ लो।"

"मैं आपके लिए भी काम का प्रस्ताव लेकर आया था ?"

"तुमने बताया तो था नहीं।"

"तो अब सुन लो। कला-केन्द्र बॉम्बे लिमिटेड की ओर से मैं आपको तथा राधाजी को उनके देवलोक नामक चित्र में काम दिलवाने के लिए आया था।"

"उमाशंकर ! मैंने तो अब फ़िल्म कम्पनियों के संगीत-निर्देशन का कार्य छोड़ दिया है। इस कारण मेरे लिए तो आपको यहाँ बैठने की आवश्यकता नहीं।"

"तो अब आप क्या करेंगे ?"

"कुछ नहीं।"

"बहुत पैदा कर लिया प्रतीत होता है।"

"हाँ, पेट भर गया है, अब और नहीं खाया जाता।"

"और राधादेवी ?"

"वे आ गई हैं, उनकी बात उनसे ही पूछ लो।"

रामदेई तब तक वहाँ आकर बैठ गई थी। उसने मायाराम से पूछा, "क्यों मायाराम ! तुमने चाचा को कोई वस्तु उठाते देखा था क्या ?"

मायाराम मुस्कराता हुआ चुप बैठा रहा। उमाशंकर कहने लगा, "कला-केन्द्र वालों का विज्ञापन तो आपने पढ़ा होगा ?"

"हाँ, पढ़ा है।"

"सेठजी ने मुझे आपके पास भेजा था। उन्होंने ट्रॉयल के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाया है ।"

"मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझती। मेरा मतलब है देवलोक पिक्चर में काम करने की । बताइये, अब क्या काम है आपका ?"

"तो कोई काम मिल गया है ?"

"कम्पनी वालों के रहस्य एक-दूसरे को बताने के नहीं होते ।"

"ओह ! तो कुछ और काम है ?"

रामदेई ने कोई उत्तर नहीं दिया । उमाशंकर पूछने लगा, "शान्ति-देवी भी गाने-बजाने का कार्य करती हैं क्या ?"

उमाशंकर इस समय चाय पी चुका था। इस कारण मायाराम ने कह दिया, "अब आप जा सकते हैं । आपके लिए यहाँ कोई काम नहीं है ।"

शोभाराम हँस पड़ा । उमाशंकर मायाराम की आँखों में फिर क्रोध के लक्षण देख रहा था । वह उठ खड़ा हुआ और बोला, "अच्छा, राधा-देवी ! हम फिर मिलेंगे ।"

इतना कह वह मकान से नीचे उतर गया ।

: ५ :

उमाशंकर के जाते ही मायाराम बोला, "मौसी ! यह क्या है ?"

रामदेई मुस्कराती हुई चुप रही । उसने घंटी बजायी और नौकर आया तो उसको उसने चाय लाने के लिए कह दिया ।

मायाराम को इस प्रकार उसका बात टालना पसन्द नहीं आया । परन्तु इस सबका रहस्य वह अपनी माँ से जानना चाहता था । वह अपने पिता से भी खुलकर बात करना नहीं सीखा था। शोभाराम से उसका सम्पर्क बहुत कम रहा था । घनिष्ठता तो थी नहीं ।

शोभाराम ने बात बदलकर मायाराम को कहा, "माया ! तुम कालेज में भर्ती हुए थे न ?"

"जी, परन्तु मुझे एक कार्य मिल गया है। वहाँ से मुझे खाने-पीने का अलाउन्स मिलता है ।"

"कितना मिलता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जितना बम्बई में चाहिये।"

"बम्बई में तो साठ-सत्तर रुपये वेतन पाने वाले चौकीदारों से लेकर करोड़पति तक रहते हैं। तुम्हारे कथन से तो कुछ भी पता नहीं चलता।"

"मुझे अभी एक सौ रुपया मासिक मिलता है। साथ ही सम्मिलित रसोई में खाना और वस्त्र मिल जाते हैं। माँ बता रही थी कि आप लोग बम्बई से जाने वाले हैं। उस अवस्था में मैं उनके होस्टल में रह भी सकूँगा।"

"परन्तु वह सार्वजनिक कार्य है क्या? तुम्हें वेतन कौन देता है और वह धन कहाँ से आता है?"

"पिताजी, आप समझ नहीं सकेंगे। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है। अभी तो निर्वाह के लिए ही मिलता है, परन्तु समय आयेगा कि मैं इस संस्था में नेता बनकर सेठ-साहूकारों को उनके कुकर्मों के लिए फाँसी दिला सकूँगा।"

शोभाराम मुख देखता रह गया। एक संगीतज्ञ और कलाकार इन बातों को समझने की न तो योग्यता रखता था, न ही अवकाश।

पिता को कुछ न समझते हुए मायाराम ने कह दिया, "मैं निर्धन मज़दूर को पैसे वालों के शोषण से बचाने के काम में लगा हूँ।"

"वह क्या होता है?"

"जब कोई धनी-मानी धन के बल पर निर्धनों को उनकी मज़दूरी का उचित प्रतिकार न दे तो हम इसको शोषण करना कहते हैं।"

शोभाराम को कुछ-कुछ समझ आने लगा। उसने कहा, "हाँ, ! यह तो हो ही रहा है, परन्तु इसमें कारण धनी-मानी लोग नहीं, अपितु निर्धनों का बिगड़ा स्वभाव है। उन लोगों ने अपनी आवश्यकताएँ ऐसी बना रखी हैं कि वे अपने को बेदाम पर ही बेचने को तैयार हो जाते हैं।

"देखो, मैं समझता हूँ। बम्बई में नव्वे प्रतिशत मज़दूर देहातों के रहने वाले हैं। देहातों में उनकी आय बहुत कम थी। वे यहाँ अधिक आय के लोभ में आये हैं और उस आय के लिए देहाती स्वास्थ्य-प्रद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन छोड़कर यहाँ के गन्दे कमरों में रहते हैं। परन्तु उस बढ़ी हुई आय को सिनेमा तथा अन्य दुर्व्यसनों में व्यय कर देते हैं। यदि नगर की आय से देहाती सरल और सादा जीवन रखें तो उनका बहुत-सा शोषण बच जाये।

"हमारी ही बात देख लो। तुम्हारी मौसी की आवाज़ कुछ मीठी है। उस पर गीत-रचना करने वाला ऐसे गीत लिखता है, जो सुनने वालों में अनावश्यक वासनामय उद्गार उत्पन्न करते हैं। परन्तु यह कुछ न हो सके, यदि मज़दूर लोग अपने गाढ़े पसीने की कमाई उन व्यर्थ की बातों पर व्यय न करें। तब फ़िल्म चले नहीं, तुम्हारी मौसी को छुट्टी मिल जाये। हम जो मज़दूरों के सहस्रों प्रतिमास लेकर व्यर्थ व्यय कर रहे हैं, न करें और सीधा हरिद्वार का टिकट ले लें।"

मायाराम इस युक्ति को उल्टी खोपड़ी की उपज ही समझता था। इस कारण हँसी में उड़ाने के लिए ठहाका मारकर हँस पड़ा।

शोभाराम लड़के के मनोभावों को न समझ अपने इस कथन का निष्कर्ष बताने लगा, "माँग पर ही शोषण होता है। गलत और व्यर्थ की वस्तुओं को भोग करने वाले ही धनी-मानियों से लुटते-पिटते हैं।"

"तो पिताजी! आप भी जनता को लूट रहा अनुभव करते हैं?"

"सब लूट रहे हैं। सब जो लूट सकते हैं, लूटने में कमी नहीं रखते। तुम भी तो यही कर रहे हो।"

"मैं? पिताजी! कैसे और किसको लूट रहा हूँ?"

"जिनसे वेतन पाते हो। उनको सादा जीवन चलाने की शिक्षा देने के स्थान, उनके जीवन में दूसरों के लिए विष भर रहे हो। जीवन का रहस्य है—भोग कम करो और दूसरों से लुटने से बच जाओ।"

"पिताजी, आप नहीं समझ सकते। आप कुछ अधिक पढ़े भी तो नहीं हैं।"

शोभाराम खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "यह तुम्हारा दोष नहीं बेटा! यह जमाने के वायुमंडल में दोष है। सब आयु में कम और अनुभवहीन अपने से बड़ों और अनुभव रखने वालों को मूर्ख ही समझते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं।"

अपने को अनुभवहीन समझ मायाराम को क्रोध चढ़ आया। वह उठा और जूता पहन बाहर निकल गया।

: ६ :

रामदेई और शान्ति पिता-पुत्र का वार्त्तालाप सुन रही थीं। वे मायाराम की समस्या को अपने-अपने ढंग पर विचार कर रही थीं।

शान्ति को बम्बई आये चार वर्ष हो चुके थे और जो कुछ उसने देखा था, उसको वह बम्बई के विषम जीवन की पराकाष्ठा समझती थी।

जब पिता-पुत्र में दिल खोलकर बात हो रही थी तब रामदेई और शान्ति उनकी बात सुनती हुई चाय पी रही थीं। जब मायाराम चला गया तो शान्ति ने बहन को कह दिया, "दीदी ! लड़का सज्ञान हो गया है और वह तुम्हारे और अपने पिता की कमाई का रहस्य समझने लग गया है। मैं समझती हूँ कि वह घर से भाग जायेगा।"

"वह तो निश्चय जानो चला गया है। यदि आज ही वह घर नहीं छोड़ गया तो एक दो-दिन में छोड़ जायेगा।"

"तो उससे तुम्हारी बातचीत हुई है ?"

"नहीं, पर मैं इसके दल के विषय में जानती हूँ। वास्तव में मनुष्य का मस्तिष्क आज अर्द्ध-विक्षिप्त हो गया है। सब अपने-अपने पागल-पन के पीछे भाग रहे हैं। मैं, तुम, भैया, शोभाराम और गौरीशंकर तथा उसके पिता और बाबा सब-के-सब। यह मायाराम भी यही कर रहा है।

"इस पागलों के संसार की धारा के साथ-साथ बहने में ही कल्याण प्रतीत होता है। मैं अब फिल्म-संगीत का काम करती हूँ। यह काम एक सही दिमाग़ का है अथवा पागल दिमाग़ का, उस विचारधारा से ही विचार किया जाना चाहिये जो आज जगत् में बह रही है।

"मैं तो बम्बई छोड़कर जा नहीं सकती और इस जीवन के लिए मैं भी त्याग कर रही हूँ। वह करना ही होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह चर्चा कि शोभाराम इत्यादि बम्बई छोड़, किसी पहाड़ी स्थान पर चलकर जीवन व्यतीत करें, रामदेई के साथ चल चुकी थी। आज उमाशंकर के मायाराम से झगड़े ने पुनः चर्चा को सजीव कर दिया।

रामदेई ने जब कहा कि वह बम्बई छोड़कर नहीं जा सकती और वह संसार की बदलती धारा में ही बहेगी तो शोभाराम ने कह दिया, "ठीक है, मेरी धारा तो अब बम्बई से हरिद्वार की ओर बह रही है और मैं उसमें बहने में ही कल्याण मानता हूँ। बताओ शान्ति! तुम किस धारा में बहना चाहती हो?"

"मैं तो आपके साथ ही रहूँगी। प्रश्न तो मायाराम और दाताराम का है।"

"मायाराम अपना निर्णय बता गया है। दाताराम तुम्हारे साथ जायेगा।"

रामदेई ने कह दिया, "मायाराम मेरे साथ रह सकता है।"

"परन्तु वह तो तुम्हारे जीवन को पसन्द करता प्रतीत नहीं होता?"

"करने लगेगा। हम दोनों के जीवन का आधार एक ही है।"

"क्या जीवन-आधार है, दीदी?" शान्ति ने कुपित होकर पूछ लिया। वह अपने पुत्र को लाहौर में सेवा-कार्य करता देख, बहुत शुद्ध पवित्र विचार का लड़का समझती थी।

इस पर रामदेई ने बता दिया, "वह तुमने सुन ली है। जीवन अर्थात् खाना-पीना, वस्त्र, भूषण और मनोरंजन, ये जीवन की मुख्य समस्याएँ हैं और ये जिस किसी प्रकार भी हों, प्राप्त होनी चाहिए।

"शान्ति! तुम नहीं जानतीं। पर मैं जानती हूँ कि कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्य सहायक धनी परिवारों के युवक ही हैं। हमारे सेठ मक्खनलाल का लड़का भी कम्युनिस्ट है और वास्तव में उसने ही मायाराम को इस ओर खींचा है। दोनों की जीवन-मीमांसा एक है।

"मक्खनलाल का लड़का चिरंजीलाल कह रहा था कि पूँजीवाद हो चाहे समाजवाद, कम्युनिज्म हो चाहे प्रजातन्त्रवाद, नेता तो सदा भाग्यशाली व्यक्ति ही बनेंगे और भाग्यहीन दासता का जीवन व्यतीत करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए भाग्यशालियों को चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।"

शोभाराम मुख देखता रह गया। वह समझ गया कि उसकी जीवन में रामदेई से साझेदारी भूल थी। इस भूल में वह अपने माता-पिता की सेवा का पुण्य-लाभ नहीं कर सका। संगीत-विद्या का पुण्य, भगवत-भजन भी वह प्राप्त नहीं कर सका। वह अपना न तो यह लोक और न ही परलोक सुधार सका। इस लोक में वह बहन रामदेई के सौन्दर्य की बिक्री में से कमीशन खाने वाला विख्यात हो रहा था और परलोक…। उसको स्मरण कर वह काँप उठता था। उसके लिए तो उसने एक पाई भी संचित नहीं की थी।

: ७ :

धन सब शोभाराम के संरक्षण में रहता था। बैंक में खाता उसके नाम था और लॉकर तथा घर की तिजोरी की चाबी भी उसके पास ही रहती थी। इस कारण जब वह अपनी पत्नी शान्ति और छोटे पुत्र दाताराम, जो अब सत्रह वर्ष की आयु का था और मैट्रिक पास कर संगीत सीख रहा था, जाने के लिए तैयार हो गया, तो उसने रामदेई को बुलाकर कहा, "बहन! मैं कल यहाँ से जा रहा हूँ। इस कारण मैं चाहता हूँ कि तुम बैंक में अपना हिसाब खोल लो और सब रुपया उसमें जमा करा लो। शेष जो कुछ नकद है। वह यह रखा है, इसे ले लो।"

"कितना है सब?"

"इस समय दोनों मिलाकर चार लाख दस हजार पाँच सौ पच्चीस रुपये हैं।"

रामदेई गम्भीर विचार में पड़ गई। मायाराम, शान्ति तथा दाताराम भी सामने बैठे सुन रहे थे। रामदेई ने पूछ लिया, "आप अपने साथ कितना ले जा रहे हैं?"

"इतने दिन तक जो निर्वाह चलाया है वह तो वापस किया नहीं जा सकता। हाँ, नकद सब-कुछ दिये जा रहा हूँ।

"भैया भवानीशंकर से दो सौ रुपया मँगाया है। और बस वही जेब में है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और जा कहाँ रहे हैं ?"

"यहाँ से दिल्ली। कुछ वर्ष दिल्ली में रहूँगा। वहाँ कुछ सामर्थ्य उत्पन्न करूँगा और दाताराम को संगीत में प्रवीण कर हरिद्वार चला जाऊँगा, मेरा अनुमान है कि पाँच वर्ष में दाताराम अपने पाँवों पर खड़ा हो जायेगा।"

"कौन-सी गाड़ी से सीट बुक की है ?"

"बुक नहीं की। मैं बॉम्बे सैंट्रल से जनता में जा रहा हूँ।"

"थर्ड क्लास में ?"

"हाँ, केवल भवानीशंकर वाला दो सौ रुपया ही तो है और चार प्राणी जाने वाले हैं। थर्ड क्लास से अधिक का तो अब सामर्थ्य ही नहीं।"

"मैं समझती हूँ कि इस सबमें से आप आधा तो ले ही जा सकते हैं।"

"नहीं बहन ! अब ऐसा नहीं चलेगा। तुम्हारी कमाई बहुत खा चुका हूँ, अब और अधिक नहीं लूँगा।"

रामदेई ने कहा, "मैं आपको कई दिन से तैयारी करते देख रही थी, परन्तु यह नहीं समझती थी कि आप लड़कर जायेंगे।"

"मैं लड़ा नहीं हूँ। हाँ, पहले एक प्रबल धारा के साथ मेरी क्षीण धारा बह रही थी। पहले के वेग में दूसरी भी बहती जाती थी। अब दोनों के मार्ग भिन्न-भिन्न हो गये हैं। बस, और कुछ नहीं। किसी प्रकार का द्वेष, सन्ताप और असन्तोष नहीं है।"

"पर पिताजी ! आपके साथ चौथा कौन जा रहा है ?"

"मैं, शान्ति, तुम और दाताराम।"

"मैं तो नहीं जा रहा।"

"तो तीन ही जायेंगे।"

"माँ !" मायाराम ने कह दिया, "पिताजी की प्रवृत्ति सदा विलक्षण रही है। इनके साथ आपको कष्ट होगा। आप यहाँ रहिये। मुझे विश्वास है कि पिताजी जैसे लाहौर में आकर मिल जाया करते थे, अब भी मिल जाया करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं मायाराम ! ये मेरे कहने से ही जा रहे हैं। मैं भी जाने को ही ठीक समझती हूँ।"

"और दाताराम ! तुम किसलिए जा रहे हो ?"

"मैं संगीत सीख रहा हूँ। इस समय मेरे सामने कोई लक्ष्य नहीं है।"

"वह तो दिल्ली की अपेक्षा यहाँ अधिक सुगमता से सीखा जा सकेगा।"

"हाँ भैया ! संगीत तो सुगमता से सीखा ही जा सकता है और उसका तो यहाँ, विशेष रूप में फ़िल्म-संसार में प्रचार है।"

"तो तुम आ···आ···सीखने के लिए जा रहे हो ?"

"हाँ।"

"अच्छी बात है। जब इससे मन ऊब जाय तो यहाँ चले आना।"

"ओह ! मायाराम, तुम तो अभी से ऐसा कह रहे हो मानो घर के स्वामी तुम ही हो गये हो ?"

"पिताजी ! आपका उत्तराधिकारी ही बन रहा हूँ। मौसी उसके घर का प्रबन्ध करने के लिए कह रही है।"

शोभाराम हँस पड़ा। परन्तु उसने अपने हँसने का कारण नहीं बताया। उसे हँसते देख, रामदेई और मायाराम भी हँस पड़े।

शोभाराम दिल्ली पहुँचा तो भवानीशंकर जो अब नौकरी से रिटायर हो गया था, उसको लिवाने के लिए स्टेशन पर आया था।

भवानीशंकर ने अपनी ग्रेचुइटी से करौलबाग में एक मकान बनवा लिया था। मकान उसको अपने लाहौर वाले मकान के एवज़ में मिला था। उस पर दस हज़ार रुपया व्यय कर उसका नवीनीकरण कर लिया था। अब उस मकान के दो फ्लैट का तीन सौ रुपया भाड़ा आता था। एक फ्लैट जो सबसे ऊपर की मंज़िल पर था, वह उसने अपने लिए रखा हुआ था।

इसी मकान में ले जाते हुए भवानीशंकर ने बताया, "पिताजी अब बयासी वर्ष के हैं और वे घर से बहुत कम बाहर निकलते हैं। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R089.9143 GUR-P
आगत संख्या 167936

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण वे तुम लोगों को लिवाने नहीं आ सके। वे कहते थे कि उनकी इच्छा तो बहुत थी तुम जैसे त्यागी का स्वागत करने के लिए स्वयं आते, परन्तु शरीर जवाब देता जाता है।"

"गौरीशंकर क्या करता है ?"

"उसकी पत्नी तीन सन्तान छोड़कर भाग गई है। उसकी प्रत्यक्ष में तो इटालियन एम्बेसी में नौकरी लग गई है। वास्तव में उसका गौरीशंकर से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रहा। सबसे छोटे बच्चे की आयु तो ढाई वर्ष की होगी। वह उनके साथ कोठी में रहता है और सन्तोष-असन्तोष, आनन्द और विषाद में भेदभाव न करता हुआ जीवन व्यतीत कर रहा है। एक दिन मिला था, मैंने उससे कहा था कि वह सब-कुछ छोड़कर कोई ईमानदार और भलमनसाहत का कार्य कर ले, तो वह कहने लगा कि निर्वाह कैसे होगा। मैंने कहा था कि मुख में लगाम लगा दो और अपना परलोक सुधारने का यत्न करो। वह मुझसे बहस करने लगा।

"वैसे वह अभी भी पिताजी और अपनी माता के सामने आने में संकोच करता है। हम कभी-कभी उसकी कोठी में जा उससे मिल आते हैं। उसकी माँ को उसके तीनों बच्चे अपने पोते-पोती नहीं दिखाई देते।"

□□□

167936
081
167936
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

(1894 & 1989)

शिक्षा : एम. एस–सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।
विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

08
G
1

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 110 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar